निशि हुई विगत.....

नीराजन

सत्र : २००८ - २००९

(श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल कानपुर द्वारा संचालित)

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

नवाबगंज, कानपुर - २०८००२

वीणापाणि

हर लो सब अज्ञान हमारा
ज्ञान-गंग की अविरल धारा
असत् मार्ग से हमें बचा लो
भाव-भरे कुछ छन्द रचा लो।

नीराजन

पं0 दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

वार्षिक पत्रिका : 2008–2009

संरक्षक

श्री वीरेन्द्रजीत सिंह

सचिव

प्रबन्ध समिति : पं0 दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

दुर्गेश वाजपेयी

मुख्य सम्पादक

रेखा निगम

सम्पादक (अंग्रेजी प्रखण्ड)

संकल्प

पं0 दीनदयाल उपाध्याय जिस कार्य के लिये जन्मे, जिये और जूझे, इसी के लिए हौतात्म्य स्वीकार कर उन्होंने अपना जीवन–व्रत पूर्ण कर लिया। पण्डित जी को सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम उनके रक्त की एक–एक बूँद को अपने माथे का चन्दन बनाकर ध्येय पथ पर अग्रसर हों। उनकी चिता से निकली एक–एक चिनगारी को हृदय में धारण कर परिश्रम की पराकाष्ठा और प्रयत्नों की परिसीमा करें। इस दधीचि की अस्थियों का वज्र बनाकर आधुनिक वृत्तासुरों पर टूट पड़ें और पवित्र भूमि को निष्कंटक बनाएँ।

– श्री अटल बिहारी वाजपेयी

अनुक्रमणिका

क्र0	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं0
१.	अपनी बात	दुर्गेश वाजपेयी	७
२.	विद्यालय आख्या	श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी (प्रधानाचार्य)	९
३.	आतंकवाद एवं राजनेता	शुभम गुप्त	१६
४.	निराला जी की निराली संवेदनशीलता	निलय सिंह	१७
५.	संस्कृति के सम्बन्ध में पं. दीनदयाल जी के विचार	जीवेश राय	१८
६.	धर्म और रिलीजन	दशम 'ख'	२०
७.	हीरों से हुई थी "जीवन" की शुरूआत	दीपक सचान	२३
८.	राष्ट्र एवं राज्य	अभिषेक शुक्ल	२४
९.	आजादी के दीवाने	दुर्गेश वाजपेयी	२७
१०.	'राष्ट्र और राज्य'	विवेक शर्मा	२९
११.	अंतरिक्ष की सैर	दीपक सचान	३२
१२.	प्रदूषण	अभिषेक शुक्ल	३३
१३.	गीत अमन के गाएँ	शूरवीर सिंह	३३
१४.	संतोष	हर्षित शुक्ल	३४
१५.	बाल कविता	अनुज शुक्ल	३४
१६.	वीर सपूत "गाँधी जी"	पार्थेश्वर त्रिपाठी	३५
१७.	माँ और शिक्षक	प्रकाश कुमार	३५
१८.	बड़े आदमी की माँ	शशांक शुक्ल	३५
१९.	जागो जीवन के प्रभात	सचिन अग्निहोत्री	३६
२०.	मेघ	सचिन अग्निहोत्री	३६
२१.	महाद्वीपों की सबसे ऊँची चोटियाँ	अजीत विक्रम	३६
२२.	माँ	हर्षित शुक्ल	३६
२३.	मानो या न मानो, सच है	स्वतन्त्र कुमार पाण्डेय	३७
२४.	शब्द वापस नहीं आ सकते	नवीन प्रताप सिंह	३८
२५.	शहीदों की याद	पंकज वर्मा	३९
२६.	गरीबी	नवीन प्रताप सिंह	३९
२७.	राहें नहीं थकती	शशांक शुक्ल	४०
२८.	जंगली भैंसा	रवि प्रकाश पाण्डेय	४०
२९.	रोचक तथ्य	ज्ञानेन्द्र अवस्थी	४१
३०.	अद्भुत पेड़-पौधे	अभिषेक शुक्ल	४१
३१.	शारदा - वन्दना	शूरवीर सिंह	४२
३२.	आतंकवाद	मोहित मिश्र	४२
३३.	पंचतंत्र का रहस्य	श्रेयांश तिवारी	४३
३४.	कैसे अजूबे ये वृक्ष	गोविन्द कुमार सिंह	४३
३५.	धन की सीमा	गौरव शुक्ला	४४
३६.	बाल - कविता	अनुज शुक्ल	४४
३७.	लाचारी	मु० अफजल अहमद	४४
३८.	मत पढ़ो	गौरव शुक्ल	४४
३९.	पर्यावरण प्रदूषण, माँ	दुर्गेश पाल	४५
४०.	कहाँ आ गये हम, रोचक जानकारियाँ	शान्तनु राज	४५
४१.	मेरा विद्यालय	अनुज शुक्ला	४७
४२.	बूझो तो जानें	शुभम वर्मा	४७

४३.	हँसगुल्ले	आदित्य विक्रम	४८
४४.	मनोविनोद	नवीन प्रताप सिंह	४९
४५.	थोड़ा सा हँस लो	शुभम वर्मा	४९
४६.	जरा हँस लो	ज्ञानेन्द्र अवस्थी	५०
४७.	हँसने की बात	मोहित यादव	५१
४८.	देखो हँस न देना	निलय सिंह	५२
४९.	कुछ रोचक तथ्य	अंचल गुप्त	५३
५०.	क्रिकेट जगत	ओम जी द्विवेदी	५३
५१.	चर्चित पुस्तकें एवं लेखक		५४
५२.	महत्वपूर्ण औषधियाँ		५४
५३.	तारा	निमिष श्रीवास्तव	५५
५४.	ऐसी गरमी आयी	प्रखर अग्निहोत्री	५५
५५.	कोहरा	शूरवीर सिंह	५५
५६.	दहेज माँगने का फल	दिव्यांशु तिवारी	५६
५७.	ताडंव '२००८'	प्रखर अग्निहोत्री	५६
५८.	सबसे बड़ी सेवा	अरुण पाल	५६
५९.	तीन बातें	शुभम वर्मा	५७
६०.	एक फूल की जबानी	प्रशान्त मिश्र	५७
६१.	कुछ प्रमुख युद्ध व उनकी तिथियाँ	अभिषेक सिंह	५८
६२.	अठारह पुराण व श्लोकों की संख्या	विनायक त्रिपाठी	५८
६३.	यह भी जानिए	तन्मय द्विवेदी	५९
६४.	क्या होगा देश का भविष्य	मु० अफजाल अहमद	६०
६५.	कुछ अनमोल बातें	शुभम वर्मा	६०
६६.	कुछ प्रेरक संस्मरण तथा कथाएँ	अनुराग त्रिपाठी	६१
६७.	हमारा देश	अमन गुप्ता	६३
६८.	आधुनिक परिभाषाएँ	उत्कर्ष त्रिपाठी	६३
६९.	बाहर भी ज्ञान है	प्रफुल्लित त्रिपाठी	६४
७०.	कश्मीर न देंगे, हाइड्रोजन की आत्मकथा	अखिल गंगवार	६५
	आतंकवाद और भारत		६६
७१.	लक्ष्य	अभिषेक सिंह चौहान	६७
७२.	क्या आप जानते हैं	प्राञ्जल मिश्र	६८
७३.	वार्षिकोत्सवः एक रिपोर्ताज		६९
७४.	वहाँ कोई हल्का या भारी नहीं है	श्री सुभाष चन्द्र शर्मा	७३
७५.	कन्या की करूण पुकार.....	आशीष द्विवेदी	७४
७४.	बसन्त की प्रतीक्षा	दिव्यांशु तिवारी	७५
७५.	पिता	अभिषेक द्विवेदी	७५
७६.	नेता	निहाल दीक्षित	७५
७७.	महान व्यक्तित्व ओबामा	सुप्रिय मणि शुक्ल	७६
७८.	समुद्री तूफानों का नामकरण करने की प्रणाली	आदित्य विक्रम सिंह चौहान	७७
७९.	गुरु नानक जी		७८
८०.	विद्यालय	शुभम द्विवेदी	७९
८१.	विनोद	अनुज शुक्ल	७९
८२.	आखिरी उड़ान	शशांक शुक्ल	८०
८३.	मौन से शक्ति संचय	अभिषेक द्विवेदी	८२
८४.	मनुष्य जीवन से श्रेष्ठ कुछ नहीं	अभिषेक द्विवेदी	८२
८५.	स्मृति शेष - विष्णु प्रभाकर	पंकज बिष्ट	८३

English Section

1.	Editorial	Mrs. Rekha Nigam	1
2.	Discipline - Need of the Hour	Mrs. Archana Tiwary	3
3.	Moments Gone Cherished Forever		4
4.	A Sweet Dream	Shubham Gupta.	5
5.	The Grasshopper and The Ant		6
6.	Think Before You Act	Hitesh Jha	7
7.	Knowledge is Power		8
8.	Our Duty Towards Bharat Mata	Alok Kumar Kushwaha	9
9.	Mamallapuram : Shore Antiquities	Abhay Singh	11
10.	The Ultimate : OSCAR		12
11.	Amazing Facts	Shashank Kumar	14
12.	Thanks Ma !	Abhay Dwivedi	15
13.	Impact of Western culture on Indian Youth	Alok Kumar Kushwaha	16
14.	Isn't it Amazing	Aditya Pratap	17
15.	Memories- Science conclave - 2008		18
16.	Sachin Tendulkar - Inspirational Icon	Aditya Pratap	21
17.	Jokes		22
18.	Six Hours At School	Piyush Gupta	23
19.	If you want to be great, Daughter	Adarsh Tripathi	24
20.	Place of Woman	Adarsh Tripathi	25
	Moral Education Based on 'Yoga'		
21.	Caprules of wisdom	Adarsh Tripathi	26
22.	Games & Sports	Hitesh C. Jha	27
23.	Message for Youth	Chandra Mauli Awasthi	28
24.	Fact to Remember - (Chemistry)	Shubham Gupta	29
25.	Kanpur: A Journey From Manchestar To Dying City	Pranav Tripathi	30
26.	Examination, Success	Arjun Singh	31
27.	Mr. M.P's Interview	Shashank Shukla	32
28.	Motivations	Anuj Shukla	32
29.	Mother	Shashank Shukla	33

30.	Exam	Shashank Shukla	33
31.	An Awakening Call	Shoor Veer Singh	34
32.	Conscience	Amar Deep Mishra	35
33.	Time is Great	Surya Pratap Singh Chandel	36
34.	STOP being Indifferent and START being Proactive	Chandrashekhar Jha	37
35.	Scientific : Satellites	Vivek Sharma	39
36.	Galaxies	Vivek Sharma	40
37.	The Big-Bang Theory	Vivek Sharma	41
38.	Atom - Bombs	Vivek Sharma	42
39.	Echoing Reminiscence	Ranvijay	43
40.	Plant Power	Aditya Pratap	44
41.	Splendid Science	Aditya Pratap	44
42.	Parents : God's Most wonderful Gift	Durgesh Pal	45
43.	आचार्य परिवार		46

अपनी बात

इमारत के शिखर की तरफ ही लोग देखा करते हैं; उसकी चमक–दमक पर मुग्ध रहते हैं; परन्तु नींव की ईंट की तरफ लोग ध्यान नहीं देते हैं। इमारत की मजबूती तो उसकी नींव की ईंट पर ही निर्भर होती है। वह नींव की ईंट जो प्रदर्शन और दिखावा नहीं करती, जो प्रचार से दूर खुद को जमीन की गहराइयों में छिपा लेती है। वह ईंट जो शिखर पर जाने के लिये कभी खुशामद नहीं करती, वस्तुतः प्रणम्य है।

ये काम करने वाले लोग, ये ईमानदार, खुद्दार और मेहनतकश लोग ही देश और समाज की रीढ़ हैं; यही नींव की ईंट हैं। ये जो किसान, मजदूर मोची, मेहतर आदि हैं, इन की कर्मशीलता और आत्मनिष्ठा हम–लोगों से कहीं अधिक है। ये लोग चिरकाल से चुपचाप काम करते जा रहे हैं, देश का धन–धान्य उत्पन्न कर रहे हैं; परन्तु अपने मुँह से शिकायत नहीं करते। माना कि उन्होंने हमारी आपकी तरह पुस्तकें नहीं पढ़ी हैं, आपकी तरह अच्छे वस्त्र पहनकर सभ्य बनना उन्होंने नहीं सीखा है; लेकिन इससे क्या होता है? वास्तव में ये लोग ही राष्ट्र की आधार शिला हैं। यदि ये निम्न श्रेणी के लोग अपना काम करना बन्द कर दें, तो हमको–आपको अन्न–वस्त्र मिलना कठिन हो जाए। श्रमिकों के काम बन्द करने पर आपको अन्न–वस्त्र नहीं मिल सकता। इन्हें हेय न समझो, अभिमान न करो।

इन लोगों ने हजारों वर्षों तक नीरव अत्याचार सहन किये हैं,– उससे पायी है अगाध सहिष्णुता। सनातन दुःख उठाया है जिससे पायी है अटल जीवनीशक्ति। ये लोग मुट्ठी भर सत्तू खाकर दुनिया उलट सकते हैं। इन्हें आधी रोटी मिली तो इतना तेज होगा कि तीनों लोकों में न समायेगा। ये रक्तबीज के प्राणों से युक्त हैं और पाया है सदाचार–बल, जो इन्द्रलोक में नहीं है। इतनी शांति, इतना प्यार, बेजबान रहकर दिनरात खटना और काम के वक्त सिंह का सा विक्रम ।

स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है – " बड़ा काम आने पर बहुतेरे वीर हो जाते हैं; दस हजार आदमियों की वाहवाही के सामने कापुरूष भी सहज ही प्राण दे देता है; घोर स्वार्थी भी निष्काम हो जाता है, परन्तु अत्यन्त छोटे से कर्म में भी अज्ञात भाव से जो वैसी ही निःस्वार्थता कर्तव्यपरायणता दिखाते हैं, वे ही धन्य हैं – वे तुम लोग हो– भारत के हमेशा के पैरों तले कुचले हुए श्रमजीवियों तुम लोगों को मैं प्रणाम करता हूँ।"

मैं समझता हूँ कि हमारा सबसे बड़ा राष्ट्रीय पाप जनसमुदाय की उपेक्षा है, और वह भी हमारे पतन का एक कारण है। आप अपने देश के उन लोगों की तरफ एक बार देखिये जिनके अधिकार छीन लिये गये हैं जो पिछड़े और विपन्न हैं, उनके चेहरे पर मलिनता है, कलेजे में न साहस, न उल्लास, पेट

बड़ा, हाथ–पैरों में शक्ति नहीं; डरपोक और कायर। यथार्थ राष्ट्र जो झोपड़ियों में निवास करता है, अपना व्यक्तित्व खो चुका है। इस भारतभूमि में जनसमुदाय को लम्बे अर्से से आत्म–स्वत्व–बुद्धि को उद्दीप्त करने का मौका नहीं दिया गया। हिन्दू, मुसलमान या ईसाइयों के पैरों तले रौंदे हुए ये लोग यह समझ बैठे हैं कि जिस किसी के पास धन हो, वे उसी के पैरों तले कुचले जाने के लिये ही पैदा हुए हैं।

वे लोग जो किसान हैं, जो कोरी जुलाहे और भारत के नगण्य मनुष्य हैं, विजाति–विजित, स्वजाति निंदित जो छोटी–छोटी जातियाँ हैं, वही लगातार चुपचाप काम करती जा रही हैं, अपने परिश्रम का कुछ भी नहीं पा रही हैं।

आइये हम जन समुदाय की तरफ ध्यान दें; हम अपने जीवन में न्याय का बर्ताव करें। सफलता पाने के लिये कोई शॉर्टकट अख्तियार न करें, और अपने अन्तर्यामी को जागृत करें।

– दुर्गेश वाजपेयी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

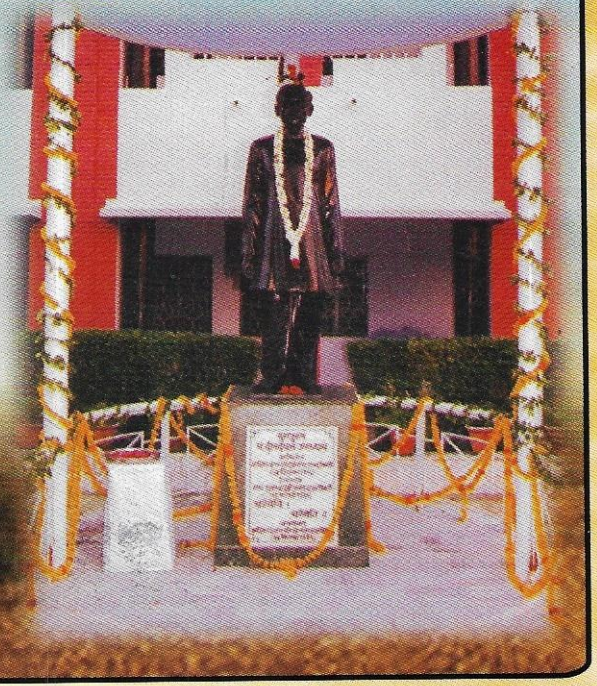

कर्ममय जीवन सदा उपकार
की वाणी रहा था

स्मृतिशेष बैरिस्टर साहब

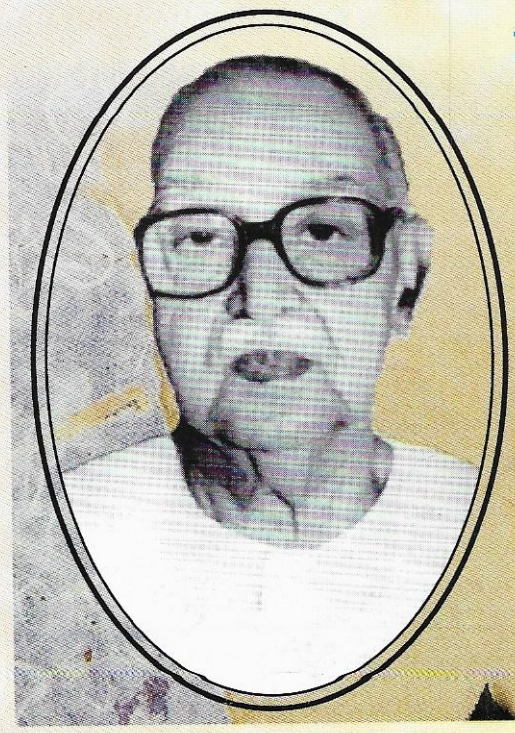

धर्मनिष्ठा की प्रभा

प्रतीक्षा मुख्याभ्यागत की

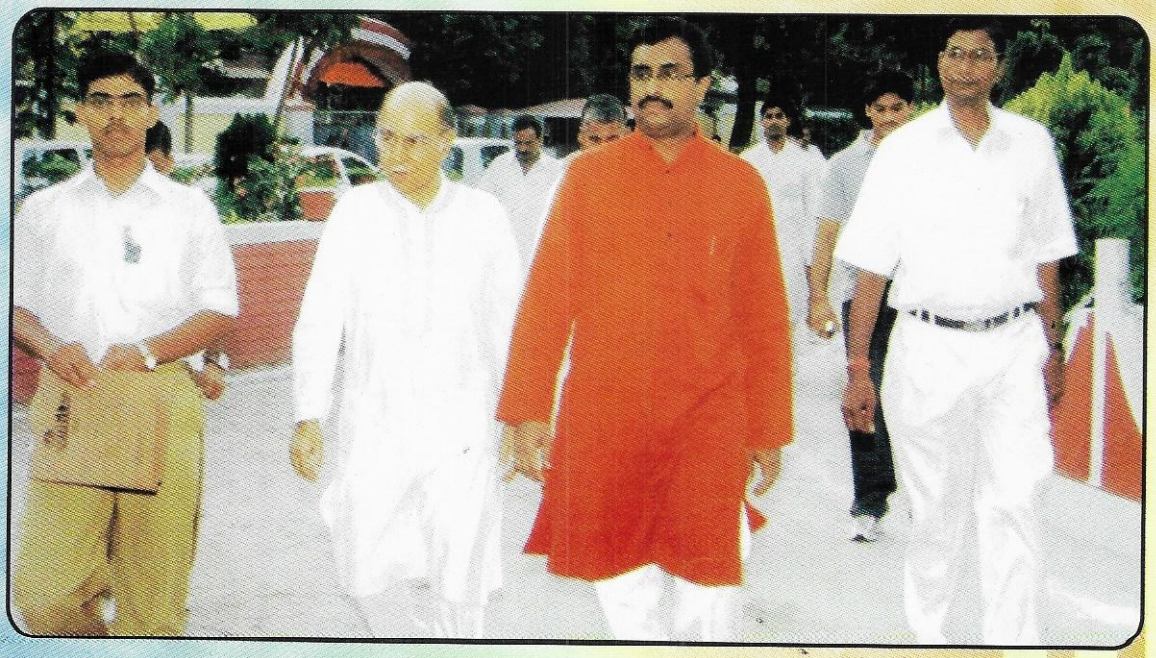

कार्यक्रम स्थल की ओर प्रस्थान करते हुए मा० राम माधव जी,
श्री वीरेन्द्र जी व प्रधानाचार्य जी

पंडित जी के चित्र पर पुष्पार्पण

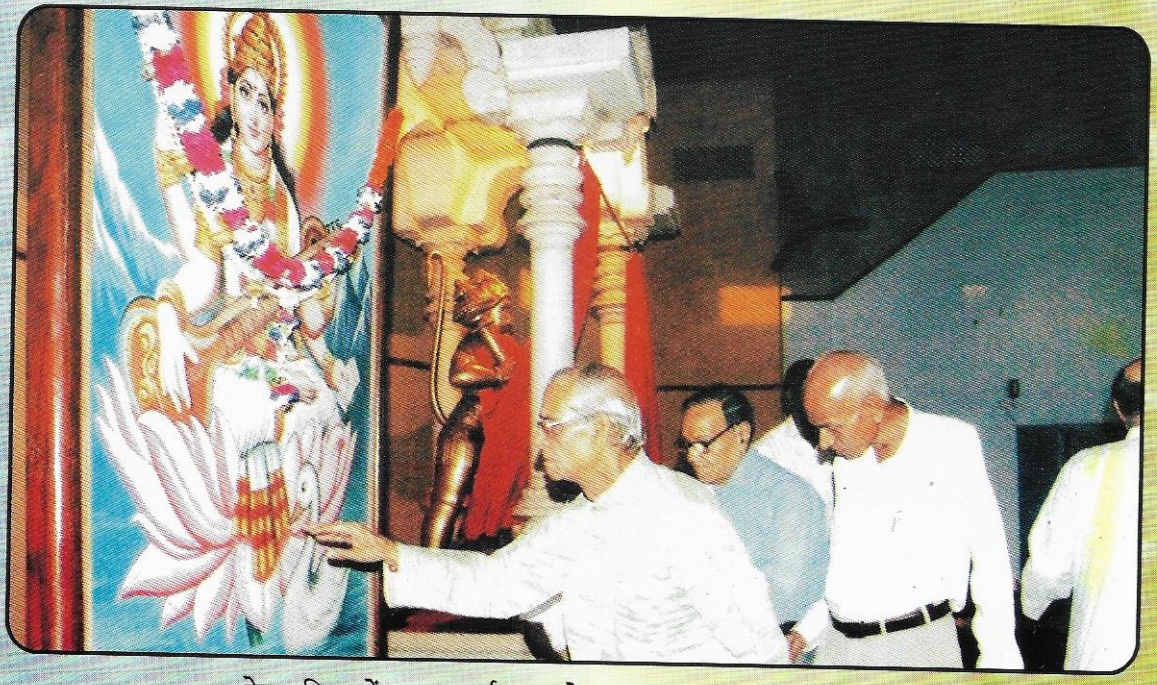

देव प्रतिमाओं पर पुष्पार्पण करते हुए मा० हरिकृष्ण जी सेठ व
प्रबंध समिति के अन्य सदस्य

मा० राममाधव जी का सम्मान
करते हुए
डॉ० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल

मा० राममाधव जी का
प्रेरक उद्‌बोधन

ध्यान से सुनिये

विद्यालय की वार्षिक आख्या – 2007–2008

- प्रकाश नारायण वाजपेयी
प्रधानाचार्य

युगद्रष्टा पं0 दीन दयाल उपाध्याय के 92वें जन्मोत्सव पर आज हम उनका पुनः स्मरण कर रहे हैं। साधना के पर्याय इस युग के ऋषि के द्वारा हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रदान की गई प्रेरणा अनंत काल तक आदर्श उदाहरण रहेगी और उनका बलिदान हर संवेदनशील देशभक्त के लिये एक चुनौती । वास्तव में हमारे विद्यालय की मूल भावना उस युग दधीचि के मर्मघाती बलिदान से ही प्रेरित है।

यह विद्यालय जिस भावना–भित्ति पर आधारित है उसके निर्माण की मूल सामग्री है, सात्विक भाव, सद्विचार और सदाचार। विद्यालय का उद्देश्य है शक्ति, शैर्य तथा साधना संकल्प के साथ भारत माता की आजीवन आराधना। इस उदात्त उद्देश्य–प्रेरित विद्यालय के निर्माण में जिन महनीय महापुरूषों ने अपना अनिर्वचनीय योगदान दिया है उनमें विद्यालय की कल्पना मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी **पूज्य भाऊराव,** इसकी आधार शिला रखने वाले युग पुरुष परम पूज्य श्री गुरु जी, भव्य भवन को मूर्त–रूप देने वाली **ममतामयी माँ श्रद्धेया बूजी** और इसकी कंचन–काया में प्राण संचरित करने वाले **श्रद्धास्पद बैरिस्टर साहब** सदा ही स्मरण किये जायेंगे। विद्यालय के पूर्व अध्यक्ष ब्रह्मलीन प्राचार्य श्री शिवशरण शर्मा का व्रती जीवन और संकल्पसिद्ध अध्यवसाय जहाँ हमारे लिये पाथेय है वहीं गोलोकवासी श्री इन्द्रजीत जैन की उदारता हमारा संबल।

संवत् 2026 की गुरु पूर्णिमा (18 जुलाई 1970) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय आज अपना अड़तीसवाँ वार्षिकोत्सव मना रहा है।

इस विद्यालय की कल्पना–शिल्प का आधार उदात्त भावना तथा प्रारूप जाग्रत विवेक है। हमारा लक्ष्य यह भी है कि जिन देशद्रोहियों के घिनौने षडयंत्र तथा सत्ता की गर्हित लिप्सा के कारण पण्डित जी की क्रूर हत्या की गयी, उन विषैले विचारों को आमूल समाप्त कर दिया जाये और ऐसे विष वृक्ष फिर कभी न पनपें, इसकी सुनिश्चित व्यवस्था भी की जाये ।

इस विद्यालय को शासन द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है। इसी विशेषता के प्रति सचेत रह कर हम विद्यालय के छात्रों का समग्र विकास करने में सफल भी हैं।

शैक्षिक उपलिब्धयाँ

परिषदीय परीक्षाएँ

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल 1975 में तथा द्वादश का प्रथम दल 1981 में उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित परीक्षा में सम्मिलित हुआ। परीक्षा–परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा है।

अद्यतन समेकित (Cumulative)

	दशम (34 वर्षों का)		द्वादश (28 वर्षों का)	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कुल छात्र	3212		2677	
उत्तीर्ण	3196	99.50	2663	99.36
ससम्मान	1232	38.35	722	26.98
प्रथम श्रेणी	1608	50.06	1567	26.98
द्वितीय श्रेणी	346	10.77	368	12.51
तृतीय श्रेणी	0010	00.32	05	00.20
प्रदेश में स्थान	106 (लगभग 4%)		90 (लगभग 4%)	

वर्ष 2008 का परिणाम निम्नांकित है:

	दशम	द्वादश
कुल छात्र	125	118
उत्तीर्ण	125	118
ससम्मान	64	52
प्रथम श्रेणी	57	66
द्वितीय श्रेणी	04	00
तृतीय श्रेणी	00	00
प्रदेश में स्थान	01	03

अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ –

1. वर्ष 2008 की हाईस्कूल परीक्षा में प्रदेश में 17 वाँ स्थान प्राप्त कर चि० प्रकाश केशव ने विद्यालय को गौरवान्वित किया है।
2. वर्ष 2008 की इण्टरमीडिएट परीक्षा में चि० अर्पित कटियार, अभय प्रताप सिंह, हितेन्द्र कटियार ने प्रदेश में क्रमशः 8वाँ, 14 वाँ तथा 19 वाँ स्थान प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया ।
3. वर्ष 1988 में इस संस्था से इण्टरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण होकर चि0 तरूण सक्सेना इस वर्ष न्यायिक सेवा के अधिकारी चयनित हुए हैं।
4. पाँच छात्र वर्ष 2008 की इण्टरमीडिएट परीक्षा के साथ ही आई० आई० टी० में भी चयनित हुए हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं का अद्यावधि परिणाम

कुल छात्रों की संख्या	वर्गशः	चयनित संस्था	सफल छात्रों की संख्या	प्रतिशत
2676	गणित 2346	आई.आई.टी.	283	12.06%
		अन्य इन्जीनियरिंग संस्थान	1490	13.51%
	जीव विज्ञान 330	मेडिकल परीक्षायें	87	26.36%

गत वर्ष की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

जे०ई०ई०/संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आई०आई०टी०, मर्चेण्ट नेवी, धनबाद खनन महाविद्यालय तथा सी०बी०एस०ई०)	18
यू०पी०टी०यू०/ (क्षेत्रीय अभियांत्रिकी विद्यालय)	100
अन्य (ए०एम०ई०ई०टी०वाई०, चैन्नई, एप०आई०एफ०टी०)	20
कुल (इंजीनियरिंग में) चयनित छात्र	138
सी०पी०एम०टी०/संयुक्त चिकित्सक प्रवेश परीक्षा (मेडिकल कालेजों हेतु चयनित)	07
अन्य	05

एन०डी०ए० और सी०डी०एस०. के माध्यम से सेना में पहुँचे लगभग 36 सैन्य अधिकारी और संघ लोक सेवा आयोग से चयनित लगभग 22 प्रशासनिक अधिकारी विद्यालय से प्राप्त संस्कारों एवं जीवन के उदात्त आदर्शों का प्रकटीकरण करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। विशेष बात यह है कि इन सबके विद्यालय से सतत् जीवन्त सम्बन्ध बने हुए हैं।

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज' परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते आ रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' में भी अपने छात्र प्रतिवर्ष शत प्रतिशत सफलता पाते हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता परीक्षाएँ में अपने विद्यालय को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

शासन द्वारा स्वीकृत छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले कुल 73 छात्र विद्यालय में अध्ययनरत हैं। हमारे अनेक छात्र अन्य स्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं। इन छात्रवृत्तियों के दाता महानुभावों तथा न्यासों/संस्थाओं के नाम निम्नांकित हैं। हम इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति

श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरि मोहन गर्ग छात्रवृत्ति

श्रीमती सावित्री अग्रवाल

श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल

श्री इन्द्रजीत जैन स्मारक छात्रवृत्ति

श्री प्रेम नारायण जी सोमानी

आई०जे०एस०ट्रस्ट कानपुर

श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति

श्रीमती भाग्यवती त्रिपाठी द्वारा श्री रवीन्द्र नाथ त्रिपाठी, पाण्डुनगर कानपुर श्रीमती संजना मित्तल

पूर्व छात्र चि० प्रवीण भागवत

पूर्व छात्र चि० संदीप मेहरोत्रा

पूर्व छात्र चि० हृदयेश गुप्त

पूर्व छात्र चि० अजय गुप्त

श्री डी०के० सोमानी 'मैनेजिंग ट्रस्टी' सोमानी फाउन्डेशन, नई दिल्ली ।

कुल मिलाकर 47 छात्र इन सभी न्यासों और संस्थाओं के द्वारा लाभान्वित रहे हैं। विद्यालय के पूर्व छात्र स्व0 गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरास्कार उनके पिता डॉ० सन्त शरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था ।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

खेल–कूद व शारीरिक शिक्षा

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता हैं अपने सीमित साधनों में यथासंभव खेलों में भी कौशल प्राप्त करने का हमारा प्रयास रहता है। विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्व दिया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन०सी०सी०) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं। इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य हैं।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वालम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र प्रायः प्रतिवर्ष ही देशदर्शन हेतु जाते रहते हैं। इस योजना के अन्तर्गत अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं।

नैतिक शिक्षा

हमारी समय–सारणी में नित्य प्रायः मानस, गीता आदि ग्रंथों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार बेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रों को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। छात्रों में सर्वगुण–सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु मापदण्डों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय–रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र व्यक्तित्व विकास :–

निर्भीक–सुचारु अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बन, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थाएँ कार्य करती हैं –

अष्टम कक्षा तक बाल–भारती, नवम–दशम में किशोर–भारती और एकादश–द्वादश में तरूण भारती जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं । छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र निर्णय–प्रक्रिया तथा छात्रावास–संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर नगर, जनपद प्रदेश स्तरों पर आयोजित वाद–विवाद, लेखन, ललित कला प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते रहते हैं।

कम्प्यूटर शिक्षण

विद्यालय का कम्प्यूटर विभाग सुव्यवस्थित और आधुनिकतम सुविधाओं से सुसम्पन्न है। साफ्टवेयर के माध्यम से कम्प्यूटरों पर ही पूर्ण अध्यापन तथा स्वनिर्मित साफ्टवेयर द्वारा अपने विद्यालय में छात्रों की प्रवेश–प्रक्रिया को भी कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया है। प्रवेश–परीक्षा का परिणाम भी विगत वर्षों से इण्टरनेट पर जारी किया जाने लगा है।

छात्रों के तकनीकी विकास हेतु विद्यालय अवधि के पश्चात् इण्टरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिसके द्वारा छात्र अपने Subject, Career, Current Issues की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

विद्यालय की गृह परीक्षाओं एवं Student Database को Computerized करने हेतु Software बनाने के लिए विभाग कार्यरत है जिसके द्वारा हम अपने विद्यालय की Attendance एवं Result को Computerized कर सकेंगे ।

युग – भारती

बाल, किशोर और तरुण–भारती की शृंखला में अगली कड़ी है युग–भारती विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था। जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, जो कि अब युग–भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है। युग–भारती ने अपने शिविरों, ग्राम–सम्पर्क–योजनाओं, संचार–साधनों के प्रसार आदि से समाज को अपनी लगन और निष्ठा का परिचय दिया गया है।

पूर्व छात्रों का विद्यालय से यह जुड़ाव विद्यालय की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण भी।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष दिनांक 21 सितम्बर (रविवार) को प्रातः 10.00 बजे से युग–भारती का वार्षिक अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुका है। यह वर्ष 1983 बैच के छात्रों का रजत जयन्ती वर्ष है, अतः इस बैच के अधिकाधिक विद्यार्थी विशेष रूप से उपस्थित रहे उस समय के आचार्यजनों का सम्मान भी किया गया ।

माँ सुशीला वात्सल्य मन्दिर

विद्यालय द्वारा प्रारम्भ हुआ यह एक पावन प्रकल्प है, जिसका उद्देश्य समाज के सुविधा–वंचित शिशुओं की जीवन की आवश्यक सुविधाओं के साथ पालन–पोषण तथा समुचित अध्ययन की व्यवस्था करना है।

इसके लिए विद्यालय के दाहिने पार्श्व में वी०एस०एस०डी० महाविद्यालय के अनुग्रह से प्राप्त भूमि पर एक भव्य भवन निर्मित हो चुका है। युग–भारती के ही एक सक्रिय सदस्य (पूर्व छात्र) के द्वारा इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए पूरा व्यय भार वहन करने का अनुकरणीय संकल्प लिया गया है। भविष्य में इस वात्सल्य मन्दिर के द्वारा पालित–पोषित एवं मार्गदर्शित छात्रों का यशस्वी जीवन समाज के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण बन सकेगा, इसी विश्वास के साथ विद्यालय का यह पावन प्रकल्प 23 सितम्बर 2004 से कार्यरत है। वर्तमान समय में 24 शिशु शिक्षा एवं संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। इस सेवाभावी पावन प्रकल्प में आप सबके सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

इस सत्र से विद्यालय में प्रतिभा–प्रोत्साहन–प्रकल्प का भी शुभारंभ हो चुका है, जिसमें सायं 4.30 बजे से 6.30 बजे तक कक्षा प्रथम से पंचम तक के छात्र–छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी है। वर्तमान में 84 छात्र–छात्राएँ अध्ययनरत हैं।

विगत सत्र 2007 से विद्यालय ने बी०एन०एस०डी० शिक्षा निकेतन के साथ संयुक्त रूप से आई०आई०टी० (जे०ई०ई०) की तैयारी हेतु अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन प्रारम्भ किया है।

भारतीय चिन्तन में शिक्षा का उद्देश्य विषय का कक्षा–शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति–निर्माण के माध्यम से समाज–जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा–प्रवाह अवरूद्ध होना भी स्वाभाविक है, अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करें जो समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रह कर अपनी तेजस्विता से निरन्तर नवजीवन का संचार करते हुए इस जीवन–प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें ।

दुर्भाग्य वश आज अधिसंख्य शिक्षा संस्थान इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में युग–भारती के सहयोग से विद्यालय की प्रभावी भूमिका निश्चय ही भारत के स्वर्णिम भविष्य की दिशा में एक आश्वस्ति है।

अंत में मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि छात्रों में राष्ट्र–निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष में आप सभी समाज बन्धुओं का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे ।

धन्यवाद ।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता 2008

बाल वर्ग

विषय– संस्कृति के सम्बंध में पंडित जी के विचार

प्रथम स्थान	– जीवेश राय	8 'ख'
द्वितीय स्थान	– शतंजय कुमार शुक्ल	7 'क'
तृतीय स्थान	– श्रीपति मिश्र	8 'ख'

किशोर वर्ग

विषय – धर्म तथा रिलीजन

प्रथम स्थान	– यश अवस्थी	10 'ख'
द्वितीय स्थान	– अंकुर पटेल	10 'ख'
तृतीय स्थान	– अजय सिंह रावत	10 'ख'

तरुण वर्ग

विषय – राष्ट्र एवं राज्य

प्रथम स्थान	– अभिषेक शुक्ल	12 'क'
	विवेक शर्मा	11 'ख'
द्वितीय स्थान	– सुयश मधुर दीक्षित	12 'ख'
तृतीय स्थान	– राजीव प्रताप सिंह	11 'ख'

आतंकवाद एवं राजनेता

- शुभम गुप्त
एकादश 'क'

अरे ! भारत के सोते हुए व्यक्तियों, जागो । आखिरकार कब तक सोते रहोगे ? क्या तुम्हारा अभी भी दिल नहीं सहमा है ? मेरा दिमाग यह सोचकर चकरा जाता है कि आतंकवादियों ने इतने बड़े–बड़े षड्यंत्र कैसे किये । इतना बड़ा षडयन्त्र कि खुफिया एजेंसियों पुलिस वगैरह को कानो कान खबर तक नहीं हुई । आतंकवाद का यह दौर पहले उत्तर प्रदेश में दिखाई दिया था, वहाँ से यह जयपुर पहुँचा। जयपुर से बंगलौर गया । बंगलौर से इसने अहमदाबाद एवं सूरत की ओर रुख किया। उसके बाद इसकी अगली मंजिल दिल्ली थी । दिल्ली से यह असम पहुँचा और अब मुम्बई में दस्तक दे चुका है यानी दूसरे शब्दों में कहा जाये तो भारत सरकार ने दरअसल इस पर कोई कड़ी प्रतिक्रिया नहीं की । वह पूरी तरह इनकार की मानसिकता में रही। भारतीय राजनेता तो वोट बैंक की गन्दी, घृणित राजनीति में गुँथे हुए हैं। भारत में लगातार बम धमाके हो रहे हैं, किन्तु भारत के राजनेता वोटबैंक की कुत्सित नीति को बढ़ाने में लगे हुए हैं। उन्हें यह समझ में नहीं आ रहा, यह अभास नहीं हो रहा कि अपने ही भाई बहन, माँ, पिता, बाबा, दादी मर रहें हैं। वर्तमान समय में भाई, भाई को ही गोली मार देता है। भारत के अधिकतर राजनेता अनपढ़, असभ्य, अनुभवहीन दुष्ट, रिश्वतखोर हैं। ऐसे राजनेता क्या देश की कमान सँभाल सकते हैं ? नहीं। मैं किसी पार्टी का सार्वजनिक स्थान मिले, जहाँ मेरी बात को पूरी जनता पहुँचाया जाए तो मैं सबसे पहले यह कहूँगा, कि वोट बैंक की कुत्सित नीति को बन्द करो । अरे राजनेताओं । तुम लोगों में कुछ सहानुभूति, प्रेम भावना है या नहीं या फिर तुम राजनेताओं के लिए धन (रुपये–पैसे) ही सब कुछ है। मुझे तो लगता है कि इनमें कोई भावना नहीं है।

"मनमोहन सिंह, जो कि हमारे देश के वर्तमान समय में प्रधानमंत्री है, वे क्यों कुछ नहीं करते हैं ? वे क्यों हाथ पर हाथ धरे हुए बैठे हैं ? अरे मनमोहन जी कुछ करिए । कब तक भारत आतंकवाद को झेलता रहेगा पूरी दुनिया आतंकवाद से जूझ रही है। मेरे विचार से–**"आतंकवाद को खत्म करने के लिए सबसे पहले एक–एक आतंकवादी संगठनों के कैम्पों को ढूँढ लेना चाहिए और बिना हिचके भारत को पाकिस्तान पर हमला कर देना चाहिए ।** यह बात सच है कि मुम्बई में विस्फोट 26 नवम्बर 2008 को हुआ । ताज होटल व ओबेराय होटल पर हमला विश्व की सबसे क्रूर घटनाओं में से एक है। मेरे विचार से, **यदि भारत के अधिकतर राजनेता माननीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी जैसे हो जायें, तो देश की काया पलट जायेगी।** अब यह पढ़कर कुछ लोगों को बुरा भी लगा । "मायावती", जो कि उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री है, उन्होंने अपने कथन में कहा –

" अगर उत्तर प्रदेश पर कोई हमला होगा, तो उसका मुँह तोड़ जवाब दिया जायेगा।"

अरे! मुझे यह समझ में नहीं आता कि ऐसा घृणित क्षेत्रवाद कैसे पनपता है। **हम सब एक देश के**

वासी हैं, न कि प्रदेश के । देश सर्वोपरि है। अगर प्रत्येक मुख्यमंत्री अपने राज्य के लिए ऐसा कहने लगे, तो भारत की वही स्थिति हो जायेगी, जो 1947 से पहले थी। दूसरे देश हम पर हमला कर देंगे। अभी तो लोग सोचते हैं कि हमला तो पड़ोस वाले घर में हुआ है, उससे हमें क्या करना । लेकिन ऐसी कुण्ठित मानसिकताओं वाले लोगों कल हमला तुम्हारे घर में भी होगा, तब तुम सोचोगे कि मैं गलत था। इस प्रकार किसी को भी किसी दूसरे के आतंक से नहीं बचाया जा सकता है।

"हिन्दुस्तान की सरजमीं पर मुसलमानों व काफिरों में सभ्यता की जंग छिड़ चुकी है।"

मै एक छात्र हूँ और मैं आप सबसे प्रार्थना करता हूँ कि देश के उन महान शहीदों, उन सैनिकों को, जो कि लगातार सीमा पर खड़े रहते हैं, याद कीजिये उन्हें। क्या हम भी ऐसा कुछ नहीं कर सकते । हम लोग भी ऐसा कर सकते हैं।

"हर भारतीय के मन में होना चाहिए, कि देश को अगर मेरी जरूरत पड़ी, तो मैं अपना सर्वस्व न्योछावर कर दूँगा।"

निराला जी की निराली संवेदनशीलता

- निलय सिंह
नवम 'ख'

हिन्दी साहित्य के दो महान साहित्यकारों निराला जी और महादेवी जी के बीच में भाई–बहन जैसा प्यार था। एक दिन महादेवी जी का मन हुआ कि निराला जी को साथ लिया जाय और शहर में संगम की तरफ जरा घूमा जाय । तब शीत ऋतु थी। खूब अच्छी धूप फैली थी । महादेवी जब निरालाजी के पास गयीं तो क्या देखती हैं कि आप अपना कम्बल ओढ़ाकर एक पिल्ले को खिला रहे हैं– शायद दूध में कुछ भिगो रखा था उसके लिए । अकेला पिल्ला यहां कैसे आ गया – महादेवी जी ने सोचा । कहा, पिल्ले को किनारे करो – चलो जरा घूमने चलें ।' पर निराला जी कह उठे, 'कैसे चलूँ ? यह इतना छोटा है कि इसे अकेला दोड़ भी नहीं सकता । थोड़ा रुकिये न, इसकी माँ अभी आती होगी । वह इसे ले जायेगी और मैं आप के साथ निकल चलूँगा।'

क्या करती महादेवी, रुकी रहीं। निराला जी उस छोटे पिल्ले को बड़े स्नेह से खिलाते पिलाते रहे । तब तक उस पिल्ले की माँ आ गयी और वह अपने बच्चे को बड़े प्रेम से वहाँ से ले गयी ।

तब निराला जी ने बड़े संतोष के साथ, कहा मैंने कहा था न कि अब वह आती ही होगी। इसी तरह वो रोज आहार खोजने जाती है और इस बच्चे को मेरे पास छोड़ जाती है – शायद इसे विश्वास जम गया है कि मेरे नजदीक इस पर कोई संकट न आयेगा । फिर अपना पेट कहीं भर लेने के बाद यह इसे यहाँ आकर ले जाती है। यह क्रम इसका रोज का है।' महादेवी उस समय वहाँ जब भी पहुँची, यही कुछ देखा और चकित रह गयीं कि कैसे वे अन्य जीवों के प्रति उदार हृदय वाले हैं।

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता में बाल वर्ग में प्रथम स्थान

संस्कृति के सम्बन्ध में पं. दीनदयाल जी के विचार

- जीवेश राय
अष्टम 'ख'

प्रस्तावना - किसी भी देश के नागरिकों का आचरण व उनकी अर्थव्यवस्था के लिये उत्तरदायी तथा विकास का घोतक संस्कृति होती है। व्यक्ति केवल शरीर ही नहीं बल्कि शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा का समुच्चय है। समष्टि व्यक्तियों से मिलकर बनती है इसलिये उसमें इन आवश्यक तत्त्वों का किसी न किसी रूप में दर्शन होना आवश्यक है। महापुरूष एक दल के नहीं होते हैं। महापुरुष ऐसे व्यक्ति होते हैं जो समाज का स्थायी मार्गदर्शन करते हैं। पं० दीनदयाल जी भी उनमें से एक थे ।

जीवन दर्शन - पंडित दीनदयाल जी का जन्म 25 सितम्बर 1916 को हुआ । इनके नाना चुन्नीलाल शुक्ल अजमेर – जयपुर के बीच रेलवे लाइन के बीच स्थित ग्राम धनकिया के स्टेशन मास्टर थे। वे धनकिया गाँव में रहते थे, यहीं पर दीनदयाल जी का जन्म हुआ । इनके पिता भगवती प्रसाद उपाध्याय जसलेर रेलवे लाइन के स्टेशन मास्टर थे। इनके पिता भगवती प्रसाद उपाध्याय जलेसर रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर थे। इनके पितामह पं० हरीराम शास्त्री ज्योतिष शास्त्र में निपुण थे।

पंडित हरीराम शास्त्री अपने समय के महान विद्वान थे। बताया जाता है कि जब पंडित हरीराम शास्त्री की मृत्यु हुई थी तब मथुरा–आगरा में उनके सम्मानार्थ शोक हड़ताल हुई ।

पंडित दीनदयाल जब 6 वर्ष के थे तब उनके माता–पिता का देहावसान हो गया। वे बाल्यकाल से ही मोह –ममता पाने से वंचित रह गये । उनका पालन–पोषण उनके मामा राधारमण शुक्ल ने किया। बालकाल से ही उन्हें कठिन परिस्थितियों से जूझने की प्रेरणा मिल गयी ।

संस्कृति एवं विचार - पंडित दीनदयाल जी मूलतः भारतीय संस्कृति के मूर्तिमान स्वरुप थे। पंडित दीनदयाल जी सामान्यतः साधारण वेशभूषा पहनते थे जो एक ग्रामीण की भाँति प्रतीत होती थी। पंडित दीनदयाल यह नहीं चाहते थे कि मैं अधिक विख्यात होउँ, अधिक ग्रन्थ लिखूँ अधिक ख्याति प्राप्त करूँ। पंडित दीनदयाल जी के अन्दर ख्याति व वैभव प्राप्त करने की कोई लालसा नहीं थी। यदि वे चाहते तो अत्यधिक धन व सत्ता में ख्याति प्राप्त सकते थे लेकिन वे साधारण व्यक्ति थे । उनके विचार उनकी नीति, उनका लक्ष्य, उनकी विचारधाराएँ सभी प्रेरक थीं।

भारतीय संस्कृति - पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्मक मानववाद के प्रणेता थे। उनके अनुसार समग्रता की उपेक्षा करके किया जाने वाला अध्ययन हमें विशेषीकरण के कुछ लाभ अवश्य देता है

परन्तु धीरे–धीरे इसका लाभ नष्ट होने लगता है तथा इसकी खण्ड दृष्टि समाज के लिये अहितकारी सिद्ध हो जाती है।

उसके अनुसार आज देश में कुछ ऐसा ही हो रहा है। वे समग्रतावादी अभिप्रेत के चिन्तक थे। आजकल भारतीय संस्कृति बुरी तरह से प्रभावित हो रही है इसमें विदेशी संस्कृति का समावेश हो रहा है।

उसके अनुसार भारतीय ढंग सदा से ही धार्मिक एवं सांस्कृतिक रहा परन्तु अब ये धर्मों में परिवर्तन किस प्रकार हो रहा है। आज विभिन्न धर्मों जैसे – हिन्दू, मुस्लिम सिक्ख, ईसाई आदि में कट्टरता, लड़ाई व भेदभाव हो रहा है। भारतीय संस्कृति का सर्वप्रथम संस्कृत से उदय हुआ परन्तु आज इसको पिछड़ा कहा जा रहा है। उनके विचार इतने प्रभावी थे कि लोग उन्हें उदाहरण के रूप में मान लेते थे।

सफलताएँ - पंडित दीनदयाल जी ने अजमेर बोर्ड से मैट्रिक की परीक्षा दी उन्हें वहाँ पर स्वर्ण पदक दिया गया। उसके बाद उन्होंने राजस्थान से इण्टर किया वहाँ पर वे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुये । फिर वे आगरा गये वहाँ पर उन्होंने सेण्ट जॉन कॉलेज से अंग्रेजी में एम०ए०प्रीवियस किया उन्होंने फाइनल नहीं दिया क्योंकि वे अपनी बहन (जो सगी नहीं थी) के साथ रहते थे । बहन की तबयित खराब होने पर वे उन्हें पहाड़ पर निसर्गोपचार के लिये ले गये वहीं पर उन्होंने अध्ययन छोड़ दिया इसलिये वे फाइनल नहीं दे पाये । सन् 1937 ई० मे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के निकट आये । उत्तर प्रदेश में संघ की नींव रखने वाले भाउराव देवरस से उनका सम्पर्क हुआ तथा मेधा को लक्ष्य मिला और संघ के प्रचार–प्रसार में जुट गये । वे संघ के प्रचारक बन गये । उन्हें लखीमपुर संघ का प्रचारक बनाया गया। वहाँ उन्होंने एक हाईस्कूल में अध्यापक बनकर पढ़ाया । उन्होंने कहा कि आपके यहाँ जिस विषय में अध्यापक का आभाव हो उसे मैं पढ़ाऊँगा । विद्यालय–प्रबंधक ने उनसे प्रधानाचार्य बनने के लिये कहा परन्तु उन्होंने उसे अमान्य कर दिया कर दिया। वे बोले – मुझे मासिक 2 रु० की जरूरत रहती है तो मैं 200 रू. लेकर क्या करूँगा । पंडित दीनदयाल जी की हत्या 11 फरवरी 1968 ई० मुगलसराय स्टेशन पर हुई ।

पंडित दीनदयाल अन्तिम नहीं थे। हमारी मातृभूमि ने अनेक मेधाओं को जन्म दिया है जरूरत है तो उनके विकसित होने की । पंडित दीनदयाल जी ने गौरवशाली अतीत से भव्य भविष्य को जोड़ा था। उन्होंने भारत में स्थित धर्मों में भेदभाव तथा कुरीतियों को दूर किया । हमें पंडित दीनदयाल जी की तरह भारतीय संस्कृति लगाव से रखना चाहिये ।

तिल–तिल कर जलते–जलते वह दाह बन गया,
पथ पर चलते–चलते वह राह बन गया।
ऐसा था वह भक्त स्वयं भगवान बन गया,
कुम्भकार की कृति होकर निर्माण बन गया ।।

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में प्रथम

धर्म और रिलीजन

- यश अवस्थी
दशम 'ख'

रूपरेखा:- 1.प्रस्तावना 2. धर्म की अवधारणा 3. धर्म का स्वरूप 4. धर्म : राष्ट्र की जीवनदायिनी शक्ति 5. पंडित दीनदयाल जी की धर्मनिरपेक्षता 6. (अ) धर्मराज्य की कालजयी संकल्पना (ब) अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक की शुद्धता 7. धर्म व रिलीजन में अन्तर 8. समाहार

प्रस्तावना :- निश्चित रूप से संस्कृति, संकल्प, धर्म व जीवन आदर्श किसी राष्ट्र के अस्तित्व की अनिवार्यताएँ हैं, परन्तु इन महत्वपूर्ण शब्दों में निहित सिद्दान्तों का अनावरण किए बिना पंडित दीन ्याल जी के सम्पूर्ण दर्शन का सार खोजा नहीं जा सकता । पंडित जी का धर्म के विषय में चिन्तन व्यापक, सहज व गम्भीर है व राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत है। धर्म आधारभूत पुरूषार्थ है। पं० दीनदयाल जी के शब्दों में **" धर्म के अवयव सनातन व सर्वव्यापी है। धर्म को मानव जीवन की सम्पूर्ण आचार संहिता का तात्विक आधार कहा जाता है।"**

कहा भी गया है –

यतोऽभ्युदयानिः श्रेयससिद्धिः सः धर्म :

जिसने ऐहिक व पारलौकिक उन्नति प्राप्त की हो, वही धर्म है। धर्म उन नियमों, व्यवस्थाओं आधार संहिताओं व व्यापक सिद्धान्तों का अन्तर्भाव है जो जीव को जीवन व्यतीत करने का तरीका सिखाती है। इससे अर्थ व काम की सिद्धि होती है।

अतः मैं नवयुग के चाणक्य, महामनीषी, युगद्रष्टा पंडित जी के धर्म के विषय के विचारों से आपको जोड़ने का प्रयास कर रहा हूँ ।

धर्म की अवधारणा :– धर्म वह है जो पशु को मनुष्य व मनुष्य को परमेश्वर तक पहुँचाने का साधन है। निःस्वार्थता ही ईश्वर है। धर्म का मूलोद्देश्य है – मनुष्य को सुखी करना। यत्

'सुखस्य मूलं धर्मः'

जिस प्रकार शरीर में प्राण सूक्ष्म व अगोचर रूप से शरीर को संचालित करता है, उसी प्रकार धर्म भी व्यक्ति व राष्ट्र को निर्देशित करता है।

पंडित जी ने कहा था, **"धर्म में हमारा विश्वास उसकी साधनता के कारण नहीं अपितु स्वयंभू है। राज्य का आधार भी हमने धर्म को माना है। अकेली दण्डनीति राज्य का परिष्कार नहीं कर सकती ।"**

एक और उदाहरण समीचीन होगा –

'धारणात् धर्म इत्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः ।

जिस प्रकार कोई तत्व किसी पदार्थ से जुड़कर न केवल अपना अस्तित्व बनाए रखती है, प्रत्युत उस पदार्थ का भी महत्व बनाए रखती है जिससे वह जुड़ी रहती है, वही धर्म है।'

धर्म का स्वरूप :– निष्कर्षतः धर्म अपना जीवन व अपनी उपयोगिता सतत बनाए रखता है, अतः निश्चयात्मक रूप से समस्त सृष्टि चक्र की गतिविधियों का गुप्त सूत्रधार धर्म ही है। वेदो का मूल आधार भी धर्म है क्योंकि – **वेदोऽलेखी मूलधर्मम्**

अन्यत्र कहा गया है –

धर्मेण धारयते पृथ्वी, धर्मो धारयति प्रजाः ।

धर्मेण धार्यते लोकः धर्मो रक्षति रक्षितः ।।

'धर्मोरक्षति रक्षितः' का सन्देशात्मक अर्थ यही है कि जो प्राणी स्वयं के आचरण से धर्म का जीवन बनाए रखता है, तो सदाचरण करने वाले उस व्यक्ति की विशिष्टता भी धर्म ही समाज में बनाए रखता है।

समाज का धर्म व्यावहारिक मूल्य व व्यक्ति का धर्म नैतिक मूल्य के समानुपाती होना चाहिए । कहा गया है, जब राज्य, समाज व व्यक्ति परस्पर एक दूसरे के पूरक हो या अविरोधी हों तब राष्ट्र का उत्थान होता है। यह स्थिति स्वधर्म के सापेक्ष होती है।

जब 'धर्म', विश्वबन्धुत्व', **'वसुधैव कुटुम्बकम्' सर्वधर्मसमभाव' व 'सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु'** जैसी सत् आकांक्षाओं पर आधारित मानकों का पूरक बन जाता है तो वह **एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति** की परम्परा का अनुगामी बन जाता है।

निष्कर्षतः 'समष्टि के अनुकूल, समाज के लिए उपयोगी एक व्यावहारिक चेतना, जो स्वतः स्फूर्त होती है, सामाजिक सभ्यता की परम्परा से प्रभावित होने वाली व्यवस्था ही धर्म है।'

धर्मः राष्ट्र की जीवनदायिनी शक्ति - धर्म राष्ट्र का महत्वपूर्ण अंग है। धर्म के विषय में विवेचन करते हुए पंडित जी कहते हैं

"धर्म संघर्ष में नहीं समझदारी में होता है, धर्म शिक्षा देता है कि एक –दूसरे से संबंध स्वार्थ के आधार पर नहीं अपितु आत्मा से हो ।' 'मम' अर्थात् 'यह मेरा है' नहीं सब तेरा है।' यह धर्म की भावना है।"

धर्म मनुष्य को मनमानी से रोकने, स्वैराचरण पर प्रतिबंध लगाने वाला प्रेय के पीछे श्रेय को न भूलने देने में सहायक होता है।

पंडित जी कहा, **" हमारा धर्म हमारे राष्ट्र की आत्मा होती है, बिना धर्म के राष्ट्रजीवन का कोई अर्थ नहीं होता है।"** परन्तु अर्थ के अभाव में धर्म नहीं टिक सकता क्योंकि एक सुभाषित है –

बुभुक्षितः किं न करोति पापम्

क्षीणाः नराः निष्करूणाः भवन्ति ।

यह भी सत्य है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही पूर्ण धर्ममय व संयमी है गीता में कहा गया है यदि अधर्म के मूल को उखाड़ने व धर्म के बीजारोपण के लिए ईश्वर जन्म लेता है व सृष्टि अहर्निश गतिशील रहती है।' कह सकते हैं कि ईश्वर से धर्म बड़ा है।

परन्तु आज के जनमानस के चित्त में अनेक भ्रामक धारणाएँ उत्पन्न हुई हैं। अतः इन पंक्तियों की ओर ध्यान दें–

पंडित जी की धर्मनिरपेक्षता :- पंडित जी ने कहा कि धर्म तो एक व्यापक व सनातन तत्व है जिससे सृष्टि की धारणा होती है, समाज की धारणा होती है, अतैव धार्य मंत्र ही धर्म है। यह जीवन के सभी पहलुओं का आचमन करती है। पंडितजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि धर्म हिन्दू व मुस्लिमों की पौराणिक गाथाओं से उपजी पिछलग्गू मनोवृत्ति नहीं है। यह तो लोकमत व लोकतंत्र के अंकुरों को परिपक्व बनाती है। यह राज्य का आधार स्तम्भ है। शायद उस युगद्रष्टा ने धर्म व राष्ट्र के मध्य संबंध इस प्रकार स्थापित किया –

"राष्ट्र धर्महीन या धर्म निरपेक्ष उसी प्रकार नहीं हो सकता है जिस प्रकार अग्नि तापहीन या तापनिरपेक्ष नहीं हो सकता । राष्ट्र तो धर्मराष्ट्र ही हो सकता है क्योंकि राष्ट्र व धर्मनिरपेक्षता परस्पर विरोधी हैं।

पंडित जी ने व्यक्तिवाद को अधर्म मानते हुए कहा –"व्यक्तिवाद अधर्म है। राष्ट्र के लिए कार्य करना धर्म है। जो व्यक्ति समाज व धर्म के लिए जीते हैं, वही व्यक्ति समाज व धर्म के लिए मरते भी हैं।"

धर्मराज्य की कालजयी संकल्पना - पंडित जी ने धर्मराज्य के विषय में अपनी परिकल्पना प्रस्तुत कर समाज को नये आयाम दिये । पंडित जी ने कहा , **"धर्मराज का आशय मजहबी राज्य (Theocratic state) नहीं है। मजहबी राज्य में किसी पंथ या गुरु का राज्य होता है परन्तु धर्मराज्य में प्रत्येक व्यक्ति को अपने मजहब की स्वतंत्रता रहती है"**

धर्मराज्य में मनुष्य की सुख, शान्ति के लिए उसके मजहब को समाज में स्थान दिया जाता है। अतः स्पष्ट है कि धर्मराज्य पंथनिरपेक्ष राज्य नहीं है परन्तु कुछ लोगों ने अपने हृदय का शिथिलन कर थे धारणाएँ पाल रखीं है कि "धर्मराज्य पंथनिरपेक्ष है।" पंडित जी ने मनुष्य की आवश्यकता पर कहा **"मानव की सर्वाधिक आवश्यकता है एक धर्मराज्य की न कि बहुसंख्यकों** द्वारा शासन की । राज्य तो धर्म के विभिन्न अंगों में महत्वपूर्ण है परन्तु धर्म से ऊपर नहीं ।

उन्होंने कहा, **'लंका में सोने की ईंट तो होगी परन्तु रामराज्य नहीं।'** धर्म नैतिक वअपरिवर्तनीय है।

बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक की शुद्धता :. भारत में इनके विभाजन का सीमित क्षेत्र है इनको विस्तृत करने पर राष्ट्र नष्ट हो जाता है। अतः इनका विभाजन अनुचित है। यदि लोकतंत्र को सार्थक बनाना है तो अल्पसंख्यकों को भारतीय मानना चाहिए, न कि विवाद करना चाहिये ।

यदि अखण्ड भारत की स्थापना करनी है तो हिन्दू बहुसंख्यकों द्वारा शासन होना चाहिए ।

धर्म व रिलीजन में अन्तर :– धर्मराज्य की संकल्पना में इसको हम संकुचित तब बना देते हैं जब हम

धर्म को इसके संकीर्ण अर्थ से जोड़ देते हैं। हिन्दू राष्ट्र कभी रिलीजन को प्रश्रय नहीं देता ।

धर्म, पंथ, मजहब या रिलीजन नहीं है यह तो मनुष्य में सदाचरण की शिक्षा का प्रभावी माध्यम है। किसी मन्दिर, मस्जिद में अभ्यर्चन, पंथ, मजहब, रिलीजन कहलाएगा, धर्म नहीं ।

परन्तु भ्रम की तो तब स्थिति होती है जब हम अपनी धर्मानुप्राणित संस्कृति से धर्म के अन्तर्गत रिलीजन के सहचारी भावों का जोड़ कर देते हैं।

हमारे पथ भ्रष्ट नेताओ ने पाश्चात्य सभ्यता का अनुगमन कर भ्रामक धारणा सभ्यता का अनुगमन कर भ्रामक धारण उत्पन्न की । यही कारण है कि धर्म की व्यापकता व उसकी शाश्वत परिभाषा भूल जाते हैं ।

पंडित जी ने कहा, **"रिलीजन यानि पंथ, मत, मजहब परन्तु धर्म कदापि नहीं यह तो एक व्यापक अनुभूति व धार्य मंत्र है।"**

अतः हम अपने चित्त में भ्रामक धारणाओं का मूल नष्टकर, धर्मराज्य की विशुद्ध परिकल्पना व धर्म की उपादेयता समझें। यही श्रेयस्कर है।

समाहार - अतः मैं धर्म के संबंध के अपने मनन का सार इस प्रकार पाता हूँ – **"धर्म की परिधि में सम्पूर्ण मानवता सन्निहित है। धर्म वह है जो आदि रूप से बंध है। यह सम्पूर्ण मानव जीवन की आचार संहिता है। यह वह व्यवस्था है जो व्यक्ति को प्रलय समाज की पतन से रक्षा कर, व्यक्ति के चरमोत्कर्ष को शिखर तक पहुँचाने में सार्वदेशिक व सार्वकालिक नियम उपलब्ध कराती है।"**

अतः हम राष्ट्र के प्रतिनिधि को पहचाने धर्म को समझें, सफल, सक्षम, कालजयी, स्थायी व आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाकर अपने व्यक्तित्व को सार्थक कर नैतिक को अंगीकार करें। कृतयुग का उद्घोष है –

"धर्म आस्था पर हम जीते, इस पर ही मर जायेंगे राष्ट्र की रक्षा के लिए, संघर्षों से टकरायेंगें।"

चरैवेति ! चरैवेति !!

हीरों से हुई थी "जीवन" की शुरूआत

- *दीपक सचान*
अष्टम 'ख'

पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति 'अमीनों एसिड' से हुई थी। लेकिन जर्मनी के वैज्ञानिक ने हाल में नई थियरी जारी की है। उनका दावा है कि धरती पर प्राकृतिक हीरों की सतह पर पानी की क्रिस्टलीय परत जम गयी। इसे 'हाइड्रोजनीकृत हीरा' कहा गया। लगभग एक अरब साल पहले प्रारंभिक अणु इन हाइड्रोजनीकृत हीरों की सतह पर गिरे तो अभिक्रिया हुई। इसी अभिक्रिया से जटिल जैविक अणु पैदा हुए। जिनमें आखिरकार जीवन की शुरूवात हुई। हीरे पृथ्वी पर जीवन की शुरूआत के पहले से मौजूद थे।

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता में तरुण वर्ग में प्रथम

राष्ट्र एवं राज्य

- अभिषेक शुक्ल
द्वादश 'क'

प्रस्तावना - राष्ट्र के लिए चार बातों की आवश्यकता होती है। प्रथम **भूमि** एवं **जन,** दूसरी सबकी इच्छाशक्ति यानी सामूहिक जीवन का संकल्प, तीसरी एक **नियम** या **व्यवस्था,** जिसे संविधान कहते हैं और जिसके लिए हमारे आर्यावर्त में बेहद ही सुन्दर शब्द का प्रयोग हुआ – **धर्म**। चौथा है – सुसंस्कारित एवं परिशुद्ध जीवन–आदर्श। उपर्युक्त चारों की समष्टि अथवा इनके समुच्चय को **राष्ट्र** कहते हैं।

राष्ट्र का मौलिक स्वरूप :- (i) भूमि - भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जितने जाग रूक होंगे, हमारी राष्ट्रीयता उतनी ही बलवती होगी। पृथ्वी सच्चे अर्थों में समस्त राष्ट्रीय विचार धाराओं की जननी है। जो राष्ट्रीयता पृथ्वी से नहीं जुड़ी, वह निर्मूल है।

(ii) जन - भूमि और जन के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप होता है। जन के कारण ही पृथ्वी को 'मातृभूमि' की संज्ञा दी जाती है। पृथ्वी माता है और जन सच्चे अर्थों में उसके पुत्र ।

(माता भूमिः पत्रोऽहं पृथिव्याः)

इसी भावना से राष्ट्र निर्माण के अंकुर उत्पन्न होते हैं।

राज्य का स्वरूप :- राष्ट्र के प्रत्येक अंग को नियमित रूप से चलाने के लिए और सुरक्षित रखने के लिए राज्य–शक्ति नितान्त आवश्यक है यदि किसी राष्ट्र का दृढ़ राज्य नहीं है तो राष्ट्रभाषा का स्थान राजभाषा ले लेगी । धर्म नाशोन्मुखता की ओर अग्रसर हो जाएगा व सामाजिक संगठन जड़ से हिल जाएगा। प्रत्येक राष्ट्र की राज्य शक्ति अदृश्य रूप से उसकी रक्षा करती है। यही कारण है कि संसार के इतिहास में अगणित जनसमुदाय स्वराज्य के लिए अपने को न्यौछावर करते आए हैं।

दीनदयाल जी का कथन था कि **"जीवन की भाँति शास्त्र भी समयानुकूल परिवर्तनीय हैं। अपने धर्मदर्शन का विकास और परिमार्जन करने का अधिकार हर मतावलम्बियों को होना चाहिए और राज्य द्वारा प्रत्येक वर्ग को ऐसा करने की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए ।"**

राष्ट्र के सिद्धान्तों की मूल प्रकृति : चिति - **'चिति'** राष्ट्र की आत्मा का शास्त्रीय नाम है। यह एक शास्त्रीय नाम है। यह एक शास्त्रीय उक्ति है कि प्रत्येक जनसमूह की एक प्रकृति होती है 'चिति' राष्ट्र की वह मूल प्रकृति है जो जन्मजात होती है, किन्हीं ऐतिहासिक कारणों से नहीं बनती है। चिति के कारण ही राष्ट्र का भिन्न व्यक्तित्व उजागर होता हैं प्रत्येक समाज चिति के साथ ही उत्पन्न होता है और चिति ही उसकी संस्कृति की दिशा निर्धारित करती है। दीनदयाल जी के शब्दों में – "इसी आत्मा के आधार पर राष्ट्र का निर्माण होता है और यही आत्मा राष्ट्र के प्रत्येक श्रेष्ठ व्यक्ति के आचरण द्वारा प्रकट होती है।"

राष्ट्रीय अस्मिता :- राष्ट्र का स्वरूप एक ऐसे तत्त्व के अस्तित्व पर निर्भर करता है जो

अदृश्यमान होते हुए भी सर्वाधिक तीव्रता से अपना अनुभव कराने में सक्षम है। यह राष्ट्रीय अस्मिता ही है जिसके नष्ट होने पर विश्व पटल पर तमाम राष्ट्र केवल अतीत की स्मृति मात्र बनकर रह गए है। प्राचीन यूनान, रोम, मिस्र का अस्तित्व आज नहीं हैं, यद्यपि भूमिखण्ड और लोग वहाँ आज भी हैं।

इस सम्बन्ध में दीनदयाल जी ने एक बहुत ही व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया – " प्रत्येक मनुष्य की तरह प्रत्येक राष्ट्र का भी अपना एक 'स्वत्व' होता है। वही उसके जीवन का मूल स्वर है जिसके साथ सब स्वर मिलकर समरसता उत्पन्न करते हैं।" इसी भावना से अनुप्राणित होकर एक अंग्रेज बालक स्वयं को दिग्विजयी पूर्वजों के वंशज के रूप में देखता है और अपने प्रतिद्वन्दी के हौंसले पस्त कर देता है।

अखण्ड राष्ट्र की भावना एवं विशुद्ध राष्ट्रवाद :- एकता की अनुभूति के अभाव में हम अलग हुए, यही भाव हमें अखण्ड बनाएगा। हमारा राष्ट्र एवं संस्कृति अखण्ड है। 'खण्ड' तो विकृति का नाम है। इसलिए हमें यह भाव छोड़ देना चाहिए, तभी हमारा अन्तः संघर्ष समाप्त होकर दिग्विजय का सम्बल प्राप्त कर सकेगा। दीनदयाल जी के शब्दों में – **"इस पुण्यभूमि में आज तक जो प्रजा उत्पन्न हुई और काल की चाहे जितनी भिन्नताएँ हों; किन्तु उनके जीवन में एकता और समरसता का दर्शन अखण्ड भारत का प्रत्येक पुजारी करेगा।"**

पंडित जी ने इस सम्बन्ध में कहा था कि – **"यदि पश्चिमी राष्ट्रवाद की विभीषिकाओं से विश्व को बचाना है तो भारतीय राष्ट्रवाद को संगठित करके सशक्त और समर्थ रूप में खड़ा करना होगा ।"** इसकी व्याख्या करते हुए वे कहते हैं कि – **इतिहास के हजारों वर्षों में भारत के द्वारा मानव–जाति को पीड़ा पहुँचाने वाला संसार में एक भी पृष्ठ नहीं दिखाई पड़ता । भारतीय राष्ट्रवाद में तो विश्वमंगल की भावना है ..... और कुछ नहीं ।"**

धर्म एवं एकात्मवादी संस्कृति :– श्रेयससिद्धि स धर्मः अर्थात् जिससे ऐहिक एवं पारलौकिक उन्नति हो वही धर्म है। धर्म को मानव जीवन की सम्पूर्ण आचार संहिता का तात्विक आधार कहा जाता है। शायद इसी कारण उस युगद्रष्टा ने धर्म और राष्ट्र का सम्बन्ध इस प्रकार परिभाषित किया – **" राष्ट्र धर्म हीन एवं धर्मनिरपेक्ष उसी तरह नहीं हो सकता जिस प्रकार अग्नि तापहीन एवं तापनिरपेक्ष नहीं हो सकती । राष्ट्र तो धर्मराष्ट्र ही हो सकता है क्योंकि राष्ट्र और धर्मनिरपेक्षता दोनों एक – दूसरे के विरोधी हैं।"**

धर्म और संस्कृति किसी राष्ट्र के निवासियों की श्वाँस–प्रश्वाँस है। संस्कृति के बिना जन की कल्पना कबंध मात्र है। पण्डित जी ने कहा था कि – **"हमारी संस्कृति की पहली विशेषता यह है कि वह सम्पूर्ण समाज का, सम्पूर्ण सृष्टि का संकलित विचार करती है। हमारी संस्कृति एकात्मवादी है। यही कारण है कि यह चिर–पुरातन होते हुए भी नित्य – नूतन है एवं अध्यात्म प्रधान होने के बावजूद भौतिक जीवन की समस्याओं के प्रति भी उदासीन नहीं है।"**

राष्ट्र में लोकतन्त्र एवं राजनीतिक गति :- लोकतन्त्र की व्याख्या इस प्रकार की गई है कि लोकतंत्र वाद–विवाद के द्वारा चलने वाला राज्य है। **'वादे–वादे जायते तत्त्वबोधः'** हमारे यहाँ की पुरानी उक्ति है। भाव यह है कि हम दूसरे पक्ष की बात ध्यानपूर्वक सुनें तथा उसमें जो सत्यांश है, उसे ग्रहण करें । यही

लोकतन्त्र की भारतीय दृष्टि है।

पण्डित जी ने राष्ट्र की संघीय कल्पना को राजनीति की एक बड़ी भूल के रूप में स्वीकारा है। उनका कहना है कि राज्यों के अधिकार का प्रश्न राष्ट्रीयता के अभाव में भयंकर रूप धारण कर सकता है। उनकी यह बात कालान्तर में नितान्त सत्य सिद्ध हुई । दीनदयाल जी ने सर्वप्रथम राजनीतिक दलों के लिए एक संयुक्त आचार–संहिता की आवश्यकता की बात कही । राजनीतिक दलों को केवल स्वार्थों की पूर्ति हेतु एकत्रित जनसमूह नहीं बनना चाहिए अपितु अपनी कार्यशैली परिष्करण की आशा के साथ कुछ सिद्धान्तों (आदर्शों) की स्थापना करनी चाहिए ।

राष्ट्रोत्थान के पवित्र महामंत्र :-

(i) 'चरैवेति' का सिद्धान्त -

चरैवति पण्डित जी के सम्पूर्ण दर्शन का महामंत्र है। इस सिद्धान्तों के अनुसार– **"वादों के विवाद में फँसने की जरूरत नहीं है। अपने अन्तः कारण की प्रवृत्ति को ही प्रमाण मानकर चलिए। इससे तप की प्रेरणा मिनेगी और निष्काम कर्म करने की दिशा प्राप्त होगी ।"**

चरैवेति में जीवन का सम्पूर्ण रहस्य है, कर्म का सार है, गीता का रस है और लोकमत के आदर्श स्वरूप का बारीकी से अन्वेक्षण किया हुआ निष्कर्ष है।

(ii) 'एकात्ममानववाद' की कालजयी संकल्पना-

पण्डित जी ने कहा था कि – **"पूँजीवाद मानव शरीर को पुर्जे के समान मानता है और समाजवाद अति साम्य से ग्रस्त है अतः मुझे इन दोनों व्यवस्थाओं में भारत का भविष्य नजर ही नहीं आता । इसीलिए मैंने 'एकात्ममानववाद' की संकल्पना को प्रस्तुत किया है।"**

जब मनुष्य की आत्मा और व्यवस्था के मध्य मतैक्य उत्पन्न हो जाता है, तब 'एकात्ममानववाद' की अभिधारणा जन्म लेती है। यह उन सभी व्यवस्थाओं से कोसों दूर है जो मनुष्य को शरीर तक रोककर वैचारिक ताना– बाना बुनती है।

अतः राष्ट्र को परम वैभव की स्थित तक पहुँचाने के लिए 'एकात्म–मानववाद' का अध्ययन बहुत आवश्यक है।

समाहार :- अटक से कटक, कच्छ से कामरूप और काश्मीर से कन्याकुमारी तक भूमि के कण–कण को केवल पुण्य और पवित्र ही नहीं अपितु आत्मीय मानने की भावना 'अखण्ड भारत' के अन्दर अभिप्रेत है। यही भावना राष्ट्र का सच्चा स्वरूप निर्मित करती है।

दीनदयाल जी ने देशवासियों को प्रेरणा देते हुए कहा कि – **"श्रम से पराङ्मुख राजनीति, आर्थिक एवं सामाजिक संरक्षण समाप्त करने होंगे । हमारी संस्कृति एकात्मवादी है। जहाँ समानता एवं सुन्दरता है वही शिव एवं सुन्दर है । जो नीति एवं व्यवस्था हमें आलसी, कर्महीन एवं निद्रालु बनाए , उसे बदलना होगा।"** कलियुग का उद्घोष है –

कलिः शयानो भवति, संजिहानस्तु द्वापरः ।
उत्तिष्ठस्त्रेता प्रवति, कृते सम्त्पद्य ते चरन् ।।
चरैवेति – चरैवेति !

आजादी के दीवाने

दुर्गेश वाजपेयी
आचार्य

जब देश हमारा था गुलाम
शोषित जनता थी खास–आम।
अपने ही घर में बेगाने थे
मुश्किल दिन ऐसे भी आने थे।।

अंग्रेजों का हम पर शासन था
उनका ही ऊँचा आसन था।
भारतवासी होकर गुलाम
मन ही मन कहते राम–राम ।।

कुछ ऐसी गहमा–गहमी थी
कलियाँ भी सहमी–सहमी थीं।
घनघोर अँधेरा छाया था
डलहौजी भारत आया था।।

शोषण होता था जबरदस्त
भारत का मानो भाग्य अस्त।
होकर रहना उनका गुलाम
आजादी का लेना नहीं नाम ।।

अपमानों के पीते रहे घूँट
खाते अंग्रेजों के रहे बूट।
अन्याय निरन्तर बढ़ता था
भारत का जन–जन डरता था।।

पर कब तक चलता अन्याय चक्र
जागा भारत का दैव शक्र ।
जन्मा विद्रोही भाव प्रखर
भारत की जनता हुई मुखर ।।

भय की जंजीरें टूट गयीं
बेड़ियाँ चटाचट टूट गयीं।
फन्दे टूटे बंधे टूटे
मृगदल पर मानो हरि टूटे ।।

आजादी का गूँजा महामंत्र
अरिदल का निष्फल हुआ तंत्र ।
गाँधी सा नेता हुआ बड़ा
जिसके पीछे था देश खड़ा।।

भारत छोड़ो, भारत छोड़ो
अंग्रेजों भारत को छोड़ो ।
सिंहासन छोड़ो आते हैं
हम घर से तुम्हें भगाते हैं।।

घर–घर से निकले नौजवान
भारत की रखने शान–बान ।
प्राणों को लिये हथेली पर
चढ़ने को निकले सूली पर ।।

इन्कलाब के नारे थे
लोहू के बहते धारे थे।
आजादी का ऐसा था जुनून
अंग्रेजों का छिनता था सुकून ।।

माताएँ करतीं पुत्रदान
पुत्रों को करना प्राणदान।
वह रक्तदान की बेला थी
सर्वस्व त्याग की बेला थी।।

जलते जाते परवाने थे
वो आजादी के दीवाने थे।
अदभुत उनकी थी देशभक्ति
उद्दाम लिये थे प्राणशक्ति ।।

आजादी से ब्याह रचाने को
खुशहाली घर में लाने को ।
प्राणों का लेकर हार चले
घर–बार छोड़ परिवार चले ।।

दुनिया का तजकर मोह चले
वो छोड़ सकल संसार चले ।
उन्मत्त चले, अलमस्त चले
वो बाँध कफ़न मदमस्त चले।।

नेहरू मनमोहन अटल और
नेता बहुतेरे ठौर–ठौर।
उनके आगे सब बौने हैं
प्रभुता में औने पौने हैं।।

सुखदेव मगन था गया झूम
फाँसी का फन्दा लिया चूम।
आजाद हुए बलिदान हुए
उनके पूरे अरमान हुए ।।

आजाद हुए, आजाद हुए
खुशहाल हुए, आबाद हुए।
स्वाधीन हुए, गणतंत्र बना
भारत का अपना तंत्र बना ।।

सीमा की हलचल को देखो
आतंकवाद की जड़ देखो ।
आजादी की कीमत जानो
इसकी रक्षा का प्रण ठानो ।।

(पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता में तरुण वर्ग में प्रथम)

'राष्ट्र और राज्य'

विवेक शर्मा
एकादश 'ख'

राष्ट्र का स्वरूप :-

राष्ट्र का अस्तित्व केवल उनके जीवन का ध्येयभूत भाव है जब एक मनुष्य किसी समुदाय के समक्ष एक मिशन, विचार या आदर्श प्रस्तुत करता है और वह समुदाय **किसी भूमि के प्रति मातृभाव रखता हो तो इसे राष्ट्र कहते हैं।** अतः इनमें से किसी एक का अभाव रहा तो राष्ट्र का निर्माण असम्भव है।

"अब तक मैं जो समझ रहा था; वह भ्रम भी यूं दूर हो गया।
भारत को एक समझ रहा था, यह तो राज्यों में चूर हो गया।।"

राष्ट्र के विधायक - तत्त्व :-

राष्ट्र के निर्माण के लिए चार बातों की आवश्यकता होती हैं अर्थात् चार व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है, पहली **'भूमि' तथा जन** जिसे **'देश' कहते हैं,** दूसरी सावर्जनिक इच्छाशक्ति यानि **'सामूहिक जीवन का संकल्प'**। तीसरी एक व्यवस्था है जिसे **'संविधान'** कह सकते हैं और सबसे अच्छा शब्द जिसके लिए हमारे यहां प्रयुक्त हुआ है वह है **'धर्म'**। तथा चौथी व्यवस्था है– **जीवनादर्श।**

जिस प्रकार मनुष्य के निर्माण के लिए **शरीर, आत्मा, बुद्धि और मन** की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार राष्ट्र के निर्माण हेतु **संकल्प, धर्म और आदर्श** की आवश्यकता होती है और कहा भी गया है –

"माता भूमिः पुलोऽहं पृथिव्याः"

राष्ट्र की आत्मा - चिति :-

जिस प्रकार, मनुष्य में आत्मा निवास करती है ठीक उसी प्रकार राष्ट्र की भी आत्मा होती है, उसका एक शास्त्रीय नाम भी है जिसे **सिद्धांत और नीति में चिति कहा गया** । मग्डूगल के अनुसार, **वैसे तो समूह की कई मूल प्रकृति होती है और चिति भी एक मूल भूत है जो जन्मजात होती है परन्तु इसका निर्माण ऐतिहासिक कारणों से नहीं होता। चिति को लेकर तो प्रत्येक समाज पैदा होता है और उस समाज की संस्कृति की दिशा भी चिति निर्धारित करती है उसे संस्कृति में सम्मिलित कर लिया जाता है। चिति वह मापदण्ड है जिससे वस्तु मान्य अथवा अमान्य होती है। चिति का निर्माण तो श्रेष्ठ पुरूषों की आत्मा से होता है।"**

अर्थात् राष्ट्र की आत्मा इसी के आधार पर खड़ी होती है। जो उस राष्ट्र के व्यक्तियों से निर्मित होती है।

राष्ट्र की अस्मिता :-

"भारत कहने से जिस प्रकार राष्ट्रबोध होता है, वैसा केवल उत्तर प्रदेश और बंगाल जैसे प्रदेशों का नाम लेने से नहीं होता।"

अतः यह सुनिश्चित है कि राष्ट्र के लिए भू–भाग एक अनिवार्य एवं प्रथम आवश्यकता है क्योंकि

केवल भू भाग ही राष्ट्र नहीं बन पाता । राष्ट्र का अस्तित्व जिस तत्त्व से दिखाई पड़ता है उस अलौकिक तत्त्व की ज्योति तीव्रता से फैलती है। किसी मनुष्य के जीवन में जो स्थान **मनुष्य की अस्मिता का है** ठीक वही स्थान राष्ट्र की **अस्मिता का भी है।** यदि राष्ट्र की अस्मिता सुदृढ़ हुई तो **राष्ट्र मजबूत और शक्तिशाली होगा** । यदि उसकी अस्मिता ही **कमजोर या क्षीण** पड़ जाय तो निश्चय ही **राष्ट्र का नाश हो जाएगा।** अतः उसकी अस्मिता ही राष्ट्र को **मजबूत एवं सुदृढ़** करती हैं और इसमें ही **राष्ट्र का स्वरूप निवास करता है।**

राष्ट्र और राज्य में अंतर :-

राष्ट्र एक **स्थायी सत्य** है जिसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु राज्य का निर्माण है क्योंकि कहा भी गया है–

"राज्य सभ्य जीवन की प्रथम दशा हैं।" राज्य की आवश्यकताओं हेतु दो बातों का ध्यान रखना पड़ता है। पहली तब जब समाज **में कोई विकृति आ जाती है और उनकी समस्याओं का नियमन करने हेतु इसका निर्माण होता है। उदाहरणार्थ –**

''यदि किसी मोहल्ले में जब कोई झगड़ा न हो और न ही ऐसी कोई संभावना प्रकट हो तो पुलिस वहाँ नहीं आती और संभावना प्रकट हो तो पुलिस वहां जल्द आ जाती है।''

दूसरी बात वह है जब **सामूहिक जीवन में अव्यवस्था फैल जाय, दरिद्रता, निर्बलता और असहायता के प्रति कोई शक्तिशाली वर्ग लाभ न उठा सके** । समाज में व्याप्त विकृतियों को दूर करने हेतु विकृतियों को दण्ड देना अथवा शांति पहुँचाना ही राज्य का कार्य है।

"मनुष्य के बृहत्तर रूप को राज्य कहते हैं।" राष्ट्र में असमानता एवं दरिद्रता का हरण कर मनुष्यों को **सुखमय जीवन प्रदान करना ही राज्य का कार्य है।"**

एकात्मक राज्य का स्वरूप :–

"एकता की भावना ही राष्ट्र का आधार है।
एकता हममें रहे बस यही फरियाद है।।"

एकात्म राज्य का निर्माण किन्हीं स्वार्थो की पूर्ति हेतु नहीं होता और न ही राज्यों को समाप्त करने से है। प्राचीन काल में तो पंचायतें होती थी जिनके पास अनेक शक्तियाँ होती थी परन्तु इन्हें संविधान में नहीं रखा गया । इनका निर्माण तो एकात्म राज्य और सत्ता रूपी व्यवस्था के निर्माण से होता है। एकात्मक राज्य का निर्माण **संगठन के माध्यम से होता है क्योंकि संगठन शक्ति इतनी मजबूत होती है कि कोई भी कार्य असंभव नहीं रहता।** सामूहिक संगठन शक्ति में एकात्म बल का निर्माण होता है **जिससे समाज में व्याप्त असामान्जस्य एवं विषमता** दूर हो जाती है कहा भी गया है –

संगठन में शक्ति होती है और उस शक्ति के माध्यम से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं और एकात्म रूपी राज्य शक्तिशाली एवं संगठित हो जाती है।

संगठन का आधार - राष्ट्र :-

संगठन का अर्थ है – **संगठित होना तथा एकता को बढ़ावा देना।"** तथा जो मनुष्य संगठन से युक्त

नहीं है उन्हें असंगठित अवस्था कहते हैं जिसका लक्ष्य केवल **विनाश** होता है। क्योंकि **संघ अजरामर हैं;** संगठन में प्रत्येक मनुष्य एकता को प्रदर्शित करते हैं और भीड़ में मनुष्य एकता को प्रदर्शित करते हैं और भीड़ में मनुष्य लोगों से घिरा होने पर भी अपने आप को अकेला समझता है परंतु संगठन में ऐसा कुछ भी नही। संगठित होकर रहने राष्ट्र में एकता प्रबलता और अच्छे आदर्शों का निर्माण होता है। समाज स्थायी, कालजयी, व्यावहारिक एवं सक्षम होना चाहिए जो केवल संगठित होने से हो सकता है।

'' संगठित जीवन एक आदर्श रूपी जीवन एक आदर्श रूपी जीवन है जिससे राष्ट्र की अस्मिता एवं एकता प्रकट होती है।

कहा भी गया है –

"देश पर आँखें बिछाये यह सकल संसार है
प्रतिक्षण प्रतिबल, यह राष्ट्र का आकार है।।"

संगठन की परिभाषा :- संगठन और भीड़ में अन्तर :-

संगठन का भाव है– **" पारस्परिक सहकार्य का सूत्र स्थापित होना ।** " संगठन की स्वाभाविक आवश्यकता का कारण भी यही है कि कोई व्यक्ति अकेला कुछ नहीं कर सकता। **"भौतिक हो चाहे आत्मिक, जीवन का सुख प्राप्त करना है तो अनेक लोगों का सहकार्य जरूरी है। "संगठन में शक्ति है और शक्ति से विश्व में सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।"**

इस भौतिक संसार में कार्य की सफलता के पीछे संगठन का हाथ होता है । इसी में सुख, समृद्धि और प्रगति निहित होती है। **"संगठन की ही यह महिमा है कि इसके सहारे सुख में कई गुना वृद्धि हो जाती है और दुःख आ पड़ने पर दुःख का आघात बँट कर कम हो जाता है।"** परंतु कोई भीड़ नहीं होती। संगठन और भीड़ में बहुत अधिक अंतर होता है। भीड़ में, "प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको अकेला समझता, अनुभव करता है। अनेक व्यक्ति होते हुए भी प्रत्येक अलग–अलग हैं। सभी आपस में अजनबी हैं। परंतु **संगठन में ऐसा नहीं रहता** । अनेक होने के बाद भी संगठन में सबका मिलकर एक अस्तित्व है। **"लक्ष्य, दिशा और विचार भी एक हैं। इस कारण सबके हित समान हैं।** " प्रत्येक व्यक्ति की अपनी इकाई होते हुए भी वह अब सम्पूर्ण का अभिन्न घटक है इसलिए **"सफलता, आनन्द और उत्साह'** है।

संघ-भाव में ही अमरता है :-

"संघ बनाकर उठना ही प्रगति का रास्ता है।" संघ बनाकर न रहना अर्थात् **" व्यक्ति का पृथक्–पृथक् रहना, असंगठित अवस्था है।**" इसी का नाम–विनाश है, क्योंकि व्यक्ति विनाश को प्राप्त होता है और संघ अजरामर रह सकता है। मानवों का अमरत्व संभूति से ही मिल सकता है क्योंकि कहा भी गया है– **"संभूत्या अमृतं अश्नुते"।** संघ से अमरत्व प्राप्त करना है। इस दृष्टि से 'मैं' के वास्तविक रूप **'हम'** को ग्रहण करना चाहिए ।

राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाने की शर्ते :–

" न राज्यं न च राजाऽऽसीत् ।
न दण्ड्यो न च दण्डिकः ।।"

राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाने के लिए दो शर्ते हमारे सामने पूर्ण करने के लिए है, तब ही वह वैभव, राष्ट्र का सच्चा वैभव सिद्ध होगा । पहली बात यह है कि यह वैभव हमारे अपने राष्ट्रीय पुरूषार्थ से प्राप्त होना चाहिए । इसके लिए सम्पूर्ण राष्ट्र की संगठित कार्यशक्ति होना जरूरी है। यह शर्त पूरी होगी तो ही उस वैभव को हम भारत का सच्चा का सच्चा वैभव कह सकेंगे। साथ ही, दूसरी बात कही गई है कि संगठित कार्यशक्ति के द्वारा वैभव प्राप्त करने की यह सफलता धर्म का संगठन करना चाहिए । केवल संगठित शक्ति ही पर्याप्त नहीं है। चार चोर भी आपस में मजबूत संगठन बना सकते हैं, **" किन्तु वह संगठन न तो स्थायी होगा और न ही कल्याणकारी।"** इसलिए यह जरूरी है कि धर्म संरक्षण करते हुए **'संहता'** यानि हमारी संगठित कार्य शक्ति 'विजेता' यानि 'विजयशालिनी' हो । कहा भी गया है–

"राजनेता कर रहा, अब देश का व्यापार है।
राम कोई जन्म ले, यह समय की पुकार है।।"

चरैवेति – चरैवेति !

अंतरिक्ष की सैर

दीपक सचान
अष्टम 'क'

अंतरिक्ष यात्राओं के इतिहास में मंगल ग्रह की यात्रा सबसे रोचक हैं। साठ के दशक से ही मंगल की ओर **"ऑर्बिटर' लैंडर'** और **'रोवर्स'** यान भेजे गए ।

मंगह ग्रह का अध्ययन करने के लिए आज तक भेजे गए अंतरिक्ष यानो में से 2/3 अपने मिशन में फेल हो गये हैं और कुछ तो शुरूआत में ही धोखा खा गए । इसकी वजह है अंतर–ग्रह यात्रा से जुड़ी जटिलताएँ ।

आज भी मंगल ग्रह पर तीन यान काम कर रहे हैं। इनके नाम **'स्पिरिट रोवर' और 'फीनिक्स लैण्डर' है।** सैकड़ों साल से मनुष्य मंगल ग्रह को देख रहा है। जब दूरबीन से देखा तो मंगल की सतह का रंग बदलते हुए दिखाई दिया । बहरहाल वैज्ञानिक अनुसंधानों से पता लगा पाये हैं कि मंगल ग्रह पर जीवन की संभावनाये हैं परंतु कैसा जीवन यह खोज का विषय बनकर रह गया है।

मंगल ग्रह की ओर यान भेजने के साथ वैज्ञानिकों ने हिसाब लगाया कि पृथ्वी के **2.135 वर्ष** (780 दिन) में ऐसी स्थिति बनती है जब मंगल की ओर जाने वाला यान कम से कम ईधन खर्च करेगा। सन् 2007 के अक्टूबर के बाद दिसम्बर 2009 में ऐसी खिड़की खुलेगी । जिस तरह पृथ्वी से मंगल का सबसे छोटा रास्ता 780 दिन बाद खुलता है उसी तरह मंगल से पृथ्वी का रास्ता 780 दिन बाद खुलता है। इसे **'हॉमैन ट्रांसफर ऑर्बिट'** कहते हैं। इस **'ट्रैजेक्टरी'** की गणना की जा सकती हैं। यह एक लंबा रास्ता होगा पर मनुष्य को मंगल भेजने के लिए **शायद** यह बेहतर रास्ता होगा। इस पर वैज्ञानिक अनुसंधान के द्वारा पता लगने में अपने कार्य में लगे हैं।

प्रदूषण

अभिषेक शुक्ल
नवम 'ग'

चारों और धुआँ ही धुआँ
आगे खाई पीछे कुँआ !
चारों ओर प्रदूषण का राज है
धुँआ है राजा, ठप्प सारा काज है।।
वसुधा के सुन्दर पेड़ों को
मनुष्यों ने ही काटा है।
चन्द पैसों के खातिर
स्वयं को मारा चाँटा है।।
रेगिस्तान में उड़ती है हवा के साथ रेत ।
अब पछताए होता क्या जब चिड़ियां चुन गई खेत।।
यह सब किया धरा तो हमारा है,
तो क्यों नही करते हम कबूल ।
गलती हम नहीं करते
यह बात है फिजूल।
हमने ही जो यह आग लगायी है।
दुनिया तो सदा ही
तमाशा देखने आयी है।।
जरा सी बात पर हम
बनातें हैं राई का पहाड़
जो ये फैलाया प्रदूषण
उसके हम ही तो हैं जिम्मेदार
अगर नहीं होंगे पेड़ तो नहीं होगें फल फूल।
पेड़ों के इस अहसान को हम बिल्कुल गये भूल।

गीत अमन के गाएँ

शूरवीर सिंह
एकादश 'क'

अखबारों के रक्तिम पन्नों को देखूँ यदि
केवल अत्याचारों का ब्यौरा होता है।
इस समाज का नंगा सच क्या देखूँ मैं
आंखों पर संवेदनहीनता का कोहरा होता है।।

यदि सुनूँ भूख मैं मरते कृषकों की,
तो आँखों में लाली छा जाती है।
यदि याद करूँ हर दिन होते विस्फोटों की,
मरने वालों की आह अंगार जलाती है।।

क्यों धर्म – जाति की दुनिया में हम हैं उलझें,
क्यों स्वार्थ – सिद्धि ही हम सबका ध्येय बना है।
क्यों फूँकें हम राष्ट्र हितों को इस पावक में,
क्यों मेजों पर भारत का व्यापार हुआ है।।

आज हर जगह पापों का तूफान उठा है,
फैली हुई हर ओर भ्रष्टाचारी माया है।
आओ इस भ्रष्टाचारी दानव को दूर भगाएँ,
झगड़े छोड़ों आओ गीत अमन के गाएँ।।

अपने हित – स्वास्थ की न हम करें कामना,
आए जो संकट हम पर सब मिल करें सामना,
आओं मिल कर दें सभी के सुख का नारा,
करें सिंह का घोष जगे तब देश हमारा।।

अपने श्रम से विजय, औार ज्ञान के परचम,
हिमगिरि के ऊँचें शिखरों पर हम लहराएँ।
अपने गौरव को ऊँचे मेखों पर लिखकर,
उन्नति के स्वर्णिम शिखरों पर हम लहराएँ।।

एक साथ सब युवा–प्रौढ़ भी आगे आएँ,
आशा की कुछ नावें आओ फिर से तैराएँ।
हैं आज हमारे भारत को हमसे आशाएँ,
उन्नति के उस तट पर इसको हम पहुँचाएँ।।

इस समाज को शुद्ध हमें ही करना हैं।
अपने भारत का भाग्य हमें ही रचना है।
मन में दृढ़ विश्वास और आशाएँ लेकर
किरणों का निर्माण हमें ही करना है।।

संतोष

हर्षित शुक्ल
नवम 'क'

संतोष सभी धन से है बढ़कर,
तुम भी उसको प्राप्त करो ।
प्राप्त कर लिया है यदि इसको
सबसे आगे बढ़े चलो ।।

अद्‌भुत कर्म किये हैं जिसने
उसका जीवन सफल हुआ।
वही हुए स्मृतियों में जीवित
जो मुश्किल का हल हुआ ।

राणा का जीवन, जीवन था,
जिसने महलों को छोड़ दिया,
रोटियाँ घास की वन में खाकर
सुख–वैभव को छोड़ दिया ।

संतोष ही है परम धर्म,
यह जीवन का अद्‌भुत मर्म
संतोष ही परम धन है
जिसके पास नहीं वह अधूरा है।

बाल कविता

अनुज शुक्ल
सप्तम 'क'

कभी हँसना कभी रोना जीवन के दो पहलू हैं,
रोते–रोते हँसना आये, हँसते–हँसते रोना,
कभी हँसना, कभी रोना जीवन के दो पहलू हैं।

जीवन में तो दुःख आता है और फिर आता सुख है,
इन दोनों के मिल जाने से बना है जीवन अपना
कभी हँसना, कभी रोना जीवन के दो पहलू हैं।

सुख में आदमी तो हँसता है और दुःखो में रोता है,
दुःख को आदमी कोसता है और सुखों की इच्छा करता है,
कभी हँसना कभी रोना जीवन के दो पहलू हैं।

वीर सपूत "गाँधी जी"

पार्थेश्वर त्रिपाठी
सप्तम 'क'

भारत माँ की कोख से
वीर सपूत के जन्म लिया
धन्य हुई धरती भारत की
जैसे कोई अवतार हुआ ।।1।।

स्वतन्त्रता का स्वाभिमान था
देश में अलख जगाने का
मन में था संकल्प ले लिया
ब्रिटिश राज्य को मिटाने का ।।2।।

अहिंसा का खड्ग हाथ में
त्याग का आचरण करता था।
चरखे का था चक्र हाथ में
सत्य का ढोल बजाता था।।3।।

सत्य अहिंसा को अपनाकर
तन–मन में थी ज्योति जलायी
अंग्रेजों की शान मिटाकर
जन–मन में ये क्रान्ति उठायी।।4।।

खादी एक ही वस्त्र पहनकर
नित नूतन था त्याग किया
भारत माँ की रक्षा में
प्राणों का बलिदान दिया।।5।।

माँ और शिक्षक

प्रकाश कुमार
सप्तम 'ख'

चाहे पुत्र जैसा हो
माँ उसे है पालती
आगे के फलों की मन में
चिन्ता न डालती।

बेटे अपनी माँ के प्रति
कृतार्थ हमेशा रहते हैं।
अपनी माँ के लिए बेटे
पार्थ सदा रहते हैं।

माँ का दर्जा तो,
परमात्मा से भी ऊँचा है।
शास्त्रों में भी माँ का
स्थान सबसे ऊँचा है।

शिक्षकों का स्थान तो
माता से भी ऊँचा है।
उनका चिन्तन भी तो
होता सबसे ऊँचा है।

शिक्षकों की ही कृपा से
विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं।
और उस विद्या के सहारे
आगे की ओर बढ़ जाते हैं।

अँधियारी राहों पर
आगे बढ़ते जाते हैं।
ज्ञान दीप लेकर हाथों में
अपनी मंजिल पाते हैं।

बड़े आदमी की माँ

शशांक शुक्ल
नवम 'ग'

तेज चिलचिलाती धूप में एक माँ अपने बेटे का बैग थामे उसे स्कूल से लेकर चली आ रही है। मन में बड़े–बड़े अरमान लिये कि मेरा बेटा एक 'बड़ा आदमी' बनेगा । हाथ की छतरी ऐसे पकड़े है कि खुद की कुछ परवाह नहीं है किन्तु बेटे पर धूप का कतरा भी न पड़ने देती है।

तीस साल बीत चुके हैं। आज उसका बेटा "बड़ा अधिकारी "है वह सारी शानो–शौकत की मालिकिन है परन्तु वह माँ आज भी चिलचिलाती धूप में धूप में स्कूल का बैग थामें अपनें पोते को साथ लिये चली जा रही है, छाता भी वैसे ही पकड़े हैं कि पोते पर धूप का एक कतरा भी न पड़े यकीनन यह सोचकर कि उसका पोता भी "बड़ा अधिकारी" बनेगा ।.....

जागो जीवन के प्रभात

सचिन अग्निहोत्री
षष्ठ 'ख'

अब जागो जीवन के प्रभात
वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आँसू जो क्षोभ–भरे
उषा बटोरती अरुण गात
अब जागो जीवन के प्रभात

तम–नयनों की ताराएँ सब
मुँद रही किरण दल में हैं अब
चल रहा सुखद यह मलयवात
अब जागो जीवन के प्रभात

रजनी की लाज समेटो तो
कलरव से उठ कर भेंटो तो,
अरूणाचल में चल रही बात
अब जागो जीवन के प्रभात

महाद्वीपों की सबसे ऊँची चोटियाँ

अजीत विक्रम
षष्ठ 'क'

1. एशिया = माउंट एवरेस्ट 8848 मीटर
2. अफ्रीका = किलिमंजारो 5896 मीटर
3. उत्तरी अमेरिका = मैकिन्ली 6194 मीटर
4. दक्षिणी अमेरिका = अंकागुआ 6960 मीटर
5. यूरोप = माउंट एल्ब्रस 5896 मीटर
6. अण्टार्कटिका = विन्सन मैसिफ 4897 मीटर
7. आस्ट्रेलिया = कॉसीयस्को 2228 मीटर

मेघ

सचिन अग्निहोत्री
षष्ठ 'ख'

धिन धिन–धा धमक–धमक
मेघ बजे
दामिनि यह गयी दमक
मेघ बजे
दादुर का कंठ खुला
मेघ बजे
धरती का हृदय घुला
मेघ बजे
पंक बना हरिचन्दन
मेघ बजे
हल का है अभिनन्दन
मेघ बजे
धिन धिन–धा .....

माँ

हर्षित शुक्ल
नवम 'क'

माँ को प्रणाम बार–बार
माँ ने मुझ पर किया उपकार
माँ ने तो कष्ट उठाया,
वह मैं कभी नहीं चुका पाया ।।
बाँह पकड़कर चलना सिखाया;
ममता की दी शीतल छाया।
पढ़ा लिखाकर गुणवान बनाया,
जीवन पथ पर चलना सिखाया।।
बल बुद्धि विद्या देकर,
मुझको सबसे योग्य बनाया।
माँ का कोई जोड़ नहीं है।
उससे कोई होड़ नहीं है।

मानो या न मानो, सच है।

स्वतन्त्र कुमार पाण्डेय
नवम 'ख'

- किंग कोबरा अपने रहने के लिए घोसला बनाता है।
- मोतियों का द्वीप बहरीन कहलाता है।
- ब्रुतेई के सुल्तान का महल विश्व का सबसे बड़ा महल है।
- मक्खी की उड़ने की अधिकतम गति 818 मील प्रति घण्टा है।
- साँपों का देश ब्राजील है।
- समाज शास्त्र के जनक अगस्त कांट हैं।
- दुनिया का सबसे तेज उड़ने वाला पक्षी 'हकहक' है जो 190 मील प्रति घण्टा की रफ्तार से उड़ सकता है।
- ब्राजील के घने जंगलों में एक ऐसी कोयल पायी जाती जिसके शरीर से खुशबू निकलती है।
- अफ्रीका का 'सर्वली' कौआ रात्रि में उड़ान भरता है।
- दाब कम होने के कारण ऊँट रेगिस्तान में आसानी से चल सकता है।
- व्हाइट पेपर भारत का प्रसिद्ध सरकारी दस्तावेज है।
- एक मिनट में संसार में 6337 आदमी मर जाते हैं।
- एक मिनट में संसार में 8539 बच्चे जन्म लेते हैं।
- सत्रहवीं सदी के प्रारम्भ में भारत विश्व का सबसे धनी देश था।
- भिण्डी के अन्दर लिसलिसा पदार्थ 'म्यूसीलेज है। यह बहुत स्वस्थ्य वर्धक होता है, इसमें 6 प्रकार के अमीनो अम्ल हैं।
- एमार्फोकेलस टाईटेनम नामक फूल 67 सालों बाद खिला ।
- विश्व का सबसे छोटी अवधि का युद्ध 1896 ई० में इग्लैण्ड व जंजीबार के बीच हुआ । इसमें जंजीर ने मात्र 38 मिनट में आत्मसमर्पण कर दिया ।
- समुद्र के पानी में 3.5 % नमक होता है।
- सायरस व डॉगस्टार सबसे चमकीले तारे हैं।
- सबसे छोटा तारा न्यूट्रॉन है।
- पृथ्वी के गुरुत्व बल से दूर भागने के लिए 11.2 किमी. प्रति सकेण्ड का पलायन वेग जरूरी है।

❋ एनाबास नामक मछलियाँ पेड़ों पर चढ़ सकती है तथा पानी के बाहर जीवन व्यतीत कर सकती हैं।

❋ व्हेल का शरीर जन्म काल की तुलना में 30,000 गुना बड़ा हो जाता है।

❋ कागज की मुद्रा का प्रयोग सर्वप्रथम चीन में हुआ था।

❋ टारटूला नामक मकड़ी चूहों को आराम से खाती है।

❋ डायर फ्लाई नामक एक छोटे से कीट की रफ्तार लगभग 1820 मील प्रति घण्टा है लेकिन यह इतनी गति से उड़ने पर इसके ऊपर वायु का दाब अत्यधिक पड़ेगा जिससे यह नष्ट हो जायगा । इसलिए यह 500 मील / घण्टा की रफ्तार से उड़ता है।

❋ कैमल स्पाडर अपने जहर से आदमी के मार सकती है।

लघु कथा

शब्द वापस नहीं आ सकते

- नवीन प्रताप सिंह
नवम 'ख'

एक किसान ने अपने पड़ोसी की निंदा की । अपनी गलती का अहसास होने पर वह पादरी के पास क्षमा माँगने गया । पादरी ने उसे पंखों से भरा थैला दिया और कहा– "वह पंखों से भरा थैला शहर के बीचों बीच बिखेर दे । किसान ने वही किया, फिर पादरी ने कहा कि जाओ और सभी पंख थैले में भर लाओ। किसान ने ऐसा करने की बहुत कोशिश की, मगर सारे पंख हवा से इधर–उधर उड़ गए थे । जब वह खाली थैला लेकर लौटा, तो पादरी ने कहा कि यही बात हमारे जीवन पर भी लागू होती है। हम बात तो आसानी से कह देते हैं, लेकिन उसे वापस नहीं ले सकते इसलिए शब्दों के चुनाव में ज्यादा से ज्यादा सावधानी बरतनी चाहिए ।

शहीदों की याद

- पंकज वर्मा
सप्तम 'ख'

ऐ शहीद तेरी कुर्बानी दिल में बसायेंगे ।
अपने देश की हम लाज बचायेंगे ।
तेरी कुर्बानियों को हम न भुलायेंगे ।
भ्रष्टाचारी के मुख से नकाब हटायेंगे ।
तेरे कर्ज का हम मोल चुकायेंगे ।
ऐ शहीद तेरी कुर्बानी दिल में बसायेंगे ।
भारत माता तेरी आँखें झुकने न देंगे ।
तेरी प्रगति की रफ्तार को रुकने न देंगे ।
धरती की मिट्टी का हम मोल चुकायेंगे।
तेरी आन पर हम बलि चढ़ जायेंगे ।
ऐ शहीद तेरी कुर्बानी दिल में बसायेंगे ।
भारत वर्ष को हम स्वर्ग बनायेंगे ।
सत्य धर्म से इसकी हम नींव बनायेंगे।
खून पसीने से हम इसका भाग्य बनायेंगे।
भारत की शोभा को देख सब ललचायेंगे ।
इसे हम फिर से जगदगुरु बनायेंगे।
ऐ शहीद तेरी कुर्बानी दिल में बसायेंगे ।

गरीबी

- नवीन प्रताप सिंह
नवम 'ख'

एक दिन रास्ते में गरीबी मिली मुझे सपरिवार,
मैंने कहा गरीबी जी नमस्कार !
(फिर मैंने पूछा)
क्या तुम इस देश से कभी न जाओगी,
इसी भूमि पर अपना सिंहासन जमाओगी ।
(गरीबी ने उत्तर दिया) –
देखो बेटा ! मैंने अपने बच्चों से किया है वादा,
सारी जिंदगी उन्हीं के साथ बिताने का है इरादा ।
और मेरे बच्चे इसी देश में रहते हैं,
वे इसे अपनी मातृभूमि कहते हैं ।।
तों मैं कैसे इस देश से जाऊँगी,
यहीं तो अपना सिंहासन जमाऊँगी ।।
(मैंने कहा –)
तुम्हारे कारण ही हमारा देश विकासशील कहलाता है,
और तुम्हारी वजह से ये राष्ट्र पिछड़ता ही जाता है।।
(गरीबी ने उत्तर दिया –)
अरे मूर्ख । मेरी वजह से तुम्हारे देश की शान है,
मुकेश अंबानी की आन है।
अगर यहाँ सभी अमीर हो जाएँगे
तो लक्ष्मी मित्तल क्या भिखारी कहलाएँगे ?
मैंने देखे जब जवाबों के प्रहार,
गरीबी से कहा नमस्कार और मैं हो गया फरार ।

राहें नहीं थकती

शशांक शुक्ल
नवम 'ग'

बस पाँव ही थकते हैं
राहें कहाँ थकती हैं।
थकना पाँव की नियति है
और "खोजना" राहों की
उलझे धागों–सी
अनुसुलझी राहें
बोझिल कदमों की ओर
मंजिल तक कहाँ ले जाती है भला
भूल–भुलैया की भी
कोई मंजिल होती है।
जीवन की भूल–भूलैया में
भटका, उच्छ्वासों का पथिक
मंजिल कहाँ पाता है
वह तो लौट आता है।
उन्हीं रास्तों से
और लौटना
मंजिल कहाँ पाता है
वह तो लौट आता है
उन्हीं रास्तों से
और लौटना
मंजिल नहीं होता
बस पाँव ही थकते हैं
राहें कहाँ थकती हैं !

जंगली भैंसा

रवि प्रकाश पाण्डेय
अष्टम

महाबली यह जीव जंगली,
साहस हिम्मत वाला ।
नहीं किसी से डरता है यह,
वन भैंसा मतवाला ।
भारी भरकम देह गठीली,
रंग सलेटी काला ।
शानदार सींगो से सज्जित,
प्राणी बड़ा निराला।
सदा झुण्ड में रहने वाला,
गर्मी से घबराता।
लोट लगा कीचड़ पानी में,
अपनी जान बचाता ।
पूरा शकाहारी प्राणी
जो मिलता वो खाता ।
कभी–कभी खेतो में जाकर,
यह उत्पात मचाता ।
छोटे बच्चों वाली मादा,
खतरनाक हो जाती ।
निकट बाघ भी आ जाए तो,
उससे आ टकराती ।

रोचक तथ्य

- ज्ञानेन्द्र अवस्थी
नवम 'ख'

1. छीकतें समय व्यक्ति की दोनों आँखें बन्द रहती हैं।
2. आधे चाँद से पूरा चाँद नौ गुना ज्यादा चमकदार होता है।
3. घोंघा बिना घायल हुए ब्लेड की धार पर भी चल सकता है।
4. यदि कद्दू की जड़ को एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैलाया जाए तो वह लगभग 24 कि.मी तक फैल जायेगी ।
5. डायनामाइट बनाने में मूँगफली का प्रयोग होता है।
6. झींगा मछली के खून का रंग नीला होता है।
7. पुरुष के दाढ़ी के बाल उसी मोटाई के तांबे के तारों के बराबर मजबूत होते हैं।
8. लुई चौदहवें ने अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में केवल में केवल तीन बार स्नान किया और वह भी अपनी मर्जी से नहीं ।
9. विश्व की सबसे लम्बी बस अमेरिका में है जो 11 टन भार वाली, 76 फुट लम्बी है तथा जिसमें 121 यात्री बैठ सकते हैं।
10. सहारा रेगिस्तान के लोग बालू से नहाते हैं।

अद्भुत पेड़-पौधे

अभिषेक शुक्ल
नवम 'ग'

- अमेरिका में एक वृक्ष ऐसा पाया जाता है जिससे दूध निकलता है। यह दूध लोग खाने में प्रयोग करते हैं।
- असम के जंगल में ऐसी बेलें पायी जाती हैं जिनसे पानी निकलता है।
- वर्मा में एक पार्दो नामक पौधा है जिसमें फूल खिलने पर वर्षा अवश्य होती है ।
- जापान के कुछ वृक्ष सूर्यास्त के बाद धुआँ देते हैं।
- क्यूबा नामक वृक्ष भूकम्प आने से पहले अपना रंग बदल देता है।
- 'जल–जमनी' नामक पेड़ की पत्तियों का रस यदि पानी में डाल दिया जाए तो वह जम जाता है।
- अफ्रीका में एक वृक्ष पाया जाता है जिसमें पाउडर जैसी चीज डालने पर वह खिलखिला कर हँसता है।

शारदा - वन्दना

शूरवीर सिंह
एकादश 'क'

धवल पुष्प धारण कर–कर में,
करती जगत् प्रकाशित सारा ।
श्वेत हंस का आसन करके,
बहाती सतत ज्ञान की धारा ।।
श्वेत वसन को धारण करके,
कर में लिए स्फटिक माला ।
हम सब तेरा वन्दन करते
करते पूजन देवि तुम्हारा ।।
जग में ज्ञान–प्रकाश फैलाकर
हरती जगत का अज्ञान सारा।
पूज्य एवं प्रणम्य हो तुम,
है दण्डवत तुमको हमारा ।।

आतंकवाद

मोहित मिश्र
नवम 'ग'

विश्व की मानवता आज ही हो रही परेशान
आतंकवाद की समस्या का करना होगा निदान।
आतंकवाद का निरन्तर हो रहा है विकास,
जिससे होने वाले विनाश का सभी को रहा है आभास ।
आतंकवादी अपने क्षेत्र का कर रहे हैं विस्तार,
साथ–साथ भारत में भी फैल रहा है आतंक ।
आतंकवाद के कारण हो रहा है जन–धन का अपार क्षय
जिसके कारण आज हमारा भविष्य हो गया अन्धकार–मय
आज हमें आवश्यकता है अपार साहस की
आतंकवाद का नाश कर नींव डाले सुखमय जीवन की ।
आज यदि हमें अपने भविष्य को करना है सुखद
तो हमें अवश्य ही करना होगा आतंकवाद का नाश ।

पंचतंत्र का रहस्य

- श्रेयांश तिवारी
नवम 'क'

विष्णु शर्मा की कहानियाँ 'पंचतंत्र' आज से 1800 वर्ष पूर्व लिखी गयी थी। ये सभी जीव–जंतु, पशु–पक्षियों को पात्र बनाकर रची गयी हैं। इससे इनकी रोचकता एवं सार्वग्राह्यता बढ़ जाती है। इसके पीछे एक रहस्य है दक्षिण भारत में एक अमरशक्ति नामक एक राजा था। वह अपने पुत्रों के विषय में अत्यंत चिंतित था। उसके पुत्र बहुशक्ति उग्रशक्ति तथा अनंत शक्ति बहुत ही मूर्ख एवं उपद्रवी थे। एक दिन उसने अपने राजदरबार में सभी पदाधिकारियों के समक्ष अपनी चिंता रखी। विष्णु शर्मा भी वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने कहा'' इन्हें आप मेरे घर भेज दें । छह माह में मैं इन्हें निपुण बनाकर भेज दूँगा'' । राजा ने स्वीकार कर लिया । तीनों राजपुत्रों की मनोवृत्ति का अध्ययन कर विष्णु शर्मा ने सोचा कि इन्हें रोचक कथाओं द्वारा शिक्षण देना चाहिए खेल–खेल में यह सीख लेंगे। कोई गंभीर शिक्षण यह ग्रहण नहीं कर पायेंगे। उन्होंने पशु–पक्षी, पर्यावरण आदि को लक्ष्य लेकर रोचक कहानियों द्वारा नीति की शिक्षा देना आरंभ कर दिया। तीनों बड़ी उत्सुकतापूर्वक कहानियों को सुनते थे। इन कथाओं में राजनीति का पूरी तरह समावेश था। धीरे–धीरे इनकी बुद्धि का विकास होने लगा । वह छहमाह में राजव्यवहार समझ गए । ऐसे जनमा पंचतंत्र जो आज भी बच्चों में लोकप्रिय है।

कैसे अजूबे ये वृक्ष

- गोविन्द कुमार सिंह
अष्टम 'ख'

अर्जेन्टाइना के जंगलों में पाया जाने वाला ऐसा एक वृक्ष है जो बड़ा चालक है पहले तो यह अपनी बनी छाया से राहगीर को अपनी ओर आकर्षित करता है, जब राहगीर, घनी छाया देख इस पेड़ के नीचे सुस्ताने के लिए बैठता है तो मधुर लोरी सुनाना शुरू कर देता है जिससे थके हुए राहगीर को नींद आ जाती है। उसके बाद सोए हुए राहगीर के शरीर में अपनी नुकीली टहनियाँ चुभोकर उसका खून पी जाता है।

अफ्रीका में एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है जिसके फल को लोग शैतान का सींग के नाम से पुकारते हैं, इसके फल के पास किसी भी जीव जन्तु को जाने की हिम्मत नहीं पड़ती। इसके फल के ऊपरी भाग में सींगनुमा नुकीली रचना होती है। जब कोई प्राणी इसके पास से गुजरता है तो सींग उसके शरीर में घुस जाते हैं जिसके दर्द के कारण आदमी भागने लगता है और घिसट–घिसट कर इसे निकालने की कोशिश करता है। उछल–कूद से यह फल फट जाता है और इसके बीच जमीन पर बिखर जाते हैं जिससे इसके वंश की वृद्धि होती है।

धन की सीमा

- गौरव शुक्ला
सप्तम 'क'

❋ धन से भोजन मिलता है लेकिन भूख नहीं ।
❋ धन से दवा मिलती है किन्तु स्वास्थ्य नहीं।
❋ धन से पुस्तक मिलती है किन्तु ज्ञान नहीं ।
❋ धन से साथी मिलते हैं किन्तु सच्चे मित्र नहीं ।
❋ धन से एकान्त मिल सकता है किन्तु शान्ति नहीं ।
❋ धन से बिस्तर प्राप्त कर सकते हो किन्तु नींद नहीं।
❋ धन से सुख मिल सकता है, किन्तु आनन्द नहीं ।
❋ धन से आभूषण मिलते हैं, किन्तु रूप नहीं ।

(अतः हमें धनवान होने के साथ–साथ चरित्रवान होना चाहिए।)

बाल - कविता

-अनुज शुक्ल
सप्तम 'क'

पूँछ उठाये ओढ़े शॉल
बिल्ली गई सिनेमा हाल,
सुन्दर सी टाकीज बनी
जाकर बैठी बालकनी
तभी अँधेरा घिर आया
पर्दे पर एक चूहा आया,
मोटा चूहा दिल्ली का
मन ललचाया, बिल्ली का
चूहे को तो पकड़ न पाई
ऊपर से फिर मार भी खाई ।

लाचारी

मु० अफजल अहमद
नवम 'ख'

आदमी हर तरह से लाचार है; प्यारे भाई ।
अब तो मित्र ही बना शत्रु है प्यारे भाई ।।
गुडंई में बड़ी रफ्तार है; प्यारे भाई ।।
सौजन्य होता गिरफ्तार है; प्यारे भाई ।।
भ्रष्ट आचार में ग्रस्त संसार है प्यारे भाई ।
नाचना, कूदना, खेलना, दूसरों पर हँसना;
क्योंकि आज तो विदूषक ही कलाकार है प्यारे भाई
जिंदगी किस तरह दगा देती रही ।
अपनी साँस खुद को छलती रही ।
अपमान के घूँट पियें किंतु जुबाँ न खुले
खुदकुशी भी किस तरह खुद्दार है; प्यारे भाई ।।
आतंकवादियों को रो हम कैसे सकें।
क्योंकि आज तो देश में हजारों गद्दार हैं; प्यारे भाई ।।

मत पढ़ो

- गौरव शुक्ल
सप्तम 'क'

लोगों को जो काम करने के लिए मना किया जाता है लोग वही काम करते हैं। एक बार मैंने देखा कि एक गेट पर लिखा था **NO ENTRY** एक व्यक्ति ने देखा और वह थोड़ी देर रूका लेकिन उससे नहीं रहा गया और वह अन्दर चला गया। एक बच्चे से मना किया गया कि वह नाले के पास जाकर न खेले मगर वह वहीं जाकर खेलने लगा। अब अपने आप को ही लीजिए। ऊपर इतने बड़े शब्दों में लिखा है ''मत–पढ़ो'' फिर भी आप इसे पढ़ने लगे।

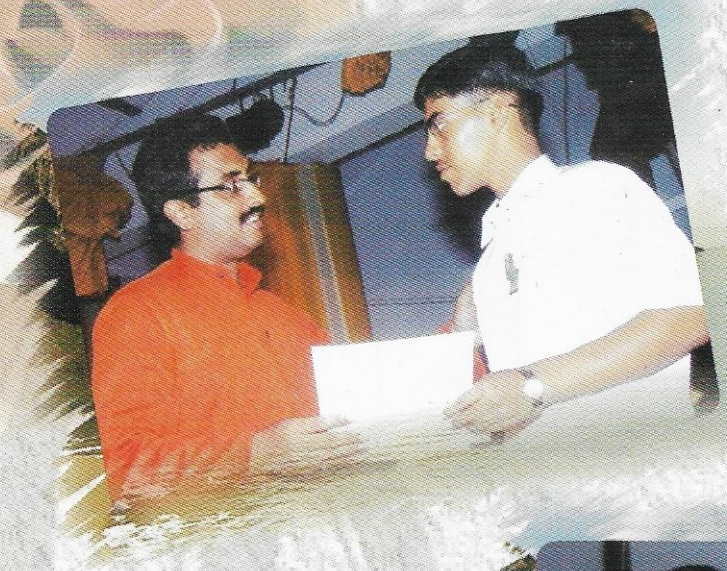

चि० सुयश मधुर को पुरस्कृत करते
हुए मा० राम माधव जी

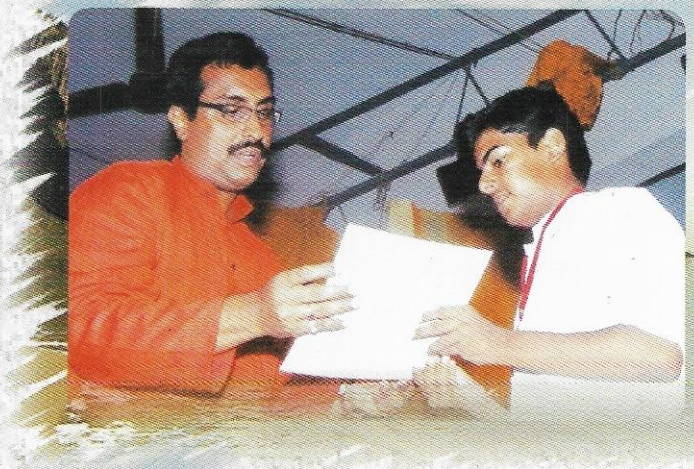

चि० अभिनव को पुरस्कृत करते
हुए मा० राम माधव जी

धन्यवाद ज्ञापन :
मा० सचिव जी द्वारा

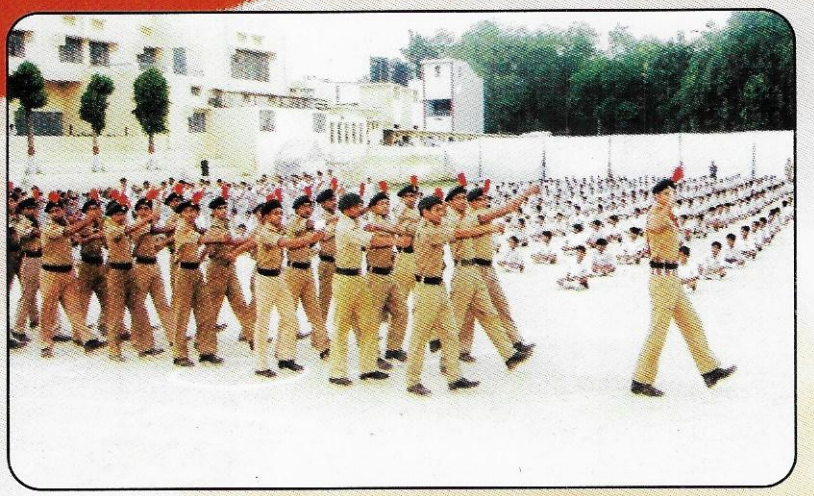

एन० सी० सी० -
पथ संचलन

'घोष-दल' एन० सी० सी० दल
का अनुगमन करते हुए

योग-आसन

मीनार निर्माण तथा युद्ध कौशल

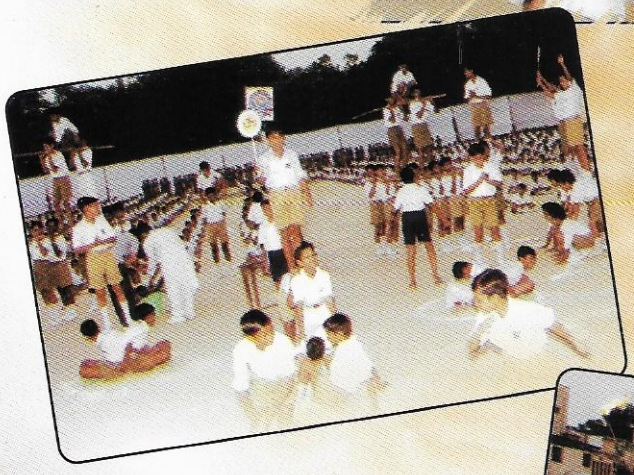

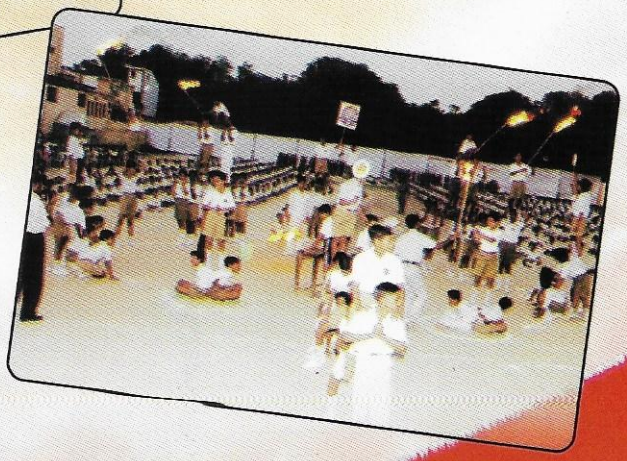

रंगमंचीय कार्यक्रम

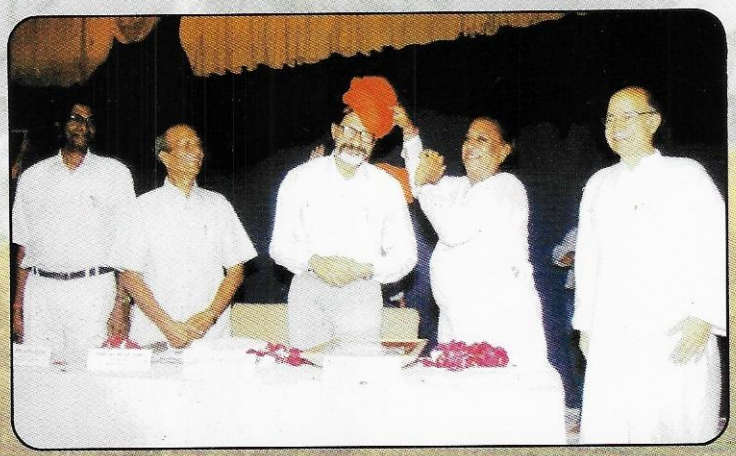

रंगमंचीय कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि एच० बी० टी० आई के निर्देशक डॉ० एस० के० अवस्थी का सम्मान करते हुए श्री वंशीलाल डोगरा

माँ वैष्णव देवी के भक्ति गीत पर नृत्य करते हुए नृत्य निर्देशक श्री वंशीलाल डोगरा

भक्ति गीत पर नृत्य करती हुई गायिका श्रीमती पूर्णिमा शर्मा तथा वात्सल्य मंदिर की बालिकाएँ

पर्यावरण प्रदूषण

- दुर्गेश पाल
नवम 'ख'

कानपुर है दे रहा सकल विश्व को मात।
विश्व प्रदूषण में मिली इसको रैंकिंग सात।।

इसको रैंकिंग सात बजबजाती हर नाली,
बने पार्क कूड़ाघर दूषित हवा निराली,
नल–जल बदबूदार धुआँ वाहन का फुर–फुर
नीच–कीच का वास यही है यार कानपुर।।

पर्यावरण की बात बताएँ क्या दोस्तों।
हम खा रहे हैं मात सुनाएँ क्या दोस्तों।।
वाहन का धुँआ श्वाँस कास का जनक बना
शासन की करामात बताएँ क्या दोस्तों।।

हरियाली पार्कों की सड़े कूड़े से पट गई,
हर स्वस्थ जिंदगी में है टी.बी. लिपट गई,
रोगों की है जमात बताएँ क्या दोस्तों।।

माँ

माँ की भाषा अगर कोई पूछे तो,
प्यार से बोलता हूँ।
माँ के हृदय की विशालता कोई पूछे तो,
सागर दिखलाता हूँ।
माँ की गोद कोई पूछे तो,
स्वर्ग बतलाता हूँ।
माँ की सहनशीलता को,
धरती से दिखलाता हूँ।
माँ का धैर्य कोई पूछे तो,
बयाँ नहीं कर पाता हूँ।
माँ का त्याग कोई पूछे तो,
चट्टान से बतलाता हूँ।
माँ का चेहरा कोई पूछे तो,
भगवान से दिखलाता हूँ।

कहाँ आ गये हम

शान्तनु राज
सप्तम 'ख'

सत्य को छोड़ कहाँ पर आ गये हम ।
सुरधाम को पाने वाले, भव सिन्धु में समा गये हम ।।
और आज,
दूर से रोने की आवाज, आज हम सुनते नहीं ।
स्वार्थ का निर्यात, आयात पुरूषार्थ का करते नहीं ।
गिरते हुए को सहारा, भूलकर देते नहीं ।
रोशनी करना तो दूर गर्त हम भरते नहीं ।।

ओंकार का नाद वेदों, की वाणी दब रही है।
घर–घर में फिल्मी गानों का शोर सुनाई देता है।
और जब ढूँढ़ा रामायण बीजक और गीता को,
तो यह म्युजियम के शीशे में ढकी दिख रही है।।

भविष्य के लिए वर्तमान सुधारना होगा
असहाय, दुःख दायी विष का प्याला, पीना होगा
पश्चिम से कैसी भी हवा चलेगी लेकिन ।
अपनी संस्कृति का दीप बुझने न देना होगा।

रोचक जानकारियाँ

1. एक सफेद साइबेरियन सारस की उम्र 82 वर्ष रिकार्ड की गई है
2. जेटं पेग्विन सबसे तेज तैरने वाला पक्षी है। यह पानी में लगभग 27 किलोमीटर प्रतिघंटे की गति से तैर सकता है।
3. मर्मर नामक परिंदा एक मिनट में 4000 बार पंख फड़फड़ाता है।
4. समुद्री पक्षी एल्ट्स अपने पंख बिना फड़फड़ाए 15 मील तक उड़ सकता है।
5. रॉम हॉल नामक जानवर के सींग प्रतिवर्ष गिर कर उग जाते हैं।

मेरा विद्यालय

- अनुज शुक्ला
षष्ठ 'ख'

पंडित दीनदयाल विद्यालय हमारा ।
सब विद्यालयों से है न्यारा ।।
जन – जन की आँखों का तारा ।
इसे जानता जनपद सारा ।।
बड़े – कड़े आचार्य यहाँ हैं ।
प्रगतिशील सब कार्य यहाँ हैं।।
ऊँच–नीच का भेद नहीं है।।
बैर–भावना शेष नहीं है।
छल – प्रपंच तो लेश नहीं है।
यहाँ किसी से द्वेष नहीं हैं ।।
कैसे करूँ मैं अंतिम बड़ाई ।
यहाँ न होती कभी लड़ाई ।।
है नियमों की बड़ी लड़ाई ।
छात्र और स्टाफ शिष्ट हैं।।
करते आचरण नित अभीष्ट हैं।
तन–मन से कर्तव्य निष्ठ हैं।।
विद्या सबकी परम इष्ट है।।

बूझो तो जानें

- शुभम वर्मा
नवम 'ख'

1. छूने में शीतल, सूरत में सुहानी । रात में होती और दिन में पानी ।।
2. एक चीज ऐसी, जो कर दे सिर में दर्द । बड़ी मुश्किलों के बाद, मिले इसका उत्तर ।।
3. बिना बारिश दिखे, ऐसा कभी हुआ नहीं । रंग इसके अनेक हैं, पर हमने कभी छुआ नहीं।।
4. आठ कलाएँ उसकी होती, शीतल–चंचल रंग धवल । रात्रिका राजा है वो, चाहे शरद चाहे गरम ।।
5. छोटा सा धागा, सारी बात ले भागा ।।

उत्तर – 1. ओस 2. पहेली 3. इंद्रधनुष 4. चंद्रमा 5. टेलीफोन

हँसगुल्ले

- आदित्य विक्रम
नवम 'ख'

(चिंटू बाग में आम चोरी कर रहा था)
माली :– अभी तुम्हारे घर जाकर पापा से शिकायत कहता हूँ।
चिंटू :– अंकल, पापा घर पर नहीं मिलेंगे, क्योंकि वह भी बगल के पेड़ पर आम तोड़ रहें है।

(अगर सपने में बहुत सारे पैसे मिल जायें, तो सबसे पहले क्या करेंगे ? इस टॉपिक में तीन दोस्त आपस में बात कर रहे थे।)
पहला :– मैं तो गोवा जाऊँगा और खूब मजे करूँगा ।
दूसरा :– मैं तो तब तक सोता रहूँगा, जब तक करोड़पति न बन जाऊँ।

टीचर :– एक दिन हर एक व्यक्ति को मरना है।
(रिंकू को कुछ सोचते देखकर)
टीचर :– क्या हुआ रिंकू ।
रिंकू :– सर मैं सोच रहा था, जो सबसे बाद में मरेगा उसे शमशान कौन ले जायेगा।

जेलर (कैदी से) :– तुम जेल में कैसे आये ?
कैदी :– एक छोटी सी रस्सी चुराने के जुर्म में ।
जेलर :– ऐसा कैसे हो सकता है।
कैदी :– ऐसा ही है, बस उसके दूसरे सिरे पर भैंस बंधी हुई थी।

अंकल (संजय से) :– बेटा चाय पाइप से क्यों पी रहें हो ?
संचय :– क्योंकि डॉक्टर ने मुझे चाय से दूर रहने के लिये कहा है।

(प्लेटफार्म पर एक यात्री दूसरे यात्री के कंधे पर हाथ रखते हुये) : भाईसाहब, यह कौन सा रेलवे स्टेशन है ?
दूसरा यात्री :– क्षमा करें, यह स्टेशन नहीं, मेरा कंधा है।

(एक टैक्सी ड्राइवर को अंग्रेजी बोलने का बहुत शौक था, एक दिन उसकी टैक्सी रास्ते तें ही रूक गयी)
टूरिस्ट : व्हॉट हैपेन ?
ड्राइवर : पता नहीं कैसे ? गाड़ी फसिंग, न हिलिंग, न डुलिंग, ओनली पों–पों करिंग।

मनोविनोद

- नवीन प्रताप सिंह
नवम 'ख'

रमन को तेज गाड़ी चलाने के जुर्म में कोर्ट में पेश किया गया।
जजः ''बोलो तुम कौन सा दंड लेना चाहोगे'' ?
30 दिन की जेल या 3000 रुपये ?
रमन 'मैं तो 3000 रुपये लेना पसंद करूँगा।'

★ ★ ★

सोनू अपने फ्रेंड मोनू से : ''इस बार तुम फेल कैसे हो गए '' ?
मोनू '' अरे यार ! क्या बताऊँ, इस बार मेरे बगल में जो लड़का बैठा था उसे कुछ आता ही नहीं था।''

★ ★ ★

टीचर रिंकी से : ''वर्ल्ड के मैप में नार्थ अमेरिका पढ़कर बताओ ।''
रिंकी वर्ड मैप पर अमेरिका दिखाते हुए : 'मैम यहाँ पर है।
टीचर : 'बिल्कुल ठीक, अब बच्चों यह बताओ कि अमेरिका की खोज किसने की' ? क्लास के बच्चे जोर से चिल्ला कर बोले ''रिंकी ने'' ।

★ ★ ★

चिंटू ने नीटू को अपने घर पर डिनर के लिए बुलाया ।
नीटू रात को चिंटू के घर पहुँचा तो दरवाजे पर ताला लगा था और एक चिट पर लिखा था मैंने तुम्हें बेवकूफ बना दिया । नीटू ने नीचे लिख दिया तू मुझे क्या बेवकूफ बनाएगा मैं तो आया ही नहीं ।

★ ★ ★

राजा जॉब के लिए इंटरव्यू देने देने गया। वहाँ पर बॉस ने पूछा : '' आपकी क्वालीफिकेशन क्या है ? ''
राजाः ''सर मैने पी.एच.डी. किया है।'' बॉस : ''पी.एच.डी. से क्या मतलब'' ? राजा मुस्काराते हुए बोला-
Passed High school with Difficulties.

★ ★ ★

थोड़ा सा हँस लो

- शुभम वर्मा
नवम 'ख'

राजू :–	शर्ट का कपड़ा दिखाओ ।
दुकानदार :–	प्लेन में दिखादूँ ।
राजू :–	प्लेन में जाने की क्या जरूरत है, यहीं यही पर दिखा दो।

★ ★

टीचर :–	पानी में रहने वाले पाँच जानवरों के नाम बताओ ?
स्टूडेंट :–	फिश
टीचर :–	चार और भी तो बताओ ?
स्टूडेंट :–	फिश का बेटा, फिश की बेटी, फिश के पापा, फिश की मम्मी

★ ★ ★

बॉस – धीरज ! एक अच्छा मिरर लेकर आओ जिसमें मुझे मेरा फेस दिखाई दे ।

धीरज – बॉस ! मैं कई दुकानों में गया, पर सभी में मेरा फेस दिखा, आपका नहीं ।

☆ ☆ ☆

टीचर – बच्चों हमारे पूर्वज बन्दर थे ।

स्टूडेंट – सर माफ करिए, आपके पूर्वज बंदर होंगे हमारे तो वाजपेयी थे।

☆ ☆ ☆

एक टीचर (छात्र से) – आज स्कूल देर से आने का तुमने क्या बहाना ढूँढ़ा है ?

छात्र – आज मैं इतनी तेजी से दौड़कर आया कि मुझे बहाना सोचने का मौका ही नहीं मिला ।

☆ ☆ ☆

जरा हँस लो

- ज्ञानेन्द्र अवस्थी
नवम 'ख'

मनु – "मेरे पापा बहुत डरपोक हैं।"

नीशू – "वह कैसे ?"

मनु – "सड़क पार करते समय वह मेरी उँगली पकड़ लेते हैं।"

☆ ☆ ☆

टीचर (सोनू से)– " कुछ शर्म करो मार खा कर हँस रहे हो ।"

सोनू – "आप ही ने तो कहा था कि हर मुसीबत का सामना हँस कर करना चाहिए ।"

☆ ☆ ☆

पिता सोते हुए खर्राटे ले रहा था । पास ही बच्चा खिलौनों से खेल रहा था । पिता ने करवट बदली तो खर्राटे बंद हो गए । बच्चा भागा – भागा किचन में गया और अपनी माँ से बोला, "माँ जल्दी आओ पिता जी का इंजन खराब हो गया है।"

☆ ☆ ☆

सोनू – मेरे चाचा पहले नीचे वाले विभाग में काम करते थे, अब वे ऊपर वाले विभाग में काम करते हैं।"

मोनू – "अरे वाह । तुम्हारे चाचा का तो प्रमोशन हो गया। अच्छा वे पहले क्या करते थे ?

सोनू – "पहले वह बूट पॉलिश करते थे, अब तेल मालिश करते हैं।

☆ ☆ ☆

सेठ (नौकर से) – "जरा यह बिजली का तार पकड़ाना ।"

नौकर (झटका लगने के बाद) – "मालिक इसमें तो करंट है।"

सेठ – "ठीक है। मैं यही मालूम करना चाहता था।

☆ ☆ ☆

हाथी – "अरे चींटी बहन कहाँ जा रही हो ?"

चींटी – "फ्रॉक सिलवाने जा रही हूँ ।

हांथी – "ठीक है। अगर कपड़ा बचे तो मेरे लिए एक पाजामा भी सिलावाती आना ।"

हँसने की बात

- मोहित यादव
नवम 'ग'

डाक्टर मरीज से – "अब दो घंटे के अंदर तुम्हारी मृत्यु निश्चित है। मृत्यु से पूर्व किसी को देखना चाहते हो ?"

मरीज – हाँ, अच्छे डॉक्टर को ....."

अमेरिकी – हमारे अंदर इतनी हैसियत है कि हम सोने का हवाई जहाज बनवा सकते हैं।"
रूसी – हम उस पर हीरे जड़वा सकते हैं।
भारतीय – "और हम उस पर मेड इन इण्डिया लिखवा सकते हैं।

नेता – "डाक्टर साहब, भाषण देते वक्त मेरे हाथ काँपते हैं।"
डाक्टर – "घबराने की कोई बात नहीं है। झूठ बोलते वक्त ऐसा ही होता है।

ओम – घर आते ही मुर्गा बन गया ।
माँ – अरे–अरे, तुम मुर्गा क्यों बन गए ?
ओम – आप ही तो कहती हैं कि जो काम स्कूल में किया हो, उसे घर में आकर दोहराया करो।

अध्यापक – "काल कितने प्रकार के होते हैं ?
मोहन – लोकल काल, एसटीडी काल, आई एस डी काल ।

पहला दूधिया : एक बार मेरे गाँव में इतनी ठण्ड पड़ी कि लोग अपनी गाय–भैंसों को गर्म कपड़े पहनाने लगे।
दूसरा दूधिया : मेरे गाँव में तो ठण्ड के कारण गाय–भैंसो ने दूध ही देना बन्द कर दिया।
तीसरा दूधिया : छोड़ो न ! मेरे गाँव में इतनी ठण्ड पड़ी कि गाय–भैंसों ने दूध की जगह आइसक्रीम देना शुरू कर दिया।

दो मूर्ख एक पेड़ की डाल से लटके थे एक मूर्ख नीचे गिर गया ।
पहला बोला – क्यों थक गये क्या ?
दूसरा बोला – नहीं यार थका नहीं पक गया हूँ।

मम्मी : बबलू, तुम आज स्कूल से जल्दी क्यों आ गये ।
बबलू : मम्मी मेरा गबरु से झगड़ा हो गया और सर ने मुझे क्लास ने निकाल दिया।
मम्मी : लेकिन तूने गबरू के साथ झगड़ा क्यों किया ?
बबलू : मुझे आज जल्दी घर आना था इसलिए ।

एक कंजूस (दूकानदार से) – भाई साहब / मुझे ऐसा साबुन दीजिए जो बहुत दिनों बाद घिसे और नहाने के बाद मेरे चहरे पर लाली ला दे और हाँ महँगा भी न हो ।
दुकानदारः– (नौकर से) बगल वाली सड़क से पत्थर का टुकड़ा लाकर साहब को दे दो ।

देखो हँस न देना

- *निलय सिंह*
नवम 'ख'

* हजार पन्नों की किताब कितने दिनों में पढ़ी जा सकती है ?
लेखक – "पूरा एक साल लगेगा ।"
डॉक्टर – "सात – आठ महीने।"
वकील – "चार महीने"
छात्र – "पहले ये बताओ परीक्षाएँ कब से शुरू हैं ?

* गब्बर –"सारे मच्छरों को मार दो ।"
साँभा –"ठीक है सरदार।"
(अगले दिन)
गब्बर –"अरे ये मच्छर तो फिर से भिनभिना रहे हैं,
कल मारे नहीं थे क्या ?
साँभा – "सारे मार दिये थे सरदार, ये उन मच्छरों की विधवायें है, जो विलाप कर रहीं हैं"

* आपके चेहरे पर उदासी और आँखों में नमी है, टाटा नमक इस्तेमाल करिये, आप में आयोडीन कमी है।

* एक आप हो कि शरमते बहुत हो, एक आप हो कि इतराते बहुत हो,
दिल तो करता है आपको डिनर पर ले जायें, कम्बख्त आप हो कि खाते बहुत हो ।

* वो मुड़–मुड़ कर हमें देख रहे थे और हम उन्हें,
क्योंकि परीक्षा में न उन्हें कुछ आता था न हमें ।

* सागर भर किताबें हैं, नदी भर पढ़ पाते हैं।
बाल्टी भर याद हो पाता है मग भर लिख पाते हैं।
चुल्लू भर नंबर आते हैं। चलो डूब मर जाते हैं।

* गंजों के फैशन शो में अनुपम खेर ने मारी बाजी,
मगर इनाम लेने को वे न हुए राजी,
उन्होंने गुस्से में कहा मेरे साथ ये गंदा खेल है।
क्योंकि इनाम में कंघा और तेल है।

* भोला :– "डॉक्टर साहब कान में ट्रेन चलने की आवाज –सी आती रहती है।
डॉक्टर –"मैने चेक कर लिया है। मुझे तो ट्रेन कोई आवाज नहीं सुनाई दी।"
भोला– "अभी ट्रेन शायद किसी स्टेशन पर रुकी होगी ।"

कुछ रोचक तथ्य

- अंचल गुप्त
नवम 'ग'

1. अमेरिका का पहला स्टॉक एक्सचेंज सन् 1971 में फिलडेलफिया में स्थापित हुआ था।
2. यदि आप किसी गोल्ड फिश को अंधेरे कमरे में रखेंगे तो उसका रंग बदलकर सफेद पड़ जाएगा
3. जब आप अपना जन्मदिन मना रहे होते हैं उस दिन दुनिया भर में कम से कम 90 लाख अन्य लोग भी अपना जन्म दिन मना रहे होते हैं।
4. क्या आप जानते हैं कि ब्रिटेन में 70 प्रतिशत माताएँ कामकाजी हैं।
5. उत्तर अफ्रीका का 'सहारा' दुनिया का सबसे गर्म रेगिस्तान हैं, जिसका क्षेत्रफल 90 लाख वर्ग किमी है। (लगभग)
6. यह इतना बडा रेगिस्तान है जितने में पूरा अमेरिका बस सकता है अर्थात् जितने क्षेत्र में पूरा अमेरिका बसा हुआ है वह क्षेत्र इस रेगिस्तान के क्षेत्रफल के बराबर है।
7. पृथ्वी पर प्राणियों की लगभग 12 लाख जातियाँ पायी जाती है।
8. क्या आप जानते हैं कि सीमेण्ट का निर्माण सन् 1824 में ब्रिटेन के इंजीनियर जोसेफ ने किया था ।

क्रिकेट जगत

- ओम जी द्विवेदी
अष्टम 'क'

★सर्वाधिक वर्ल्डकप जीतने वाली टीम – **आस्ट्रेलिया**

★सर्वाधिक वनडे शतक व टेस्ट शतक – **सचिन तेंदुलकर**

★सबसे तेज वनडे शतक – **शाहिद अफरीदी**

★सबसे तेज गेंदबाज – **शोएब अख्तर**

★सबसे तेज विकेट लेने वाला गेंद बाज – **शेनवार्न**

★एक टेस्ट में सर्वाधिक रन – **ब्रायन लारा (400)**

★सर्वाधिक विकेट – **मुथैया मुरलीधरन**

★वर्ल्ड कम में सर्वाधिक रन **सचिन तेंदुलकर**

★वर्ल्ड कप में सबसे बड़ा स्कोर – **भारत (413 रन)**

★वनडे में सबसे बड़ा स्कोर – **श्री लंका (443 रन 4 विकेट पर)**

★टेस्ट में सबसे बड़ा स्कोर – **986**

★भारत का पहला खिलाड़ी जिसने 20–20 वर्ल्ड कप में 1 ओवर में 6 छक्के व 12 गेंदों में अपना अर्धशतक जड़ा –**युवराज सिंह**

★सबसे कम गेंदों में तिहरा शतक जड़ने वाला खिलाड़ी – **वीरेन्द्र सहवाग (भारत)**

★सबसे ज्यादा तिहरा शतक जड़ने वाला भारतीय – **वीरेन्द्र सहवाग ।**

चर्चित पुस्तकें एवं लेखक

चर्चित पुस्तकें	लेखक
द इन्साइडर	पी०वी० नरसिंह राव
इंडिया गेट	लेसी फासवर्थ
इंडिया कंट्रोवर्सीज	अरूण शौरी
इन ए ग्रीन नाइट / ओमेरास	डेरेक बालकट
इनसेपेबल ह्यूमैनिटी	श्री दत्त रामफल
द गाड ऑफ स्मालथिंग्स	अरुंधती राय
सुभाष चंद्रबोस : कुछ अधखुले पन्ने	राजशेखर व्यास
राजनीति की रपटीली राहें	अटल बिहारी बाजपेई
मिशन टु इंडिया	स्टेनले कल्पागे
इंडिया द सीज विदीन	एम.जे. अकबर
कैन पाकिस्तान सरवाइव	तारिक अली
एंड ऑफ एम्पायर	ब्रिंया लैपिंग्स
नेताजी एंड गाँधी	शशि अहलूवालिया
पीसस हैस नो आल्टरनेटिव	मिखाइल गोर्बाच्योव
द सिटी ऑफ जॉय	डोमिनिक लैपियर
एनादर लाइफ	डेरेक वाल्कट
स्युटेबल लाइफ । गोल्डन गेट	विक्रम सेठ
लज्जा	तस्लीमा नसरीन

महत्वपूर्ण औषधियाँ

एकोनाइट - एकोनाइट औषधि, एकोनाइट नेपलस नामक पौधे के भूमिगत तने से प्राप्त होती है तथा उसका उपयोग दर्द एवं ज्वर के उपचार में किया जाता है।

एफिड्रीन - एफिड्रीन औषधि, एफिड्रा नामक पौधे से प्राप्त की जाती है। इसका प्रयोग जुकाम खाँसी, दमा आदि रोगों के उपचार में किया जाता है।

ईसबगोल की भूसी - ईसबगोल की भूसी, प्लेण्टेगो इण्डिका नामक पौधे के बीज से प्राप्त की जाती है। इसका प्रयोग पेचिश आदि के उपचार में किया जाता है।

सर्पगन्धा - सर्पगन्धा नामक औषधि सेल्फियो सर्पेन्टाइना नामक पौधे की जड़ से प्राप्त की जाती है। इसका उपयोग उच्चरक्तचाप, पागलपन तथा अनिद्रा आदि रोगों के उपचार में किया जाता है।

मार्फीन - मार्फीन नामक औषधि अफीम के पौधे पेपेरम सोमनीफेरम के कैप्सूल से प्राप्त की जाती है। इसका दर्द–नाशक के रूप में तथा निद्रा लाने के लिये प्रयोग किया जाता है।

तारा

- निमिष श्रीवास्तव
नवम 'क'

दूर आसमाँ पर वह
चमकता हुआ तारा है
पहले देखा नहीं फिर भी
लगता कुछ जाना–पहचाना है
शायद कभी देखा था उसे
सूरज से डरकर छिप रहा था
कुछ डरा सहमा सा था
फिर भी रात के इंतजार में था
पर अब तो रात आयी है
तारों की सौगात लायी है
स्वतन्त्र चमक रहा है वह
फिर भी आँखों में कहीं
डर का एक हिस्सा है
फिर वह सूरज आयेगा
और उन्हें छुपायेगा।

❁ ❁ ❁

ऐसी गरमी आयी

- प्रखर अग्निहोत्री
सप्तम 'क'

डाका डाल दहाड़ा सूरज
लू ने धूम मचाई,
चैन नहीं अब यहाँ किसी को
ऐसी गरमी आयी !

झुलसी देह, तपे छत–छप्पर
अकुलाई है बस्ती,
बड़े–बड़े बेहाल यहाँ पर
चिड़ियों की क्या हस्ती
नरम दूब की गरम धूप से
होती हाथापाई !

हर दरवाजा, हर घर–आँगन
करता पानी–पानी,
कीट पतंगे कुत्ते–बिल्ली
सबकी यही कहानी !
तुरंत भागकर, छिपती छाया
ऐसी क्या शरमाई!

कोहरा

- शूरवीर सिंह
एकादश 'क'

क्या है यह कोहरा?
क्या है इस कोहरे में?
शायद जीवन का एक सत्य;
कि दूर से कितना सुखद है जीवन
पर पास जाने पर
सब श्रान्त, क्लान्त
सूनी राहें, दुःखी मन
हाँ, यही सब है कोहरे के उस पार;
उस निराकार परदे के पार
जो दूर से नहीं दिखाता,
पर होता है।
यदि खोलना है कोहरे का वह द्वार
तो उसके पास जाओ,
दूर से देख उसे मत हो निराश
क्योंकि कोहरा भ्रान्ति है,
जो तब तक नहीं मिटती
जब तक यह मौसम नहीं बदलता;
जीवन का ढंग नहीं बदलता.....

दहेज माँगने का फल

- दिव्यांशु तिवारी
सप्तम 'क'

बन्दर मामा सूट पहनकर,
करने चले सगाई,
लेकर के जयमाल बंदरिया,
सज धज कर जब आई।
बन्दर मामा बोले ठहरो,
बात याद एक आई
पहले कहना भूल गया था,
मत करना तकरार,
होगी शादी बाद में,
पहले दो दहेज में कार ।
ये सुन कर गुस्साई बंदरिया,
फेंक दिया जयमाल,
नहीं करूँगी तुमसे शादी,
तुम हो नटवर लाल।
करती हूँ मैं फोन पुलिस को,
ले जाएगी थाने,
भूल जाओगे कार माँगना,
होगी अक्ल ठिकाने।।

ताडंव '2008'

- प्रखर अग्निहोत्री
सप्तम 'क'

31 दिसम्बर 2007 की वह रात थी,
महफिल ए रंगीन और मस्तानी शाम थी।
इंतजार था नये साल का,
और पुराने को अलविदा कहने की बात थी।
क्योंकि दुनिया इस साल की,
हकीकत से अनजान थी,
लेकिन इस साल की कहानी,
ने कुछ और ही कह दिया,
कुछ लोग जहाँ मर गये मंदी की मार से
तो कुछ खामोश हो गये धमाकों की बौछार से
कुछ जहाँ बह गये बाढ़ के उफान में
तो कुछ भेंट चढ़ गये मराठी की आग में
इस साल के शेयरों का एक ही हिसाब था।
हँसी थी अपने निचले पावदान पर,
और दुख सर्वोच्च पर विराजमान था।
इसीलिये तो दुनिया का हर व्यक्ति परेशान था।

सबसे बड़ी सेवा

- अरुण पाल
नवम 'क'

कैसा हो गया वर्तमान का समा,
हर कोई अपने काम में है रमा।
किसी को चिंता नही है,
इन लाचार, बुजुर्ग वृद्धों की।
जिन्होंने उसे अपना बताया,
फिर मेहनत से उसे चलना सिखाया।
जिन्होंने उसे आगे बढ़ना सिखाया,
पढ़ा लिखाकर काबिल बनाया।
जिन्दगी के हर कठिन मोड़ पर,
हर कदम पर साथ निभाया।
छोड़ी नही कोई इच्छा अधूरी
हर तरह की हर इच्छा पूरी।
जिन्दगी के हर कठिन मोड़ पर,
हर कदम पर साथ निभाया।
हमको ही करनी है इनकी देखभाल,
न कोई हो इनको परेशानी।
न गुम होने पाये इनकी निशानी
इसका रखना है हमको ख्याल।

तीन बातें

- शुभम वर्मा
नवम 'ख'

- तीन चीजें कभी छोटी न समझें – शत्रु, कर्जा, बीमारी।
- तीन चीजें किसी की प्रतीक्षा नहीं करती – समय, मृत्यु, ग्राहक।
- तीन चीजें भाई को भाई का दुश्मन बना देती हैं – जर, जोरू, जमीन।
- तीन चीजें याद रखना जरूरी है – सच्चाई, कर्तव्य, मृत्यु।
- तीन चीजें असल उद्देश्य से रोकती हैं–बदचलनी, क्रोध।
- तीन चीजें कोई चुरा नहीं सकता है – बुद्धि, चरित्र, हुनर।
- तीन चीजें निकल कर वापस नहीं आती है – तीर कमान से, बात जुबान से, प्राण शरीर से।
- तीन व्यक्ति वक्त पर पहचाने जाते हैं – स्त्री, भाई, मित्र।
- तीन चीजें जीवन में एक बार मिलती है – माता–पिता तथा जवानी।
- तीन चीजें कभी नहीं भूलनी चाहिए – कर्ज, मर्ज व फर्ज।
- इन तीनों का सम्मान करो – माता, पिता व गुरु।
- इन तीनों को हमेशा वश में रखो – मन, काम, लोभ।
- तीन पर दया करो – बालक, भूखे, पागल।

एक फूल की जबानी

- प्रशान्त मिश्र
नवम 'ख'

मेरा सुन्दर फूलों से घिरा एक बगीचा है। मैं उस बगीचे का एक छोटा सा फूल हूँ। वैसे तो इस बगीचे में सभी पुष्प स्वस्थ तथा प्रसन्न हैं। परन्तु न जाने क्यों मेरे क्या लगभग इन सभी पुष्पों के अन्दर एक ही अनुभूति उभरने लगती है, तथा दूसरी तरफ शंका के बादल भी उमड़–घुमड़कर सावधान रहने की अनुभूति करा रहे हैं।

ऐसा आमतौर पर देखा जाता है कि ऐसी स्थिति किसी प्रिय व्यक्ति या वस्तु का स्मरण करने में होती है, जो व्यक्ति इन फूलों के अन्दर छिपी हुई सुगंध को उत्पन्न करने का भरोसा तो दिलाता है परन्तु अचानक आँखों से ओझल हो जाता है।

इस बगीचे का प्रमुख माली अचानक इस बगीचे को हमेशा–हमेशा के लिए छोड़कर चला गया है। वैसे तो इस बगीचे में अनेक सहायक माली हैं, परन्तु फूलों के लिए वह माली, इन मालियों में विशेष था। हो भी क्यों न हो क्योंकि उस माली का सकरात्मक व्यवहार और क्रियाएँ–प्रतिक्रियाएँ इन फूलों के प्रति एक अपनत्व का अहसास कराती थी। बाग में ही उस माली का एक छोटा सा घर था। सभी फूलों को बस एक ही आशा है कोई ऐसा विशेष माली उस माली के विशेष गुणों को लेकर आये तथा एक बार पुनः बिखरे हुए फूलों, मालियों तथा कर्मियों को संगठित करने का प्रयास करें।

कुछ प्रमुख युद्ध व उनकी तिथियाँ

- अभिषेक सिंह
नवम 'ग'

1.	प्रथम विश्व युद्ध	–	4 अगस्त 1914
2.	अमेरिकी गृह युद्ध	–	1860–1866 ई0 में
3.	क्रीमिया का युद्ध	–	1854 ई0
4.	ऑस्टरलित्स का युद्ध	–	1805 ई0
5.	ब्लेनहृय का युद्ध	–	1704 ई0
6.	हेस्टिंग्स का युद्ध	–	1649 ई0
7.	नील का युद्ध	–	1 अगस्त 1789 ई0
8.	जापान – रूस का युद्ध	–	1904–05 ई0
9.	अरब–इजराइल युद्ध	–	1967 ई0
10.	मैराथन का युद्ध	–	490 ई0 पू0
11.	तालीकोटा का युद्ध	–	1465 ई0
12.	चीन–भारत युद्ध	–	1962 ई0
13.	पानीपत का तृतीय युद्ध	–	1761 ई0
14.	बक्सर का युद्ध	–	1864 ई0
15.	झेलम का युद्ध	–	326 ई0 पू0

अठारह पुराण व श्लोकों की संख्या

- विनायक त्रिपाठी
अष्टम 'ख'

1.	विष्णु पुराण	–	23,000	11.	ब्रह्मवैवर्त पुराण	–	18,000
2.	भागवत् पुराण	–	18,000	12.	लिंग पुराण	–	11,000
3.	पद्म पुराण	–	55,000	13.	शिव पुराण	–	24,000
4.	वराह पुराण	–	24,000	14.	स्कंद पुराण	–	81,000
5.	मत्स्य पुराण	–	24,000	15.	नारदीय पुराण	–	25,000
6.	कूर्म पुराण	–	17,000	16.	अग्निपुराण	–	18,000
7.	वामन पुराण	–	10,000	17.	मार्कण्डेय पुराण	–	9,000
8.	गरूड़ पुराण	–	19,000	18.	भविष्य पुराण	–	14,000
9.	ब्रह्म पुराण	–	10,000				
10.	ब्रह्माण्ड पुराण	–	72,000				

यह भी जानिए

- तन्मय द्विवेदी
नवम 'ख'

- हृदय गति कम हो जाने पर उसे सामान्य अवस्था में लाने के लिए जिस यन्त्र का प्रयोग करते हैं उसे पेसमेकर कहते हैं।
- शरीर में छिपी हुई असमानताओं का पता लगाने के लिए कम्प्युटेड टेमोग्राफी स्कैन (C.T. Scan) नामक यन्त्र का प्रयोग किया जाता है।
- स्वप्नों के अध्ययन को ऑनीरोलॉजी (Onirology) कहते हैं।
- मनुष्य के सौंदर्य के अध्ययन को कैलोलॉजी कहते हैं।
- शरीर में सबसे दृढ़ तत्व दाँतों का एनामोल होता है।
- मनुष्य में लिंग निर्धारण पुरुष के क्रोमोसोम पर निर्भर करता है न कि स्त्रियों के क्रोमोसोम पर।
- मनुष्य के फेफड़े का आन्तरिक क्षेत्रफल 93 वर्ग मीटर होता है जो शरीर के वाह्य क्षेत्रफल का 40 गुना होता है।
- हड्डियाँ कंक्रीट जैसी मजबूत व ग्रेनाइट जैसी कठोर होती हैं।
- शरीर के भीतर प्रति सेकेण्ड लगभग 150 लाख कोशिकाएँ नष्ट होती हैं।
- एक बार साँस अन्दर लेने में सामान्य व्यस्क लगभग 500 मिमी. हवा अन्दर ले जाता है।
- हृदय की रक्त पम्प करने की क्षमता 4.5 लीटर/मिनट है।
- छोटी आँत लगभग 7 मीटर लम्बी होती है उसका ब्यास 2.5 मी. होता है।
- शरीर के रक्त–परिभ्रमण में लगभग 23 सेकेण्ड का समय लगता है।
- एल्बाट्रास सबसे बड़ी समुद्री पक्षी है जिसके पंख का फैलाव 10–12 फीट तक है।
- मनुष्य के शरीर में लगभग 50 लाख बाल होते हैं।
- बच्चे की हृदय धड़कन व्यस्क व्यक्ति से ज्यादा होती है।
- एक बार साँस लेने की क्रिया 5 सेकेण्ड अर्थात् 2 सेकेण्ड में निश्वसन व 3 सेकण्ड के उच्छश्वसन में पूरी होती है।
- मनुष्य के शरीर में रुधिर प्रतिदिन लगभग 350 मीटर ऑक्सीजन शरीर की कोशिकाओं तक पहुँचाता है। इसमें 97 प्रतिशत ऑक्सीजन हीमोग्लोबिन द्वारा ले जाया जाता है व शेष 3 प्रतिशत भाग का संचरण रुधिर प्लाज्मा करता है।

क्या होगा देश का भविष्य

- मु० अफजाल अहमद
नवम 'ख'

भारत एक ऐसा राष्ट्र जिसने परोपकार और दया की सभी सीमायें पार कर दीं। अगर भारत भी अमेरिका जैसी नीति अपनाता और आतंकवादियों को पनाह दे रहे पनाहगारों को सबक सिखा दिया होता ; तो मुंबई हमले का मुँह न देखना पड़ता – "अजमल और कसाब जैसे कुछ भयावह आतंकवादी अपने वतन और ईमान के कलंक हैं। ईमान ने तो उन्हें ठुकरा ही दिया और अब बारी है; वतन की।" एक तरफ देखिए अपने राजनेताओं को जो मात्र हमारे देश, समाज और जनता पर बोझ हैं। उनका व्यवसाय देश को आबाद करना नहीं बल्कि बर्बाद करना है। धिक्कार और लानत है राज ठाकरे जैसे लोगों को जो राजनीति का सहारा लेकर देश को और देश की आवाम को काल के गर्त में ढकेल रहे हैं।

राजनेता कर रहा, अब देश का व्यापार है।
राम कोई जन्म ले अब ; यह समय की पुकार है।।

मुझे शर्म आती है उन धार्मिक कट्टरपंथी लोगों पर जो धर्म के नाम पर मज़हब के नाम पर लोगों को बहका रहे हैं और 'वन्दे मातरम्' (भारत की आत्मा) का ही विरोध कर रहे हैं। इसके संदर्भ में दो पंक्तियाँ .....

" देश उनका भी उतना है ; जितना हम लोगों का है।
पर जाने क्यों उन लोगों का मन पाकिस्तानी लगता है।।

अगर यही स्थिति रही हमारे वतन की तो क्या भविष्य होगा आप ही बताइये।

कुछ अनमोल बातें

- शुभम वर्मा
नवम 'ख'

1. पीने के लिए कोई चीज है तो क्रोध।
2. खाने के लिए कोई चीज है तो गम।
3. लेने के लिए कोई चीज है तो ज्ञान।
4. देने के लिए कोई चीज है तो दान।
5. कहने के लिए कोई चीज है तो सत्य।
6. दिखाने के लिए कोई चीज है तो दया।
7. त्यागने के लिए कोई चीज है तो अहंकार।
8. परखने के लिए कोई चीज है तो बुद्धि।
9. रखने के लिए कोई चीज है तो मान।
10. संग्रह के लिए कोई चीज है तो विद्या।
11. सफलता के लिए कोई चीज है तो प्रसन्नता।
12. करने के लिए कोई चीज है तो सतसंग।
13. धारण करने के लिए कोई चीज है तो संतोष।
14. त्यागने के लिए कोई चीज है तो ईर्ष्या।
15. जीतने के लिए कोई चीज है तो मन।

कुछ प्रेरक संस्मरण तथा कथाएँ

- अनुराग त्रिपाठी
अष्टम 'ख'

विलक्षण मेधावी बालक

शिवाजी ने 13 वर्ष की आयु में तोरण का किला जीता था। सिंकदर ने 17 वर्ष की आयु में शोरोनियाँ का युद्ध जीता। अकबर ने 16 वर्ष की आयु में गद्दी सँभाली और विशाल साम्राजय बुद्धिमत्ता पूर्वक चलाया। अहिल्या बाई ने 18 वर्ष की आयु में राज–काज अपने हाथ में ले लिया संत ज्ञानेश्वर ने 12 वर्ष की आयु में गीता का ज्ञानेश्वरी भाष्य लिखा था। जगद्गुरु शंकराचार्य ने 16 वर्ष की आयु में अनेक शास्त्रार्थ जीते। रवींन्द्रनाथ टैगोर ने 14 वर्ष की आयु में शेक्सपियर के मैकबैथ नाटक का बँगला अनुवाद किया। बंगाली कवयित्री तारादत्त 18 वर्ष की आयु में विश्वविख्यात हो गई। सरोजनी नायडू ने 13 वर्ष की आयु में तेरह सौ पंक्तियों की मर्मस्पर्शी कविता लिखकर साहित्य के क्षेत्र में चमत्कार उपस्थित कर दिया।

गांधी जी को अनुर्तीर्ण होना मंजूर

एक बार स्कूल इन्सपेक्टर मुआयने के लिए आये। गांधीजी की कक्षा की परीक्षा हुई। उसमें पाँच शब्दों की स्पेलिंग लिखने को दी गई। गांधीजी ने उसमें से एक गलत लिख दी। कक्षा अध्यापक ने इशारा किया कि आगे वाले विद्यार्थी की नकल कर लो, पर गांधीजी ने नकल नहीं की। परीक्षा में सब उत्तीर्ण हुए, केवल गांधी जी अनुत्तीर्ण रहे। इन्सपेक्टर चला गया, तो मास्टर ने गांधीजी को डाँट लगाई। गांधी जी ने उत्तर दिया – "मास्टर साहब ! दूसरे की नकल करके पास होने की अपेक्षा, अपनी बुद्धि से अनुत्तीर्ण होना अच्छा है। झूठी सफलता के लिए अपनी आत्मा की सच्चाई को बेचकर आत्महीनता का दुःख उठाना मेरे लिए संभव नहीं।" गांधीजी के इस कथन पर अध्यापक उनकी अल्पायु में नैतिकता की अडिग आस्था के लिए आश्चर्यचकित रह गए।

संयमी और परिश्रमी को वैद्य की जरूरत नहीं

कोई राजा भटकता हुआ किसी गाँव में पहुँचा। परिचय न होते हुए भी ग्रामवासियों ने उसका बहुत सत्कार किया। सज्जनता से प्रभावित होकर राजा ने उन ग्रामवासियों के लिए किसी विशेष सुविधा का प्रबंध करने की बात सोची। वहाँ एक साधन संपन्न अस्पताल बना दिया गया। आशा की जाती थी कि उस क्षेत्र के सभी लोग बहुत लाभ उठायेंगे।

एक साल बीत गया। कोई भी मरीज नहीं आया। राजा को सूचना मिली तो वह कारण जानने स्वयं आए। उस सुविधा का लाभ न उठाने का कारण पूछा तो ग्रामीणों ने कहा–"हम लोग आहार का संयम बरतते हैं और कठोर परिश्रम करते हैं। इससे बीमारी एक तो आती ही नहीं; आती भी है तो पसीने के रास्ते तत्काल बाहर निकल जाती है।"

अहंकार के रूप अनेक

एक शिल्पकार था। उसकी बनाई मूर्तियाँ इस प्रकार लगतीं मानो जीवित व जाग्रत हों। उसे उसकी कला के लिए कई पुरस्कार मिले। उसे एक बार एक पत्र मिला जो किसी ज्योतिषी का था। उसमें लिखा था कि इस बार उसे सर्वोच्च पुरस्कार 'अमृत कला अवार्ड' मिलेगा। कुछ दिनों बाद उसकी यह भविष्यवाणी सत्य साबित हुई। कुछ दिनों बाद फिर उसी ज्योतिषी का एक और पत्र मिला, जिस पर लिखा था कि अमुक तारीख को अमुक समय उसकी मृत्यु हो जाएगी। यह पढ़कर वह बेचैन हो गया। फिर उसने मृत्यु से बचने का रास्ता निकाला। उसने दिन–रात एक करके चार हूबहू अपने जैसी ही दिखने वाली मूर्तियाँ बनाईं। निश्चित तारीख को वह उन मूर्तियों के साथ, उनके समान ही खड़ा हो गया। जब यमदूत उसे लेने आए तो चक्कर में पड़ गए। जब यमदूतों को कुछ समझ में नहीं आया तो उन्होंने यमराज को बुलाया। यमराज आए तो वो भी चकरा गए कि आखिर असली शिल्पकार कौन हैं ? यमराज ने तुरन्त ब्रह्माजी का ध्यान किया और शिल्पकार की प्रशंसा करना शुरू कर दी। अपनी प्रशंसा सुनकर शिल्पकार खुश होता गया।

अंत में यमराज ने कहा – 'अगर वह शिल्पकार मिल जाए, जो इन कृतियों को बनाने वाला है तो मैं उसे देखकर धन्य हो जाऊँ।' आखिर वह कौन है – बस इतना सुनते ही शिल्पकार बोला – मैं। बस वह यहीं गलती कर गया। वह प्रशंसा के क्षणों में संयम न बरत सका यमराज ने तुरन्त उसे मृत्यु प्रदान कर दी।

बलिदानी मिट्टी अमूल्य

विधाता ने अपने सेवकों को बुलाकर धरती से एक–एक उपहार लाने का आदेश दिया। उन्होंने कहा–"जिसका उपहार सर्वश्रेष्ठ होगा, उसी को प्रधान सेवक के पद पर नियुक्त किया जाएगा।" आज्ञा मिलने की देर थी। सभी सेवक अच्छे उपहारों की तलाश में पृथ्वी की ओर दौड़ने लगे। सब इस प्रयत्न में थे कि ऐसा उपहार ले जाया जाए जिससे मेरी पदोन्नति शीघ्र हो जाए। एक से एक बहुमूल्य उपहार सेवकों ने लाकर सामने रखे, पर विधाता के चेहरे पर कहीं प्रसन्नता और संतोष की रेखा तक न थी। हिसाब लगाया गया, तो एक सेवक आना शेष था। उसकी प्रतीक्षा बड़ी आतुरता से की जा रही थी।

आखिर प्रतीक्षा की घड़ियाँ पूरी हुईं और वह सेवक भी आ गया। कागज की पुड़िया विधाता को देकर नीचे डरते–डरते बैठ गया। वह सोच रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि देर से आने के कारण डाँट पड़े। उस सेवक की पुड़िया देखकर अन्य कितने ही सेवक मन में हँसने लगे, कई उसकी मूर्खता पर प्रसन्न हो रहे थे, विधाता ने पुड़िया खोली– "अरे यह क्या इस पुड़िया में मिट्टी बाँध लाए ?" सेवक ने हाथ जोड़कर कहा– "हाँ भगवान ! मैंनें पृथ्वी का चप्पा–चप्पा छान मारा शायद ही कोई स्थान रह गया हो, जहाँ मैं नहीं गया। मैनें इस बात की बड़ी कोशिश की कि ऐसा उपहार ले चलूँ जो आपको पसंद आ जाए, पर कुछ समझ ही नहीं आया। प्रभु ! है तो यह मिट्टी ही, पर किसी साधारण स्थान की नहीं है। यह वह मिट्टी है जहाँ के लोगों ने धर्म और मानवता की रक्षा के लिए खुशी–खुशी अपने प्राण निछावर कर दिए।" विधाता ने यह मिट्टी बड़ी श्रद्धा से अपने मस्तक पर लगायी और कहा "सेवकों ! जब तक पृथ्वी पर ऐसे संत और सज्जन पुरूष बने रहेंगे तब तक धरती पर सुख–शांति की सम्भावनाएँ भी कम न होंगी।"

हमारा देश

अमन गुप्ता
सप्तम 'क'

हमारा देश भारत है, नदी गोदावरी–गंगा ।
लिखा भूगोल पर युग ने हमारे चित्र बहुरंगा ।
हमारे देश का गौरव शिखर ऊँचा हिमालय है।
हृदय के हिंद–सागर में लहर संगीत का लय है।
हमारी भूमि–माता का भरा आँचल सुनहला है।
जगह की वर्णमाला में हमारा नाम पहला है।
हमारे देश की माटी अनोखी मूर्ति वह गढ़ती ।
धरा क्या ? स्वर्ग के भी जो गगन–सोपन पर चढ़ती ।

आधुनिक परिभाषाएँ

- उत्कर्ष त्रिपाठी
सप्तम 'क'

१. वैद्य - धवल वैद्य ऐसी सफल, दवा करें तजबीज ।
दोनों को कर दे सफा, मर्ज रहे न मरीज ।।

२. वकील - कानूनों के कान में, ठोक जिरह की कील ।
हत्या कर दे सत्य की, वही सफल वकील ।।

३. नेता - माइक की गर्दन पकड़, मारै लंबी डींग ।
करैं प्रमाणित तर्क से, गदहे के दो सींग ।।

४. सपूत - पास परीक्षा में हुए पूत निपोरें खीस ।
टोटल मार्क्स हजार में, मिले चार चौबीस ।।

स्वर्ण मृगों ने सदा छला है रामों को
पंचवटी की कथा जगत में जाहिर है
लक्ष्मण रेखाओं का कोई मूल्य नहीं है
हर रावण अपहरण कला में माहिर है।

बाहर भी ज्ञान है

- प्रफुल्लित त्रिपाठी
सप्तम 'क'

कौशल और मनीष एक ही विद्यालय में पढ़ते थे। दोनों कक्षा पाँच के छात्र थे। स्कूल उनके घर के निकट ही था। मार्ग में झरही नामक नदी बहती थी, उस नदी का पाट अधिक चौड़ा नही था। नाव से उसे पार करने में मुश्किल से दस मिनट लगते थे। नदी पार करते ही वह विद्यालय दिखाई पड़ने लगता था। वहाँ दोनों एक साथ प्रतिदिन जाते थे। स्कूल आते–जाते वक्त दोनों रास्ते में अजीब बातें करते रहते थे। अक्सर उनकी बातों का विषय वह बूढ़ा नाविक होता था जो उन्हें नदी से पार करवाता था। कमाई होने के कारण बिना नागा वह नियत समय में आता था। उसका प्रतीक्षा स्थल नदी के निकट स्थित पीपल का वृक्ष था। मनीष की उम्र का उसका भी एक पोता था। वह कभी–कभी घाट पर आकर बच्चों के साथ खेलता था। जब बच्चे न होते तो नाविक के साथ ही खेलता रहता। यह देखकर कौशल व मनीष खूब हँसते, एक दिन कौशल ने उससे पूछा कि,'तुम्हारे पोते का क्या नाम है' तब नाविक ने कहा कि बचपन से ही इसका रंग काला है इसलिए इसका नाम कलुआ है। यह सुनकर दोनों खूब हँसे तथा कहा कि, 'आप इसका स्कूल में दाखिला क्यों नहीं करवा देते' तब नाविक ने कहा कि, हम इसका विद्यालय में दाखिला क्या करवायें ? इसका तो पढ़ने में मन ही नहीं लगता, अब सोच रहें हैं कि इसको भी तैरना और नाव चलाना सिखा दें तो यह भी कुछ काम करने लगे। यह सुनकर दोनों खूब हँसे। अगले दिन जब वे पीपल के पास गए तो देखा कि नाविक तो नहीं है परन्तु उसकी नाव यही है। यह देखकर उन्होंने सोचा कि क्यों न हम स्वयं ही नाव चलाकर विद्यालय जाएँ ? तब वे नाव को खेने लगे मार्ग में बहाव तेज होने के कारण नाव अनियन्त्रित हो गयीं और वे डूबने लगे। तब कलुआ दौड़ते हुए आया व नदी में छलाँग लगा दी और दोनों को बचा लिया तब वे दोनों बहुत शर्मिन्दा हुए।

उन्होंने कलुआ के प्रति कृतज्ञता भी प्रकट की।

संदेश – हमें किसी कार्य को छोटा नहीं समझना चाहिए तथा यह जानना चाहिए कि बाहर भी ज्ञान है।

चक्कियाँ कर्तव्य की पीसी बहुत दिन, आइए अधिकार के चूल्हे जलाएँ।
ताकि शासन के तवे पर चार रोटी, सेंक कर ये बाल बच्चे तो जिलाएँ।।

कश्मीर न देंगे

- अखिल गंगवार
नवम 'क'

कश्मीर है भारत का, कश्मीर न देंगे,
तस्वीर है जन्नत की, तस्वीर न देंगे।
शत्रु की धमकी से, हम डर नहीं सकते,
दुश्मनी से समझौता, हम कर नहीं सकते।
हिन्दुस्तान का फूल, हिन्दुस्तान में ही खिलेगा,
हर देशभक्त अपने, वतन पर मर मिटेगा।
कर नहीं सकता हथियारों से देश पर कब्जा,
कैसे भूलेगा पाक हमारी हिम्मत का जज्बा।
परदेश से तूने बड़े हथियार हैं मँगाये,
निहत्थों–मासूमों पर ही सदा तूने आजमाये।
हिन्द की तस्वीर गद्दारों को न देंगे,
आजादी की जागीर लुटने न देंगे।
कश्मीर है भारत का, कश्मीर न देंगे,
तस्वीर है जन्नत की, तस्वीर न देंगे।

हाइड्रोजन की आत्मकथा

मेरा नाम हाइड्रोजन है। मुझे लोग H_2 के नाम से पुकारते हैं। मेरे माता–पिता के नाम H_2SO_4 तथा 2NA हैं। जब मैं छोटा था तब मेरी देखभाल मिस्टर हेनरी क्वेडिस ने की। मैं लगभग 16 वर्ष तक मि. क्वेडिस के पास रहने के पश्चात् मि. लैबोसिया को सौंप दिया गया। उन्होंने मेरा परीक्षण करके बताया कि मैं जल उत्पादक हूँ, क्योंकि मेरे और ऑक्सीजन के मिलने से जल बनता है। मेरा विवाह मि. लैबोसिया ने क्लोरीन के साथ कर दिया। विवाह के कुछ समय बाद मेरा पुत्र हुआ, जिसका नाम HCL रखा गया। मेरा पुत्र बहुत दुष्ट निकला। लोग उसके पास आने से डरते थे। पता है मैं बहुत हल्का हूँ। बच्चे मुझे गुब्बारे में डालकर मेरे साथ खेला करते हैं।

आतंकवाद और भारत

आतंकवाद ने पूरे विश्व को अपने क्रूर पंजों में जकड़ रखा है। यह एक प्रकार से दिशाहीन युवकों का विध्वंसकारी आंदोलन है। आजकल आतंकवादी गतिविधियाँ बहुत ही सामान्य हैं। कुछ विदेशी संस्थाओं द्वारा दिये गये प्रलोभनों से युवक सरलता से आकर्षित होकर इन आतंकी गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं।

भारत में पंजाब, बंगाल, जम्मू–कश्मीर, असम, आन्ध्र प्रदेश, एवं तमिलनाडु आदि में आतंकवादी गतिविधियों का सामना करना पड़ रहा है। निर्दोष व्यक्ति बिना किसी कारण के मारे–जाते हैं। वृद्ध, बच्चे एवं महिलायें भी इसका शिकार होती हैं। जम्मू–कश्मीर का एक सम्प्रदाय विशेष इतनी बुरी तरह प्रभावित हुआ कि उसने राज्य ही छोड़ दिया। एक शान्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए वे इधर–उधर घूम रहे हैं। यहाँ पर आंतकवाद का भिन्न कारण यह है विवादित कश्मीर के भू–भाग के लिये आतंकवादी संगठन युवकों को भारत में अशान्ति फैलाने के लिये भेजते हैं। कारगिल युद्ध का कारण भी यही था।

सरकार देश से आंतकवाद को जड़ से मिटाने के लिये कटिबद्ध है। इसके लिये विदेशों से भी सहयोग माँगा गया है। वर्तमान प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह एवं अमेरिकी राष्ट्रपति ने भी इस बुराई के विरूद्ध सम्मिलित जंग लड़ने का निश्चय किया है। वे इसे मानवता के लिये अभिशाप मानते हैं। अमेरिका ने आंतकवाद में लिप्त देशों के विरूद्ध सख्त कदम उठाने का निश्चय किया है।

भारत आर्थिक विकास की ओर तेजी से बढ़ रहा है तथा आतंकवाद इस राह का सबसे बड़ा सकंट है। परन्तु वह दिन दूर नहीं जब आतंकवाद और उसे पोषण देने वाले देश सिर्फ इतिहास बनकर रह जायेंगे।

लक्ष्य

- *अभिषेक सिंह चौहान*
सप्तम 'क'

नदी किनारे बैठे–बैठे, मैंने देखा जल का खेल।

अपनी उठती लहरों से जल, काट रहा था पर्वत शैल।

कई भँवर थे कई तरंगें, आपस में टकराती थीं।

इधर–उधर से जो कुछ भी मिलता, उसकों भी ले जाती थीं।

इतने में पीपल का पत्ता, उड़कर जल में आन गिरा।

उसे उठाया जब लहरों ने, पत्ते ने प्रस्थान किया।

लहरों के संग–संग वह, पत्ता ऊपर–नीचे जाता था।

कभी इधर और कभी उधर वह इतराता ही जाता था।

मैनें पूछा कहाँ चला तू ? लक्ष्य कहाँ पर है तेरा ?

इतना खुश तू दिख रहा है, बढ़ता हुआ अकेला,

पत्ता बोला; कहाँ चला मैं ? इसका मुझको भान नहीं।

आगे मुझ पर क्या बीतेंगी, इसका भी कुछ ज्ञान नहीं।

केवल नर्तन का लोभी मैं आ बैठा इन लहरों पर।

अद्‌भुत सुख मिलता है मुझको नाच–नाच कर इधर–उधर।

इतना कहते ही वह पत्ता, हाय भँवर में आन गिरा।

मुझे बचाओ, मुझे बचाओ, चिल्लाया वह दीन बड़ा।

ईश्वर जाने कहाँ गया वह ? काम गया मिट नाम गया।

जिनका लक्ष्य नहीं जीवन में, ऐसे ही खो जाते हैं।

जैसे लाखों–लाखों पत्ते पानी में बह जाते हैं।

क्या आप जानते हैं

- प्राञ्जल मिश्र
नवम 'ख'

1– अमेरिका में प्रति सेकेण्ड 100 पाउण्ड चॉकलेट खाई जाती हैं।
2– एक साधारण टेलीफोन में 200 पुर्जे होते हैं।
3– गिरगिट अपनी दोनों आँखों को अलग–अलग तरीके व दिशा में घुमा सकती हैं।
4– 1868 में लन्दन में घोड़ों व पैदल चलने वालों को नियन्त्रित करने के लिए ट्रैफिक सिग्नल का प्रयोग होता था।
5– 90 % बीमारियाँ तनाव के कारण और अधिक बिगड़ जाती हैं।
6– कागज पर पढ़ने के मुकाबले लोग आमतौर पर कम्प्यूटर स्क्रीन पर 25 % कम रफ्तार से पढ़ते हैं।
7– हर चार में से एक अमेरिकी घर में बिल्ली पाई जाती है।
8– एक अध्ययन के अनुसार 70 % भारतीय प्रतिदिन अपना राशिफल पढ़ते हैं।
9– मुम्बई से भारत का 40 % विदेश व्यापार होता है।
10– 13 % आबादी मरूस्थलों में रहती हैं।
11– स्पोर्ट्स इलस्ट्रेट दुनिया में सबसे अधिक बिकने वाली खेल पत्रिका हैं।
12– 1986 में क्रैश हुए अंतरिक्ष यान चैलेंजर के सात यात्रियों के नाम पर बाद में 7 उल्का पिंडों के नाम रखे गए।
13– मकड़ियों के आठ आँखे होती हैं, फिर भी उन्हें धुँधला दिखाई देता है।
14– कथक शब्द की उत्त्पत्ति संस्कृत शब्द कथा से हुई हैं।
15– मनुष्य के गुर्दे प्रतिदिन 50 गैलन रक्त शुद्ध करते है।
16– दक्षिणी ध्रुव में जन्म लेने वाले पहले व्यक्ति का नाम एमिलियो मार्को पाल्मा था जो 1978 में हुआ था।
17– दक्षिणी ध्रुव धरती पर एक मात्र ऐसा स्थान है, जिस पर किसी देश का शासन नहीं हैं।
18– यूरोप में डचवासी सबसे लम्बे कद के माने जाते हैं।
19– पनामा नहर बनाते समय करीब 25 हजार लोग मारे गए थे व करीब 20 हजार अन्य बाद में मलेरिया व पीत ज्वर की चपेट में आ गए थे।
20– एक औसत वयस्क में 45 अरब वसा कोशिकाएँ होती हैं।
21– अमेरिकी सरकार ने 1819 में फ्लोरिडा राज्य को स्पेन से 5 मिलियन का ऋण चुकाने के एवज में खरीदा था।
22– लौकी व कद्दू में पोटैशियम व विटामिन A पाया जाता है।
23– दुनिया का एक मात्र पाप कार्न संग्रहालय अमेरिका के ओहायो राज्य के मेरियन में है।
24– तरबूज में 92 % पानी होता है।
25– पहली टैटू मशीन सैमुअल ओ राइटी में बनी है।
26– एक अनुमान के अनुसार औसतन एक ड्राइवर अपने जीवन में 15,250 बार हार्न बजाता है।
27– एक औसत हिमखण्ड का वजन 20 लाख टन होता है।
28– 2007 में दिल्ली पुलिस (ट्रैफिक) ने 41 लाख चालान काट कर एक अरब दो करोड़ 33 लाख रू0 का जुर्माना वसूला।
29– हाइड्रोजन गैस दुनिया का सबसे कम घनत्व वाला पदार्थ है।

वार्षिकोत्सवः एक रिपोर्ताज

(मैं कहता आँखिन की देखी)

तरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहे न रहे'' का जीवन मन्त्र लेकर चलने वाले दीनदयाल जी ने भारतमाता के चरणों में अपना सम्पूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया। पण्डित जी का जीवन हमारे राष्ट्र की अनुपम थाती था और उनकी साधना देश का जीवन्त इतिहास । युग–पुरूष पंडित दीनदयाल जी की स्मृति में राष्ट्र निर्माण के संकल्प के साथ स्थापित पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय ने पंडित जी के 92 वें जन्मोत्सव को अपने 38 वें वार्षिकोत्सव के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया। विद्यालय के जन्म से होने वाला वार्षिकोत्सव हमारे छात्रों के भीतर उत्साह, उल्लास तथा उमंग का संचार करता है। प्रस्तुत है कार्यक्रम की एक झलक –

प्रथम चरण के रूप में 21 सितम्बर को युग भारती जो हमारे विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था है उसका वार्षिक अधिवेश संपन्न हुआ । इस कार्यक्रम में 1983 बैच के छात्रों का सम्मेलन था। युग भारती के संरक्षक तथा विद्यालय के पूर्व प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी कार्यक्रम के मुख्याभ्यगत थे । उन्होंने अपने संक्षिप्त व प्रेरक वक्तव्य में कहा,'' युग भारती यदि अपने कार्यक्रमों का विकास करना चाहती है तो वह प्रत्येक क्षेत्र में विकास करने की योजना बनाए तथा समाज को सहयोग प्रदान करें । मानसिक शक्ति से हम अपने साध्य की प्राप्ति कर सकते हैं। कार्यक्रम में अनेक पूर्व आचार्य भी एकत्र हुए। 'युग–भारती की कार्यकारिणी की घोषणा की गयी इसके पश्चात् सभी ने सहभोज किया । इसके बाद लेफ्टिनेंट अभिषेक अग्निहोत्री (बैच 2002) द्वारा तरूण भारती, किशोर भारती के मुख्य पदाधिकारियों से विचार विमर्श हुआ । सायंकाल 4.00 बजे युगभारती का कार्यक्रम समाप्त हुआ ।

सायंकाल 4:30 बजे से अभिभावक सम्मेलन प्रारंभ हुआ तथा अभिभावकों की समस्याओं का निराकरण किया गया।

द्वितीय चरण के प्रारंभ में अन्तर विद्यालयीय गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ । मुख्याभ्यगत के रूप में श्री वासुदेव वासवानी तथा निर्णायक मण्डल में संजय गौर माधुरी केंदुलकर तथा सुनीता मिश्रा थीं। इस बार छात्र व छात्रा वर्ग की प्रतियोगिता साथ–साथ हुई । पूरा वातावरण संगीतमय था। भावनाओं का तट था एवं संगीत के सिन्धु के अनन्त छोर से राष्ट्रीयता का मरीचिमाली झाँक रहा था। प्रतियोगिता में 17 विद्यालयों ने भाग लिया । प्रतियोगिता में ओंकारेश्वर सनातन धर्म विद्यालय के छात्र शंशाक दीक्षित को प्रथम, डीपीएस आजादनगर की छात्रा अनन्या मिश्रा को द्वितीय तथा पं० दीनदयाल विद्यालय के छात्र पार्थ निगम को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ ।

इसी क्रम में विज्ञान कला कम्प्यूटर, ऐतिहासिक तथा भौगोलिक प्रदर्शनी का आयोजन हुआ मुख्य अतिथि, डी. ए. वी. कॉलेज के प्रो० आरसी मिश्रा ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया । कम्प्यूटर पर सामयिक मुद्दों का प्रस्तुतीकरण विज्ञान में नाभिकीय विखण्डन से ऊर्जा उत्सर्जन व मिसाइल के जीवन चक्र, भूगोल व इतिहास में ज्वालामुखी, गोल गुम्बद, प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जैवमण्डल, चंद्रमा, पंचमहल, संसद आदि पर मॉडल बनाकर छात्रों ने प्रशंसा बटोरी । प्रदर्शनी के लिए अनुराग कटियार कुलदीप राजदेव, धनुर्विशाल पुरस्कृत हुए ।

वार्षिकोत्सव के तृतीय चरण में अन्तर विद्यालयीय वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें नगर के 34 प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया । छात्र व छात्रा वर्ग की प्रतियोगिता संयुक्त रूप से हुई । मुख्य अतिथि के रूप में कवि श्री महेन्द्र प्रताप दुबे 'सुमन' थे। प्रतियोगिता का विषय था कि – "वैश्वीकरण देश हित में है।" विषय के पक्ष में अपने विद्यालय के द्वादश कक्षा के छात्र भैया सुयश मधुर दीक्षित ने कहा, "संगठन में शक्ति होती है तो क्यों हम एकला चलो की मनोवृत्ति को पाले जा रहे हैं।"

विषय के विपक्ष में भैया श्वेतांक सिंह ने कहा कि "हमारी संस्कृति जीवन का आधार है हमारी संस्कृति का अस्तित्व नहीं रहेगा, तो हम कैसे विकसित होंगे।"

निर्णायक मण्डल के सदस्य डा० मनोज मिश्र ने कहा– "वर्तमान में समन्वयन की आवश्यकता है। आजकल चिड़िया राइजिंग जैसी पुस्तकों का ही महत्व है।" मुख्य अतिथि ने विषय के विपक्ष में कहा कि, "वैश्वीकरण संस्कृति एवं सभ्यता का विनाश कर सकता है। कहीं इससे हमारी पहचान न खो जाए।"

प्रतियोगिता में डीपीएस कॉलेज के छात्र को प्रथम स्थान, दीनदयाल विद्यालय के भैया श्वेतांक सिंह को द्वितीय स्थान तथा दीनदयाल विद्यालय के भैया सुयश मधुर एवं शिवाजी इण्टर कॉलेज के छात्र को तृतीय स्थान मिला । कार्यक्रम का संचालन तरूण भारती ने किया ।

वार्षिकोत्सव के चौथे दिन मुख्य कार्यक्रम और पुरस्कार वितरण के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन तरूण भारती ने किया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय राममाधव जी थे । मुख्य अतिथि ने सर्वप्रथम विशाल कक्ष में हनुमान जी की मूर्ति पर पुष्पार्पण किया, इसके पश्चात् पंडित दीनदयाल जी के चित्र एवं प्रतिमा पर पुष्पार्पण किया । कदम से कदम मिलाकर चलते हुए स्वागत एवं मानवंदना के लिए बढ़ते हुए N.C.C तथा घोष के छात्रों का पथ संचालन अत्यधिक शोभनीय लग रहा था। कार्यक्रम का शुभारम्भ परम्परागत रूप में इष्टदेवों के अभ्यर्चन से हुआ।

इसके पश्चात् छात्रों ने सामान्य योग तिष्ठ योग तिष्ठ तीव्र योग व गोपुर निर्माण का शारीरिक प्रदर्शन किया । अध्यक्षीय वक्तव्य के पश्चात् छात्रों को प्रोत्साहित करने हेतु पुरस्कृत किया गया ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता के तीनों वर्गो (बाल, किशोर, तरूण) के विजेताओं पुरस्कृत किया गया। घोष के छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया। परिषदीय परीक्षाओं में मेरिट सूची में स्थान प्राप्तकर्ता छात्रों चि० प्रकाश केशव, चि० अर्पित कटियार, चि० अभय प्रताप सिंह सेंगर, चि० हितेन्द्र कटियार को पुरस्कृत किया गया तथा ससम्मान उत्तीर्ण छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया। इसके पश्चात् माननीय प्रधानाचार्य जी ने वार्षिक आख्या प्रस्तुत की । इसके उपरान्त भैया अविनाश ने गीत गाकर अलौकिक वातावरण का सृजन किया । मुख्य अतिथि राममाधव जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि– ''देशहित के लिए हमें अपनी प्रतिभा को पहचानना चाहिए, उसका विकास करना चाहिए । स्वदेशी, स्वभाषा एवं राष्ट्र के गौरव की रक्षा पर बल देना चाहिए एवं विदेशियों के सामने स्वयं को मजबूत रखना चाहिए । हमें अपना शोणित एवं स्वेद का कण–कण देश की वसुन्धरा पर न्योछावर कर देना चाहिए और यदि ऐसा नहीं है तो हम देश द्रोही हैं।''

इसके पश्चात् प्रबन्धसमिति के सदस्य डॉ० ज्ञानचन्द्र अग्रवाल ने छात्रों का मार्गदर्शन किया एवं विद्यालय के सचिव श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया । कार्यक्रम समापन राष्ट्रगीत के साथ हुआ ।

वार्षिकोत्सव के अन्तिम तथा पाँचवें चरण में रंगमंचीय कार्यक्रमों (सांस्कृतिक संध्या) का आयोजन हुआ । कार्यक्रम का संचालन किशोर भारती के अध्यक्ष भैया यश अवस्थी ने किया । मुख्य अतिथि के रूप में H.B.T.I के निदेशक माननीय एस.के अवस्थी रहे । मारूति–मन्दिर में उन्होंने आराध्यों का पुष्पार्पण कर वन्दना की इसके पश्चात् उन्होंने पंडित जी की प्रतिमा एवं चित्र पर पुष्पार्पण किया। मुख्याभ्यगतों का परिचय प्रधानाचार्य जी ने कराया । इसके पश्चात् इष्टदेवों का पूजन हुआ। माननीय अवस्थीजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा– ''पंडित जी के विचार हर स्थान व क्षेत्र में प्रंशसनीय है। यदि हम बाहर की तकनीक को अपनें अनुरूप ढाल लें तो हमारा सर्वागीण विकास निश्चित ही संभव है। व्यक्ति अभिव्यक्ति सदैव करता है क्योंकि वह भावप्रधान है।'' सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारी हेतु कश्मीर से अपनी टीम के साथ आए श्री वंशी डोगरा जी ने डॉ० एस० के० अवस्थी को कश्मीरी संस्कृति व डोगरी समाज की प्रतीक डोगरी पगड़ी पहनकर स्वागत किया। माननीय मुख्य अतिथि जी ने N.C.C जूनियर व सीनियर डिवीजन के छात्रों भैया आशीष तिवारी, सौरभ द्विवेदी, उज्ज्वल दीप प्रशान्त मिश्र को पुरस्कृत किया। माननीय सचिव श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी ने प्रांगण में उपस्थित समागन्तुक महानुभावों का आभार प्रदर्शन किया ।

रंगमंचीय प्रस्तुतियों का शुभारम्भ ''वाणी वन्दना'' से हुआ । कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण ''अमरनाथ की यात्रा'' रहा । इसमें काश्मीर सरकार द्वारा श्राइन बोर्ड से भूमि ले लेने के पश्चात् हुए विद्रोह का बड़ा ही क्रान्तिकारी तथा प्रभावी प्रदर्शन किया गया। इसके पश्चात् प्रसिद्ध एकांकीकार

हरिशंकर परसाई द्वारा विरचित एकांकी "भोलाराम की आत्मा" का मंचन किया गया। इसमें भ्रष्टाचार की ज्वलंत समस्या का मंचन किया गया। इस नाटक में अभिजित शुक्ल, तनुज त्रिपाठी, अभिराम, सुजीत समीर ने अभिनय किया ।

तदोपरान्त पत्राधाय की स्वदेश प्रेम की भावना पर आधारित रामकुमार वर्मा कृत 'दीपदान– एकांकी का मंचन हुआ। अपने पुत्र को देश के लिए न्योछावर कर देने के कथानक वाली यह एकांकी प्रेरक रही । इसमें यज्ञप्रिय मधुकर, उज्ज्वल दीप, शंशाक कुमार ने मुख्य भूमिका निभायी ।

इसके पश्चात् "माँ वैष्णों देवी की यात्रा" का भवनात्मक प्रस्तुतीकरण हुआ जिसमें मधुर संगीत के साथ नृत्य चल रहा था इसमें प्रमुख भूमिका नितेश कुमार उदित नारयण, विमलेश कुमार ने निभायी । कार्यक्रम में अंग्रेजी नाटक में भैया सुयश मधुर, अंकुर द्विवेदी का अभिनय सराहनीय रहा । कार्यक्रम के अभ्यास में प्रमुख भूमिका आचार्य श्री दुर्गेश जी मयंकमणि जी, आचार्या श्रीमती रेखा निगम जी ने किया । रंगमंचीय प्रस्तुतियों का साहित्यक भाषा में संचालन आचार्य श्री दिनेश जी, श्री दुर्गेश जी, तथा भैया यतीन्द्र त्रिपाठी, अफजाल अहमद तथा भैया रणविजय ने किया।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत के साथ हुआ । इस प्रकार वार्षिकोत्सव का प्रेरक एवं रोचक समापन हो गया तथा वार्षिकोत्सव अपने समाप्त होने की प्रतीक्षात्मक पीड़ा भी दे गया ।

प्रस्तुति – यश अवस्थी
(महामंत्री, किशोर भारती)
अनुराग भदौरिया
(पत्रकारिता प्रमुख)
–दशम 'ख'

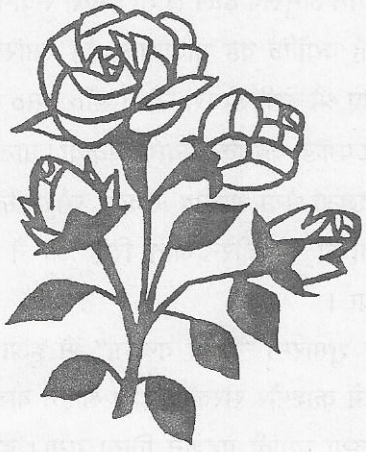

सरस्वती-वन्दना : वात्सल्य मंदिर की
बालाएँ तथा विद्यालय
के बालक

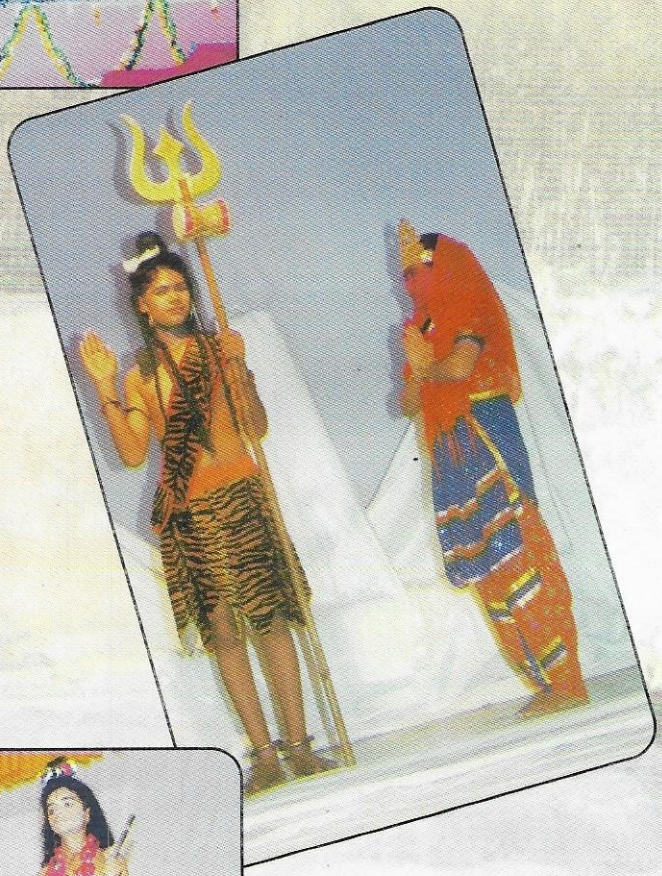

शिव-पार्वती

भोलाराम के जीव का पता
लगाने पहुँचे नारद मुनि
(चि. अभिजित व अभिराम)

चित्रगुप्त से पूछताछ करते यमराज
(चि० अभिषेक तथा प्रखर)

यमराज के दरबार में यमदूत
(चि० सुजीत रंजन) तथा
नारद (अभिजीत)

भोलाराम की आत्मा लाने में
अक्षम रहे यमदूत ने
सफाई पेश
की

पेंशन दफ्तर में नारद मुनि को भी घूस देनी पड़ी (चि० तनुज व अभिजित)

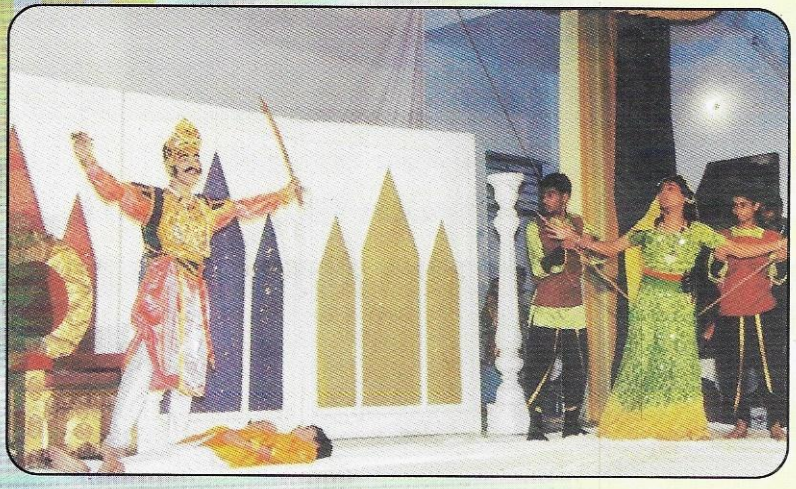

चन्दन की हत्या करने के बाद अट्टहास करता क्रूर बनबीर तथा आहत पन्ना धाय (चि० उज्ज्वल दीप तथा यज्ञप्रिय मधुकर)

महान वीरांगना पन्ना की भूमिका में यज्ञप्रिय तथा बनबीर के रूप में उज्ज्वल दीप

टैलेण्ट डेवलपमेण्ड काउंसिल द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय गणित प्रतियोगिता
में चि० अभिनव शाही (६ क) को द्वितीय स्थान मिला

टैलेण्ट डेवलपमेण्ट काउंसिल द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय गणित प्रतियोगिता में
चि० यज्ञप्रिय मधुकर (६ क) को प्रथम स्थान मिला

वहाँ कोई हल्का या भारी नहीं है

- श्री सुभाष चन्द्र शर्मा
आचार्य

स्वप्न दिन में दिख रहे कुछ रात में ।
हो रही गणना, गणित की बात में ।
है परिधि तो केन्द्र भी होगा कहीं,
पहचान उसकी है, उसी के हाथ में ।

अंजुलि में जल कभी रुकता नहीं है।
प्रेम गलियों में कभी बिकता नहीं है।
सृष्टि में संगीत प्रतिपल जो बजाता,
सामने रहते हुए दिखता नहीं है।

बाँटता है प्रेम वह ही संत है।
सहज पग जिस पर बढ़ें वह पन्थ है।
जिन्दगी एक स्वप्न का विस्तार है।
आदि जिसका है, उसी का अन्त है।

यात्रा है लम्बी सवारी नहीं है।
वहाँ कोई हलका या भारी नहीं है।
खुदा बनकर जीने की जिद् छोड़ दो अब,
ये दुनिया है उसकी तुम्हारी नहीं है।

प्यासे लबों की कहानी है दुनियाँ ।
धड़कते दिलों की निशानी है दुनियाँ।
मन में फकीरी दिल में है जन्नत ।
उसी आदमी की दीवानी है दुनियाँ ।

नेकी की नियामतों का दीदारे नूर है।
आँखे खुले तो सामना होता जरूर है।
झूठे गुरुर ने हमें गुमराह किया है,
गुनाहों की सजा वक्त पर मिलती जरूर है।

पत्ते तो प्रतीक जीवन के, जड़ की सत्ता जानिये ।
जड़ धरातल की है बेटी, कर्म को पहिचानिये ।
ब्रह्म–माया जीव की पहचान जिसको,
उस स्वयं भू देवता को, सच में ब्राह्मण मानिये ।

बीज इतने रंगों में कैसे उगे हैं।
मोह–माया रूप के मेले लगे हैं
वे ही बनते हैं सदा जीवन चितेरे
राम की नगरी में, जो पहले जगे हैं।

कोठियाँ बँगले बने पर, घर सुहाना खो गया।
आस्था–विश्वास अब, पर्दे की डोरी हो गया ।
जश्न–ए–आजादी में हम सोये यहाँ कुछ इस कदर
कि इंसानियत के आसमाँ से, चाँद चोरी हो गया ।

अंधा शहर, अंधी बस्ती, और ये अन्धी गली ।
कत्ल आँगन में हुआ, लाश चौराहे पर मिली ।
दीवारों के कान, खामोश खड़े मकान,
उच्च शिखरों पर अँधेरा, धूप से कैसी खिली ।

जटायें बढ़ा लेने वाला हर कोई संन्यासी नहीं होता
गंगा तट का हर शहर, काशी नहीं होता ।
दोनों हाथों से बाँटिये, प्रेम–विश्वास की मिठास ।
क्योंकि भगवान का प्रसाद, कभी बासी नहीं होता ।

आस्था विश्वास के वट वृक्ष बौन हो गये हैं।
कैकटस, गमलों में अब इतने सलोने हो गये हैं।
स्वार्थ से झुकने लगी हैं प्रेम पीपल डालियाँ।
फूलों के दामन फाड़ कर काँटे तिकोने हो गये हैं।

अपने पराये हो गये, वक्त का मिजाज है।
हमको उनकी बहकी, अदाओं पर नाज है।
होनी सदा होती प्रबल रोहिताश्व क्या करे।
बगिया के हर सुमन पर, तक्षक का राज है।

(भ्रूण हत्या पर एक मार्मिक कविता)

कन्या की करुण पुकार.....

आशीष द्विवेदी
नवम -ग

चाहे न प्यार देना, चाहे न दुलार देना
बाबुल जन्म से पहले, मुझको न मार देना
मैया के संग–संग मैं अँगना बुहार लूँगी ।
मेरे जनम के दाता, मेरे ओ प्यारे पापा
मुझको न मार देना .....चाहे न प्यार देना ।

भैया से पूछकर मैं, घर में ही पढ़ लूँगी
भैया की जूठन खाके, जीवन गुजार दूँगी
मेरी विवश है माता, तुमसे है ऐसा नाता
जीवित न तार देना .....चाहे न प्यार देना ।

भैया की ही तरह से, हूँ मैं भी दिल का टुकड़ा
सुन लो प्यारे पापा बेटी का एक दुखड़ा
माँगू मैं भीख तुमसे, तुम्हें बाँधकर कसम से
जीवन उधार देना .....चाहे न प्यार देना ।

सोचो तो तुम जरा सा, मेरा कुसूर क्या है
सब सुत ही तुझको देगा, ऐसा गुरूर क्या है।
श्रद्धा का न मनु का, ये सृजन है प्रभु का
इसको श्रृंगार देना .....चाहे न प्यार देना ।

दुनिया में सुख का केवल ,दोनों से भान होता
कन्या का दान ही तो, सबसे महान होता
ये जानते हुए भी, पहचानते हुए भी
फिर पाप कैसा बीना ..... चाहे न प्यार .....

क्यों मार के हो करते, मेरी माँ की कोख लज्जित
गर हम हुए तो होगा आँगन तेरा सुसज्जित
तुझसे न भिन्न हूँ मैं तेरा ही बिम्ब हूँ मैं
दर्पण न तोड़ देना .....चाहे न प्यार देना ।

बसन्त की प्रतीक्षा

दिव्यांशु तिवारी,
सप्तम 'क'

उपवन में छाई हरियाली ,
कोयल बैठी है मतवाली ।
कुहू–कुहू कर बोल रही है,
अपनी धुन में डोल रही है।।

है बसन्त ऋतुओं का राजा
उपवन अति सुन्दर है साजा
क्या बगिया क्या डाली–डाली
सभी जगह छाई हरियाली ।।

है बसन्त ऋतुओं का राजा
इसमें मन रहता है ताजा ।
खुला हुआ घर दरवाजा,
ऐ बसन्त ! अब जल्दी आजा ।।

है बसन्त ऋतुओं का राजा ।
सुन्दर सब उपवन है साजा ।।
पीली – पीली सरसों फूली ।
अँबवा पर कोयलिया झूली ।।

पिता

अभिषेक द्विवेदी
नवम 'ख'

दो अक्षर का शब्द पिता का
बहुत मधुर सा लगता है।
उसके बिना सारा जीवन
सूना सा लगता है।
पिता–पुत्र का नाता यह,
अतुल स्नेह भरता है।
पिता शब्द नभ सा विशाल है,
नव जीवन भर देता है।

नेता

निहाल दीक्षित
सप्तम 'क'

नेता पिए हैं, पानी घाट–घाट का,
दाँव पेंच चल रहा है राज – पाट का ।।
लोक सभा चुनाव अभी दूर है,
चालें चल रहें हैं एक–दूजे की काट का।
कोई भी सगा नहीं इस जमाने में,
पलट दे न पाया कभी किसी खाट का।।
साल में दो बार सिर्फ याद हैं करते,
शीश–नमन को जाते हैं राजघाट का ।
मँहगा बड़ा है माल दिल्ली के हाट का ।
मरने पर किसी के घर पहुँचे देर से,
पूछिएगा तब पता शमशान घट का ।।

महान व्यक्तित्व ओबामा

सुप्रिय मणि शुक्ल
नवम -ख

इतिहास गवाह है कि कोई ऐसा व्यक्तित्व दशकों बाद आता है जिसको देखकर भगवान के 'भाग्य को बनाने' की अवधारणा पर विश्वास करना कठिन हो जाता है। हाँ एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने पूरे विश्व के इतिहास में अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कराकर एक मिसाल प्रस्तुत की है। वह व्यक्तित्व है बराक ओबामा । यह 40 वर्षीय अफ्रीकी मूल का अश्वेत अमेरिकी नागरिक है जिसका पूरा नाम बराक हुसैन ओबामा है। एक सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में जन्मा यह व्यक्तित्व एक कीर्तिमान स्थापित कर चुका है जिसका सपना करोड़ों विश्ववासी अनेकों वर्षों से देख रहे थे। ओबामा की पत्नी का नाम मिशेल ओबामा व दो बेटी शासा तथा मलिया हैं।

ओबामा एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने जीवन को जंग समझकर स्वीकार किया व निरन्तर आगे बढ़ने के लिए तत्पर रहे । एक अश्वेत अफ्रीकी परिवार के इस व्यक्ति ने श्वेतों के बहुसंख्यक देश में राष्ट्राध्यक्ष बनकर यह सिद्ध कर दिया कि अगर मनुष्य ऊँची सोच और स्वाभिमान को लेकर चले तो वह बड़े से बड़े लक्ष्य को पा सकेगा । ओबामा ने सिद्ध कर दिया कि मनकी प्रबल इच्छा व विश्वास भाग्य को भी परिवर्तित कर सकते हैं। ओबामा के जन्म के समय उनके परिवार वालों ने सोचा भी नहीं होगा कि यह बालक बड़ा होकर अश्वेतों को हीन समझे जाने वाले देश अमेरिका का प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति बनेगा । लेकिन ऊँची सोच रखने वाले व्यक्तित्व ओबामा ने मात्र 40 वर्ष के समय में अपने को एक आदर्श रूप में प्रस्तुत करने में कामयाबी प्राप्त की । एक सामान्य परिवार के सदस्य से राष्ट्रपति बनने तक ओबामा की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्होंने अपने प्रारम्भिक कठिनतापूर्ण जीवन को याद कर हमेशा आगे बढ़ने का प्रयास किया । उनकी सादगी और प्रेम व्यवहार उनके जीवन के मूल मन्त्र रहे । उनकी इन विशेषताओं के कारण ही वे अमेरिका ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की जनता के प्रेमपात्र बन गये ।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने सोचा भी नहीं होगा कि जिस अश्वेत नागरिक से हाथ मिलाने के बाद उसी के सामने साबुन से हाथ धोकर उसकी बेइज्जती कर रहे हैं वही अश्वेत नागरिक उनको उनकी गद्दी से हटाकर एक सामान्य नागरिक का जीवन जीने पर मजबूर कर देगा। लेकिन अब प्रश्न यह उठता है कि ओबामा के शपथ ग्रहण समारोह वाले दिन बुश ने कपड़े नहीं बदले थे ? इसका एक सीधा उत्तर यह है कि मनुष्य को उसका कर्म महान बनाता है न कि रंग–रूप । मनुष्य अपनी प्रतिष्ठा के लिए अपने को कठिन परिश्रम रूपी आग्नि में जलाता है। ओबामा न उपलब्धियों को हासिल

करने के लिए धैर्य, साहस, त्याग आदि गुणों को जीवित रखा। ओबामा शपथ ग्रहण करने के बाद भी उतने ही साधारण हैं जितने कि पहले थे। ओबामा के चुनाव जीतने के बाद के वक्तव्य का हिन्दी अनुवाद का कुछ अंश निम्नवत् है।

"आज मैं जो आपके सामने खड़ा हूँ वह 16 वर्षों से मेरी अभिन्न मित्र रहीं, मेरी परिवार की सुरक्षागाह, मेरा प्रेम और इस राष्ट्र की प्रथम महिला मिशेल ओबामा के सतत निस्वार्थ सहयोग के बिना सम्भव नहीं था। मेरी नानी माँ जो आज यहाँ नहीं है उनकी शिक्षाएँ मेरे जीवन की प्रेरणा बन चुकी हैं। मैं उनको बहुत याद करता हूँ; मुझे पता है कि वे मुझे आशीर्वाद दे रहीं होगी । मेरे यहाँ खड़े होने का श्रेय उन लोगों को जाता है जिन्होंने अपने सहयोग को देकर मेरी अद्वितीय सहायता की ।"

ओबामा के दिल से निकले यह शब्द उसके अभिमान रहित होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। अगर हम प्रेरणा लेना चाहें तो ओबामा के आत्मविश्वास, चिन्तन, दूरदर्शिता से ले सकते हैं। भाग्य को बदल देने का अदम्य विश्वास ओबामा के अन्दर देखा जा सकता है।

कुछ लोग होते हैं जो आदर्शों पर चलते हैं व कुछ आदर्शों का निर्माण करते हैं ओबामा उन व्यक्तियों में हैं जो आदर्शों का निर्माण करते हैं। ओबामा ने हमारे सामने आदर्श प्रस्तुत किया है । हमें उससे सीख लेते हुए अपने गन्तव्य को प्राप्त करने का सफल प्रयास करना चाहिए।

समुद्री तूफानों का नामकरण करने की प्रणाली

- आदित्य विक्रम सिंह चौहान

नवम् 'ख'

वर्ष 1953 से ही वर्ल्ड **मिटिरोलॉजिकल आर्गेनाइजेशन** तूफानों के नाम की सूची तैयार करता है। अलग–अलग समुद्रों हेतु अलग–अलग नाम तय किये जाते हैं। हर वर्ष के लिये अंग्रेजी के पहले अक्षर 'A' से शुरू करके 'W' तक 21 नाम रखे जाते हैं। ये तूफान जिस क्रम में आते हैं, उसी तरह इनका नामकरण भी होता है। अगर वर्ष में 21 से अधिक तूफान आ जायें तो उनके ग्रीक वर्णमाला के अक्षरों के नाम से पुकारा जाता है, जैसे – एल्फा, बीटा, गामा, डेल्टा । अब आप सोच रहे होंगे कि 'कैटरीना' का नाम K से शुरू होता है, फिर इतनी जल्दी ^R* की बारी कैसे आ गयी । असल में कैटरीना व रीटा के मध्य अटलांटिक सागर में पाँच और तूफान आ चुके हैं। दिलचस्प बात यह है कि Q,U,X,Y,Z से किसर समुद्री तूफान का नामकरण नहीं होता है।

गुरु नानक जी

भारत की धरती पर अनेक महापुरूष तथा संत हुए जिन्होंने न सिर्फ अपने वचनों से समाज को जीवन जीने की सही दिशा दिखाई बल्कि अपना सारा जीवन मानवता के प्रति समर्पित कर दिया। गुरु नानक जी एक ऐसे ही संत हुए, जिन्होंने तमाम धर्मों के समक्ष ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जिसको स्वीकार किये बगैर वह न रह सके । गुरू नानक जी का प्रकाश पर्व कार्तिक–पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। गुरु नानक जी इसी पावन दिन प्रकट होकर संसार के अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करने के लिए हमारे बीच प्रकट हुए । श्री गुरूनानक देव जी ने जब पृथ्वी पर जन्म लिया तब समाज को भक्ति सुधार एवं पुनर्जागरण की आवश्यकता थी। उन्होंने तत्कालीन समाज के लो ों के भ्रम को दूर किया और एक ही ईश्वर को परमपिता बताते हुए कहा कि जब हम उसी एक ईश्वर की संतान हैं तो ऐसे में कोई छोटा–बड़ा कैसे ? गुरूनानक जी की अमृतवाणी से हिंदू व मुसलमान दोनों प्रभावित थे । श्री गुरुनानक देव जी समता व समाजिक एकता के प्रबल समर्थक थे। भारतीय इतिहास में वह पहले महापुरूष थें; जिन्होंने क्षेत्रवाद, प्रांतवाद, जातिवाद, वर्ण भेद की सीमाओं को लाँघकर लोगों को एक रहने का उपदेश दिया। आज समाज एक बार फिर इन्हीं बुराइयों की आग में जल रहा है, ऐसे में श्री गुरुनानक देव जी के उपदेशों की हमें सख्त जरूरत है ? गुरू नानक देव जी ने अपने जीवन काल में समाज के उत्थान के लिए भरसक प्रयास किए । सामाजिक सौहार्द को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने हिंदू और मुस्लिमों को उनके झूठे कर्मकांडों व आडंबरों को त्यागने के लिए प्रेरित किया। संगत में जहाँ उन्होंने 'जाति–पाँति पूँछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई' की बात कही, तो वहीं समानता के सिद्धांत को प्रस्तुत करते हुए लंगर यानी सामूहिक भोज व्यवस्था के तहत ऊँच–नीच, छोटे–बड़े, सभी वर्गों एवं वर्णों को बगैर किसी भेदभाव के एक साथ भोजन करने के लिए प्रेरित किया । आज भी तमाम गुरूद्वारों में यह परंपरा देखने को मिलती है। श्री गुरूनानक जी की पावन वाणी आज भी साखियों के रूप में 'श्री गुरू ग्रंथ साहिब' में विद्यमान है। जो मानव का पग–पग मार्गदर्शन कर रही है। उनकी वाणी में परमपिता परमेश्वर की आभा का ही प्रकाश दिखाई पड़ता है –

'एक ओंकार सत नाम
करता पुरखु निरभऊ निरबैर
अकाल मूरति अजूनी
सैंभ गुरू प्रसादि'

अर्थात् ईश्वर एक है, जो ओंकार स्वरूप है, सत नाम है, भय रहित है, बैर – रहित है, कालातीत मूर्ति है, आयोनि है, स्वयं भू तथा है, गुरू की कृपा से प्राप्त होता है। श्री गुरू नानक जी की वाणी में प्रभु सेवा व गुरू सेवा प्रमुखता से प्रकट हुई । वह सत्य की खोज को ही जीवन का अंतिम लक्ष्य बताते थे। गुरूनानक देव सिर्फ सिखों के ही नहीं सम्पूर्ण मानवजाति के गुरू थे । शांति, सरलता, सहजता व भक्तिभाव वाले इस कर्म योगी के अमृत वचन आज भी हमें जीवन जीने की राह दिखा रहे हैं।

विद्यालय

- शुभम द्विवेदी
अष्टम 'ख'

"विद्यालय ईंट गारे की बनी इमारत नहीं है, जिसमें विभिन्न प्रकार के छात्र और शिक्षक होते हैं। विद्यालय बाजार नहीं है, जहाँ विभिन्न योग्यताओं वाले अनिच्छुक व्यक्तियों को ज्ञान प्रदान किया जाता है। विद्यालय रेलवे प्लेटफार्म नहीं हैं, जहाँ विभिन्न व्यक्तियों की भीड़ जमा होती है। विद्यालय आध्यात्मिक संगठन है जिसका अपना विशिष्ट व्यक्तित्व है। विद्यालय गतिशील सामुदायिक केन्द्र है जो चारों ओर जीवन और शक्ति का संचार करता है। विद्यालय एक आश्चर्यजनक संस्था है जिसका आधार सद्भावना है। जनता, माता–पिता व छात्रों की सद्भावना । सारांश में एक सुसंचालित विद्यालय एक सुखी परिवार, एक पवित्र मंदिर तथा एक सामाजिक केन्द्र है। लघु रूप में एक राज्य; एक मनमोहक वृन्दावन है, जिसमें इन सब बातों का मिश्रण होता है।

विनोद

-अनुज शुक्ल
सप्तम 'क'

पिता जी बेटे से:- आज मैंने ऑफिस में सबकी खटिया खड़ी कर दी ।

बेटा पिता जी :- क्या ? आपके ऑफिस में कुर्सियाँ नहीं थी।

आखिरी उड़ान

शशांक शुक्ल
सप्तम 'क'

माँ के विशाल पंखों की छाया में आरम्भ हुई उसकी पहली उड़ान। वह खुश थी और उत्साहित भी। हम कहाँ जा रहे हैं माँ ?'' उसने पूछा ।

''ठण्डा मौसम आने वाला है। कुछ ही दिनों में यहाँ चारों ओर बर्फ होगी । न कुछ खाने को होगा, न पीने को । हमें दूर यात्रा पर जाना होगा।'' उसकी माँ ने उसे उत्तर दिया।

''क्यों माँ ?'' नन्हीं चिड़िया ने माँ के रोएँदार शरीर से सटकर पूछा ।

''यही नियम है बेटी प्रकृति का अटल नियम । हर जाड़े से पहले हमें हजारों मील दूर उन गर्म देशों में जाना पड़ता है जहाँ हमें आहार की कोई कमी नहीं होती।'' उत्तर मिला नन्हीं चिड़िया को ।

''पर माँ ! मेरे पंख अभी छोटे हैं, कैसे जा पाऊँगी उतनी दूर ?''

''तू पहली बार जा रही है ना, इसीलिए घबरा रही है। पर तू देखना यह दुनिया कितनी सुन्दर है। जब तू हरे–भरे पहाड़ों , इन्द्रधनुष को देखेगी तो झूम उठेगी । विशाल नीला आकाश कलकल करती नदियाँ, रंगीन फूलों से सजे बगीचे तू देखेगी तो तुझे बहुत अच्छा लगेगा ।''

माँ की उत्साह से चमकती आँखों को देख वह उन आँखों में देख रही थी मानों कि अपनी माँ की बताई सभी बातें, वह उसकी सुन्दर दुनिया में देख रही थी।

उसने सोचा, ''अगर वह देश इतना सुन्दर हुआ तो वह वापस नहीं आयेगी। बस, माँ को मनाना पड़ेगा ।''

उसे थकान न हो, इसीलिए थोड़ी–थोड़ी देर में पंखों
का हिलाना बंद करके हवा के साथ बहने लगती थी।

''ठीक है माँ, मैं बहुत दूर तक जाऊँगी, बिल्कुल नहीं थकूँगी ।'' ''मेरी बहादुर बच्ची!''

''माँ मुझे प्यास लग रही है'' धूप से बेचैन होकर उसने कहा – कितनी गर्मी है।''

''मैं भी यही सोंच रही हूँ। वर्षों से इसी रास्ते से जा रही हूँ,
पर कभी ऐसी थकान नहीं हुई ।''

''थोड़ी देर आराम कर लेते हैं माँ ! फिर चलेंगे ।''

'' तुझे प्यास लग रही है ना'' माँ ने अपनी चोंच से पिघलती हुई बर्फ उसके मुँह में डाली ।''अब चलो बेटी हमें बहुत दूर जाना है।'' तेज उड़ान भरते हुए वे आगे की ओर बढ़ने लगीं। गर्मी बढ़ती ही जा रही थी। नन्हीं चिड़िया का सिर चकरा रहा था उसे डर था कि थोड़ी देर और उड़ी तो पंख झुलस जायेंगे।

''माँ तुम रास्ता तो नहीं भूल गई ?''

"नहीं बेटी, सारे पक्षी रास्ता जानते हैं; तू बस उड़ान भर ।" माँ ने उसकी हिम्मत बाँधे रखी । पर वह खुद भी निढाल सी हो रही थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि धरती इतनी गर्म कैसे हो गयी । आकाश में धूल के मटमैले बादल छाये हुए थे, हवा का नामोनिशान नहीं था।

"माँ ये वही बादल हैं न, इन्द्र धनुष वाले ?" इन्हीं चिड़िया ने संशय से पूछा ।

"टप" । आकाश से एक बूँद गिरी और उसके पंख झुलस कर रह गये, वह चीखी। एक तेज कराह माँ के मुँह से भी निकली । वे अपनी बची–खुची शक्ति से छिपने के लिए आसरा ढूँढने लगे। हार कर, माँ ने उसे (नन्हीं चिड़िया) को अपने पंखों में छुपा लिया । माँ की तेज होती धड़कन वह साफ सुन सकती थी। उसकी क्षत–विक्षत देह दर्द से काँपती रही । वह असहाय माँ के मुलायम पंखों को सहलाती रही । बेसुध होते हुए माँ ने कहा मेरी लाडली अलविदा ।"

माँ की साँसे धीमी होती हुई बन्द पड़ गयीं और गर्दन एक ओर झुक गयी । "माँ" कहकर वह बिलख उठी और बड़ी देर तक सिसिकियाँ भरती रहीं और अंत में पंखों को तोलती हुई, खड़ी हुई जीवन यात्रा पर ।

"कम से कम एक बार तो देख लूँ, माँ के सपनों का घर" उसने खुद से कहा । तभी अचानक अत्यधिक वेग से वर्षा होने लगी । नन्हीं चिड़िया साहस से थोड़ी दूर चली। वह स्थान एक शहर था। नन्हीं चिड़िया थक चुकी थी। उसने शहर में आराम करने को सोंचा। तभी दो हांथों ने उसको पकड़ लिया ये दो हाथ किसी इंसान के थे। जब नन्हीं चिड़िया ने उसकी आँखों को देखा तो उसे यह आभास हो गया कि उसकी उड़न का अंत अब यहीं है।

गहरी साँस भरके उसने अपनी आँखे बंद की और जोर से चिल्लायी", माँ मैं आ रही हूँ तुम्हारे पास । मैं तुमसे बिल्कुल अलग नहीं रह सकती ।" यह कहकर वह भी मृत्यु को प्राप्त हो गयी ।

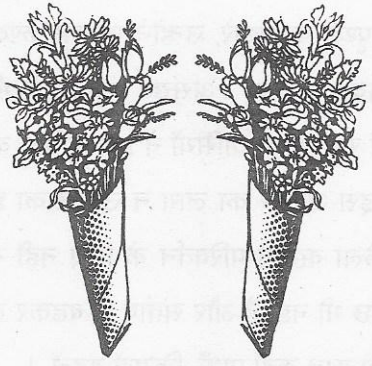

प्रेरक-कथा

मौन से शक्ति संचय

अभिषेक द्विवेदी
नवम 'ख'

जब महाभारत का अन्तिम श्लोक महर्षि वेदव्यास जी के मुखरविद् से निःसृत होकर गणेश जी के सुपाठ्य अक्षरों में भोजपत्र पर अंकित हो चुका तब वेदव्यास जी ने गणेश जी से कहा – "हे विघ्नविनाशक ! धन्य है आपकी लेखनी ! महाभारत का सजृन तो वस्तुतः आपने ही किया है परन्तु एक वस्तु आपकी लेखनी से भी अधिक विस्मयकारी है, वह है आपका मौन। सुदीर्घकाल तक आपका हमारा साथ रहा । इस अवधि में मैनें तो 15–20 लाख शब्द बोल दिए पर आपके मुख से एक भी शब्द न सुना।"

इस पर गणेश जी ने मौन की महिमा का बखान करते हुए कहा– "बादरायण जी किसी दीपक में अधिक तेल होता हैं और किसी में कम, परन्तु तेल का अक्षय भण्डार किसी भी दीपक में नहीं होता । उसी प्रकार देव, दानव आदि जितने भी तनधारी हैं, सबकी प्राणशक्ति सीमित है। किसी की कम, किसी की अधिक परन्तु असीम किसी की भी नहीं है। इस प्राणशक्ति का पूर्ण लाभ वही उठा सकता है जो संयम से इसका उपयोग करता है और संयम का प्रथम सोपान है वाकसंयम अर्थात् – मौन । जो वाणी का संयम नहीं रखता, उसकी जीह्वा – अनावश्यक बोलती रहती है और अनावश्यक शब्द प्रायः विग्रह एवं वैमनस्य उत्पन्न करते हैं, जो हमारी प्राणशक्ति को सोख लेते हैं।" व्यर्थ बकवास में शक्ति का अपव्यय होता है। यदि मौन के साथ शक्ति को सुरक्षित रखा जाए तो वह ओज में बदलकर ध्यान में सहायक होगी । नित्य संकल्प लें कि बिना जरूरी नहीं बोलूँगा, जितना हो सके, कम बोलूँगा, मौन रहूँगा । अधिक न हो सके तो सप्ताह में एक दिन मौन अवश्य रहूँगा।

मनुष्य जीवन से श्रेष्ठ कुछ नहीं

अभिषेक द्विवेदी
नवम 'ख'

इन्द्र एक दिन स्वर्ग से पृथ्वी पर पधारे, उन्होंने घोषणा करवाई जिसे जो वस्तु कुरूप लगे वो उसे वहाँ लाकर सुन्दर वस्तु से बदल ले जाए । असंख्य मनुष्यों की भीड़ लग गई वे अपनी वस्तुओं को सुन्दर करवा ले गए कुछ दिनों में सभी पृथ्वी वासियों ने इस सुविधा का लाभ उठा लिया। तलाशा गया कोई ऐसा तो नहीं रह गया जो इस अवसर का लाभ न उठा सका हो । खोजियो ने एक अवधूत को छोटी सी कुटिया में पाया । अकेला वह ही परिवर्तन के लिए नहीं गया था। कारण पूछने पर उसने बताया मनुष्य जीवन से सुन्दर कुछ भी नहीं है और संतोष से बढ़कर दूसरा आनन्द नहीं है। मेरे पास ये दोनों वस्तुएँ हैं फिर मैं इनसे अच्छी वस्तु कहाँ पाऊँ, किससे बदलूँ ।

स्मृति शेष - विष्णु प्रभाकर

यद्यपि मैं उन्हें कई बार टी हाउस में देख चुका था पर विष्णु प्रभाकर से जुड़ी मेरी सबसे पहली स्मृति 1975 की है जब उन्हें पाब्लो नेरुदा पुरस्कार दिया गया। वह पुरस्कार कई मायनों में विशिष्ट रहा है। समारोह संसद मार्ग स्थित नई दिल्ली नगर पालिका के हॉल मे आयोजित किया गया था। आयोजन में मुद्रराक्षस की महत्वपूर्ण भूमिका थी। उसके लिए हर लेखक से दस रूपये लिए गए थे। सवाल यह है कि पाब्लो नेरूदा पुरस्कार के निहितार्थ क्या थे ?

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित पाब्लो नेरूदा बीसवीं सदी के महान कवियों में से हैं। वह पुरस्कार पहली और आखिरी बार विष्णु प्रभाकर को ही दिया गया। एक तरह से यह सत्ता विरोध का पुरस्कार था जिसके बहाने दिल्ली के लेखकों ने साहित्य के संस्थानों के तौर–तरीकों से अपनी असहमति व्यक्त की थी। **आवारा मसीहा** साहित्य अकादमी पुरस्कार से वंचित ही रह गया था। निश्चय ही विष्णु जी को यह पुरस्कार तभी मिलना चाहिए था पर वह उन्हें लगभग तभी मिलना चाहिए था पर वह उन्हें लगभग दो दशक बाद 1993 में अर्द्धनारीश्वर उपन्यास के लिए दिया गया। **आवारा मसीहा** इसका ज्यादा बड़ा हकदार था पर साहित्य अकादमी इस तरह के न जाने कितने अनाचार कर चुकी है और करती रहती है। उस वर्ष का पुरस्कार भीष्म साहनी को तमस के लिए मिला था। इस संदर्भ में विष्णु जी ने 2006 में जब वह कूल्हे की हड्डी टूट जाने के करण अस्पताल में थे। एक महत्वपूर्ण बात बतलाई थी कि उनके और भीष्म जी के बीच पुरस्कार को लेकर कभी कोई बातचीत नहीं हुई। न ही किसी तरह का मन–मुटाव या वैमनस्य ही पैदा हुआ। मैं इस बात का गवाह हूँ कि भीष्म जी शीला जी के साथ काफी बाद यानी सन् 2002 तक काफी हाउस आया करते थे और विष्णु जी के साथ ही बैठा करते थे, जिस मेज पर एक सीट हमारी भी रहा करती थी।

जिस हद तक आज साहित्यिक पुरस्कारों का अवमूल्यन हो चुका है और उनका कोई अर्थ नहीं रहा है उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि पाब्लो नेरूदा जैसा समानांतर पुरस्कार हिंदी में अवश्य होना चाहिए था जो लेखक के प्रति आम पाठक और उसके हमपेशाओं के वास्तविक सम्मान का प्रतीक हो।

आवारा मसीहा लिखकर उन्होंने हिंदी साहित्य में नयी जमीन तोड़ी है। यह हिंदी की बहुचर्चित तीन जीवनियों में से है पर कई मायनों में सबसे अलग है। यह मेज पर बैठकर तथ्यों के संकलन या पारिवारिक संबंधों और विरासत में मिली सामग्री के विश्लेषण से नहीं लिखी गई है, बल्कि एकमात्र ऐसी जीवनी है जो किसी भी तरह की क्षेत्रीयता या पारिवारिक संबंधों के दबाव से मुक्त है। यह अपने आदर्श लेखक के प्रति गहरी श्रद्धा और आस्था से प्रेरित है। आवारा मसीहा लिखने में विष्णु जी ने 14 वर्ष लगाए।

पुस्तकाकार होने से पहले वह तत्कालीन प्रमुख पत्रिका साप्ताहिक हिंदुस्तान में धारावाहिक प्रकाशित हो चुकी थी। यह अंग्रेजी सहित देश की लगभग सभी भाषाओं में अनूदित हुई है। कहा जाता है शरत की ऐसी जीवनी बांग्ला में भी नहीं है पर इससे भी बड़ी बात संभवतः यह है कि न उनसे पहले, न ही उनके बाद कोई हिंदी लेखक इस तरह का काम कर पाया है।

शरत बाबू का जीवन उथल–पुथल से भरा था। वह भागलपुर, बिहार में पैदा हुए और बंगाल के अलावा रोजगार की तलाश में बर्मा भी गए थे, विष्णु जी ने इस जीवनी को लिखने के लिए बंग्ला ही नहीं सीखी बल्कि वह उन सारी जगहों में भी गये जहाँ शरत रहे थे और काम लिया था। उन दिनों भी बर्मा जाना कोई आसान काम नहीं था। वहाँ जाने के लिए इजाजत मिलना ही कठिन था फिर कोई सीधी हवाई सेवा नहीं थी। विमान पोर्टब्लेयर होकर जाते थे या फिर सिंगापुर या क्वालालंपुर होकर। इन सारी अड़चनों के अलावा यह यात्रा महंगी भी कम नहीं थी। तब तक औपनिवेशिक काल की नियमित स्टीमर वह यात्री सेवा भी उपलब्ध नहीं रही थी, जिसका संदर्भ शरत के उपन्यासों (विशेषकर पाथेर दावी) में आता है। उस दौर में जब शरत गये थे, चटगांव से बर्मा पहुँचना काफी आसान काम था क्योंकि वहाँ से दूरी कोई खास नहीं रहती, लेकिन पूर्वी पाकिस्तान (आज का बांग्लादेश) के कारण तब तक यह मार्ग बंद हो चुका था। विष्णु जी को यह काम करने के लिए किसी भी निजी या सार्वजनिक संस्थान या प्रकाशन से कोई मदद नहीं मिली थी।

हमें याद रखना चाहिए कि विष्णु जी शुरुआत के कुछ वर्षों को छोड़कर सदा मसिजीवी रहे। उन्होंने यह सब कैसे किया कल्पना करना कठिन नहीं है। निश्चय ही इसका बड़ा श्रेय उनकी पत्नी को जाता है जिनका 1980 में कैंसर से देहांत हुआ था। विष्णु जी अपनी पत्नी के प्रति सदा समर्पित रहे और उनकी मृत्यु ने विष्णु जी को काफी समय तक अव्यवस्थित कर दिया था। वह सदा आदर्शवादी और भावुक रहे हैं और पत्नी की चर्चा करते हुए अक्सर उनका गला भर आता और आंखें नम हो जाती थीं। अपने शरीर को चिकित्सकीय अनुसंधान के लिए देना एक तरह से उनका अपनी पत्नी के प्रति प्रेम और सम्मान की अभिव्यक्ति भी है जो कैंसर जैसी बीमारी से मरी थीं जिसका आज तक कोई इलाज नहीं खोजा जा सका है। ऐसा नहीं है कि विष्णु जी के शरीर की मदद से कैंसर का इलाज ढूँढ़ ही लिया जाएगा पर यह तो माना ही जा सकता है कि मानव समाज अपनी असाध्य बीमारियों के उपचार की दिशा में एक और कदम जरूर आगे बढ़ेगा।

मैं उनका कॉफी हाउस का साथी था। यह साथ संभवतः सबसे ज्यादा खुला और बौद्धिक होता है। कॉफी हाउस ऐसा मंच रहा है जहाँ पद, प्रतिष्ठा और उम्र के बंधन खत्म न भी कहें तो भी ढीले तो पड़ ही जाते हैं। यहाँ वही लोग आ और बैठ सकते हैं जो अपनी वरिष्ठता ओर गरिष्ठता का भार हर समय सिर पर नहीं उठाये चलते। इस मायने में वह सबसे बड़े लोकतांत्रिक थे और सन् 2002 तक, जब तक वह अजमेरी दरवाजे के कुंडेवालान मोहल्ले में रहते थे, बिना नागा काफी हाउस

आते थे। उन्हें मोटर गाड़ियों से पटी पड़ी सड़कें पार करने में काफी दिक्कत होने लगी थी।

विष्णु प्रभाकर की रचनाओं को अति भावुक कहकर खारिज किया जाता रहा है। वैसे यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि जो लोग निर्मल वर्मा के रूमानी प्रेम और फिर रूमानी अध्यात्मक की रचनाओं की भूरि–भूरि प्रशंसा करते रहे वही विष्णु जी की समाजोन्मुखी रचनाओं पर भावुकता और आदर्शवादी का आरोप लगाते रहे। पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भावुकता की समाज के संदर्भ में अपनी भूमिका होती है। ऐसे भावुक लोग ही अक्सर जीवन में नये पैमाने और चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं। नये रास्ते दिखलाते हैं। उनमें हौसला होता है और होता है साहस, बलिदान का। वे समझाते हैं कि हम ही सब कुछ नहीं हैं। वे हमें आत्ममुग्धता और स्वार्थपरता और कायरता से मुक्त करने में मददगार होते हैं। वे खतरे उठाते हैं और बेहतर जीवन की तलाश के रास्ते तय करते हैं। इसमें शंका नहीं कि भावुकता किसी दर्शन और ज्ञान का विकल्प नहीं हो सकती पर वह किसी भी दर्शन और ज्ञान को त्वरा देने का काम अवश्य करती है। भावुकता जीवन के प्रति प्रतिबद्धता का भी पैमाना है। आपका दर्शन कुछ भी हो सकता है। कितना ही महान हो सकता है पर अगर आपका किसी से सरोकार नहीं है, तो आपके होने न होने का कोई बहुत अर्थ भी नहीं रह जाता है। 'धरती अब भी घूम रही है' (कहानी), 'आवारा मसीहा' (जीवनी) से लेकर 'अर्द्धनारीश्वर' (उपन्यास) तक विष्णु प्रभाकर की रचनाओं में भावुकता स्पष्ट नजर आती है। उनके नाटकों डाक्टर और सत्ता के आर पार में आदर्शवादिता चरम पर है। सत्ता के आर पार का नायक दक्षिण का जैन राजा राज राजेन्द्र है। उनके विषय अक्सर उनकी विश्वदृष्टि और उदारता का परिचय देते हैं। इस पर उन्हें 1988 में मूर्ति देवी पुरस्कार मिला था। स्पष्ट है कि इन तत्त्वों के माध्यम से उन्होंने जीवने को समझने, दिशा देने, अपनी सहमति और असहमति जताने, नये आदर्शों को पाने तथा एक अन्यायी व स्वार्थी व्यवस्था को बदलने की मंशा को अभिव्यक्ति दी है। उनकी रचनाओं की आदर्शवादिता, भावुकता उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता का पैमाना है, न कि व्यक्तिवादी बेचैनी का। ऐसे दौर में जब तार्किकता और विवेक व्यावहारिकता, स्वार्थपरता और अवसरवाद का दूसरा नाम हो गए हों भावुकता और आदर्शवादिता कोई कम बड़ा गुण नहीं माना जा सकता।

उन्हें पद्म विभूषण भी 92 वर्ष की उम्र में दिया गया। जब कि उनसे पहले साहित्य के लिए ही शिवानी, सुरेंद्र शर्मा और के.पी सक्सेना तक को पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका था। वह सदा हाशिये पर रहे। उनके पास न पद था, न पैसा और न ही चाटुकारिता का गुण और इनकी उनमें कोई आकांक्षा भी नहीं थी। यह उनकी कर्मठता, आदर्शवाद और आत्म विश्वास ही था जिसने उन्हें हताशा और कडुवाहट से दूर रखा और अंततः संस्थानों को अपनी विश्वसनीयता बचाने के लिए उन्हें सम्मानित करने पर मजबूर होना पड़ा। यह इस बात का प्रमाण है कि विष्णु जी न तो कभी साहित्य की राजनीति में रहे, न सत्ता के निकट। होते तो जनसंपर्क और तिकड़मबाजी के इस दौर में हर शाम

काफी हाउस में हम जैसे निठल्लों के साथ नहीं बिताया करते।

पत्नी की मृत्यु ने उन्हें बेइन्तहा अकेला कर दिया था वे अक्सर उन्हें याद किया करते थे और इस कदर भावुक हो जाते थे कि उनकी आँखों की कोरों से आँसू झलकने लगते थे। अपने शरीर को चिकित्सकीय अनुसंधान के लिए देना एक तरह से उनका अपनी पत्नी के प्रति प्रेम और सम्मान की अभिव्यक्ति भी है, जो कैंसर जैसी बीमारी से मरी थीं, जिसका आज तक कोई इलाज नहीं खोजा जा सका है।

वह जितने उदारमना और सहज व्यक्ति थे उतने ही दृढ़प्रतिज्ञ भी थे। उनका जन्म पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गंगा के तट के मामूली से कस्बे मीरापुर के एक दुकानदार के घर 21 जून,1912 को हुआ था। उन्होंने किशोरावस्था में ही निर्णय कर लिया था कि वह लेखक बनेंगे। 17 वर्ष की आयु में उन्हें आजीविका की तलाश में घर–से दूर हिसार जाकर नौकरी करनी पड़ी और अगले 15 वर्ष वहीं बीते। इससे अंदाज लगाया जा सकता है कि उनके घर की आर्थिक स्थिति कैसी रही होगी। पर जैसे ही उन्हें मौका मिला उन्होंने नौकरी छोड़ दी। सन् 1955 से 59 तक उन्होंने अनुबंध पर आकाशवाणी में प्रोड्यूसर के रूप में भी काम किया पर यह नौकरी भी उन्हें अपने लेखन–प्रेम में अड़ंगा लगी। उन्होंने स्वतंत्र लेखन को कठिन रास्ता चुना। वह आठ से दस घंटे प्रतिदिन काम करते थे और यह सिलसिला कमोवेश 95 वर्ष की अवस्था तक चलता रहा। उनका अंतिम पत्र मुझे 2007 में मिला था।

विष्णु जी ने जिस परिवार में जन्म लिया वह आर्य समाजी था। यह किसी से छिपा नहीं है कि आर्य समाज में अंततः किस तरह की जड़ता, अतार्किकता और इससे भी बुरी बात यह है कि सांप्रदायिकता आ गई थी। मेरा उनके साथ लगभग 25 वर्ष (1977 से 2002 जब तक वह महाराणा प्रताप एनक्लेव नहीं चले गए) तक कॉफी हाउस का साथ रहा था। इतना लंबा कोई भी संबंध औपचारिक नहीं रह जाता है। मैंने विष्णु जी को कभी किसी मंदिर जाते हुए न देखा और न ही सुना। पीड़ा और संकट में भी उन्हें ईश्वर को याद करते नहीं सुना। मैं उनके अजमेरी दरवाजे वाले घर में भी गया था और पीतमपुरा वाले नये घर भी। उनकी किताबों के आसपास मैंने किसी भी भगवान की प्रतिमा या छवि नहीं देखी। पत्नी के असमय अवसान की पीड़ा से वह कभी मुक्त नहीं हो पाये थें। जीवन की सारी कमाई से किसी तरह बनाये मकान को लेकर भी वह वर्षों परेशान रहे थे। इसे एक ऐसे किरायेदार ने घेर लिया था जो न उन्हें किराया दे रहा था, न ही मकान छोड़ रहा था। इस व्यक्ति का संबंध एक राजनीतिक नेता से था और संसद में प्रश्न किए जाने के बावजूद उन्हें मकान आसानी से नहीं मिल पाया था। इसलिए मैं नहीं मानता कि ईश्वर और भक्ति में उनका विश्वास रहा होगा। पर मैं यह जरूर कह सकता हूँ कि साहित्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ईश्वर के प्रति भक्ति से कम नहीं थी और इस भक्ति को उन्होंने जिस एकाग्रता से किया वह अतुलनीय है। परम भक्ति में न

कोई अपेक्षा होती है, न प्रतिदान।

विष्णु जी की छवि एक खाँटी गांधीवादी की थी। जो ईश्वर में विश्वास करता है और मानवता, समानता व सद्भाव के, धार्मिक न भी कहें तो भी, परंपरगत आदर्शों से प्रेरित और संचालित मूल्यों से जीवन को निर्धारित करता है। जो परंपरागत जीवन शैली को महत्व देता है और अपने रहन–सहन में मितव्ययी व सरल है। उनकी वेशभूषा इस भ्रम को मजबूत ही करती थी। आप सपने में भी अनुमान नहीं लगा सकते थे कि यह आदमी विचारों में इतना अग्रगामी, इतना रेडिकल हो सकता हैं। अपने शरीर को चिकित्साशास्त्र के अध्ययन के लिए दान करना एक झटके में ईश्वर, धर्म, जन्म–मृत्यु के चक्र को खारिज करना है। और यह काम कोई शुद्ध गांधीवादी नहीं कर सकता। निश्चय ही विष्णु जी में गांधीवाद में जो कुछ भी उत्कृष्ट हो सकता है, था, पर वह उससे आगे बढ़े थे। वह उन तथाकथित साम्यवादियों से भी कहीं अधिक उदारमना, प्रगतिशील और तार्किक थे, जो अपने धार्मिक संस्कारों और परंपराओं से मुक्त नहीं हो पाते और जनता व संस्कृति के नाम पर धार्मिक जड़ता तथा अंधविश्वासों को बनाए और बचाए रखने में उदाहरण बनते हैं।

– पंकज बिष्ट

(साहित्यकार)

कथादेश पत्रिका से साभार

English Section

Editorial

Mrs. Rekha Nigam
(Lecturer in Deptt. English)

The havoc caused by the assail on iconic hotel Taj keeps on striking me and reminds those unforgettable moments. The globally renowned Taj Hotel just opposite to the historic Gateway of India was not lucky the third time. The heritage hotel which bore the brunt of the 1993 serial blasts and again in 2003 at Gateway of India, now played the mute witness to one of the bloodiest seize situation ever to be undertaken in the country. It was Nov. 26, 2008. India and world have not all been through hell and back. Hotel Taj was busy with its normal schedule, terror struck and changed our history. The audicity of the attack stunned the whole world.

Who were these men and what was their motive? Certainly they wanted to break India's financial nerve centre that never sleeps to a complete stand still.

The attack was the result of meticulous planning. It was clearly a dramatic and altered tactic on the part of the terrorists from usual bomb blasts. The large terrorists infrastructure based in Pakistan has significant links to Taliban. The two day long seize of Mumbai by over two dozen terrorist killed many people and turned the commercial soul of India into an island of fear. It was a part of global Jihadi conspiracy to turn the region into a cauldron of violence and establish a pan islamic net work over Asia. A key catalyst of this plan is Pakistan and its agencies. For this cabal. Mumbai has been on the top of the list of targets in India only because of its economic importance.

The attacks on Hotel oberoi, Nariman point were unprecedent in nature. It was an audicious attack and a challenge to the nation. By maintaining calm and unity we must resolve to break the back of India's enemy. It was different in nature and form. It is not that we are alone but United Nations Security Council which endores special law to tackle the scourge, is also with us, In the causality foriegn

tourists were also there. It is a global menace. Reconciliation between India and Pakistan is an important feature in foreign policy architecture of Obama also.

The fight against international terrorism will not be won until Terrorism against India ends permanently. Will India be able to do that after such horrific attack? The entire country should rally behind the security forces and pay tribute to gun battle with terrorists. I pay tribute to Hemant Karkare, the chief of ATS and other senior police officials who lost their lives in confrontation with terrorist. I also salute Major Sandeep UnniKrishnan of NSG and Omkar Chander, a commando of elite force. Their valour and sacrifice was praiseworthy.

There was a time when India was a laboratory of political and economic ideas from planning to free enterprise, socialism to liberal democracy. Today it has become a play ground for a wide variety of Islamist terror tactics and methodologies. Now it has become jihad's Disneyland, a happy hunting ground. So we should try to make our nation terror free.

India does not lack courage and where withal to wage war on terror. It is political policy that lack determination. A fitting tribute to the heroes of Mumbai would be only when we pledge to abolish this problem for ever.

At last again I pay tribute to those immoral souls and I urge to vigilant citizens to eradicate this problem. Really the brutality had left the whole country reelig under its effect.

Discipline - Need of the Hour

Mrs. Archana Tiwary
(Teacher of English Deptt.)

Discipline is the training of the mind, the body to produce self control and obedience. It is a social value. which one cultivates through instruction and example. Children givevent to their feelings. They shout, cry and cause destruction to show their anger hunger or frustration. Gradually as they grow they learn from their parents, their teachers to express their feelings in a socially acceptable manner. They taught to obey, follow the code of conduct, to differentiate what is right or wrong. Discipline is thus an acquired personal and social virtue.

Discipline is required in every walk of life and at every age for a smooth and efficient sailing. Order and peace can not prevail in the absence of discipline. Progress of system whether material or manual will come to a grinding halt in its absence. But at the same time it should not - be assumed that discipline is only a negative virtue always prescribing 'donts'. On the contrary it is a positive quality, a prime necessity for ourselves and for the society and to the greater extent for the country. In discipline in our diet schedule spoils our health, indiscipline in our behavior, leads to quarrels & conflict, indiscipline in obeying traffic rules endangers our life.

However I am sorry to say that indiscipline has become the order of the day the world over. It is spreading its fangs at a rapid rate and is posing a serious-threat to the humanity. This is really a sorry state of affairs and doleful tale to tell. The parents and teachers should undertake it as their moral duty to inculcate the norms of discipline in every child if they wish to see their progress and of their country at large.

Moments Gone Cherished Forever

Mrs. Archana Tiwary
(EnglishTeacher)

As I walked into the classroom
A wave of shush travelled for and wide
They rose to wish me morning
Some smiles they tried to hide.

Some glared at me with pleasure
Others stared in dismay
May she fall and break a leg
Was all, remaining kids could pray.

I was trying to hide the pressure.
Acting well to be composed
I am the one in charge here so
Take out the books and open to prose.

There was a sudden change of land scape
The faces turned rusty pale
Yet another teacher of the yester years
Have come out for my sake.

And then I thought for a moment
The blunder I have made
What my teacher did some decades ago
will take a million years to fade.

I tried to bury the hatchet
Trust me, I did it really fast
I took some time realise only
When one whole year had passed.

The kids were more than friendly
They spoke like I was one of their own
I wish and pray to God again
Only the time so fast hadn't flown.

A Sweet Dream

- Shubham Gupta
XI 'B'

Dream, dream sweet dream,
I take you into emotion' & stream,
Every day were ordinary for me,
but yesterday was very specifice for me.

I worked and read in the whole day,
I played in garden with a lot of clay,
but when I was going to my bed room's way,
I saw my pet was eating the neighbour's hay.

When I slept on my beautiful bed,
Just then an idea stuck in my head,
I found my self in a beautiful place,
there were happing a horse - race.

Every horse-rider, riding the way, which was show,
they all wanted to get the royal throne,
with the throne they also got the princess of the state,
and a glorious sword in the marriage date.

But the princes loved to a potter,
they could also die without each other,
the potter intelligent as well as I,
the princess was smiling with a lovely shy,

When the king heard about the potter
he became eager to kill him like a hunter,
I helped the potter to reach the palace,
I don't know, but I felt very jealous.

The king sent his army with weapons,
but I'was not worried, I had some guns,
In his army some younger and some elder,
But I fight with them as an experienced warrior.

After the marriage they lived together,
In the morning, I got some rebuke with my father,
I know very well that I am late for the school,
But every one knows that I am always so cool.

I saw my neighbour is beating my pet,
So, I am going to make him ass with a net,
If I saw another dream, I ll discuss the chase,
But what I do? I am not sleeping well now a days.

The Grasshopper and The Ant

- Govind Kumar
8th 'B'

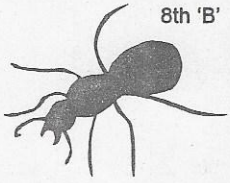

The Ants were spending a fine winter's day drying grain collected in the summer time. A Grasshopper, perishing with famine, passed by and earnestly begged for a little food. The Ants Inquired of him, "Why did you not treasure up food during the summer" He replied, " I had not leisure enough. I passed the days in singing" He then said in dersion "If you were foolish enough to sing all the summer, you must dance supperless to bed in the winter" It is thrifty prepare today for the wants of tomorrow.

Think Before You Act

- Hitesh Jha
XI 'B'

Before you accuse or abuse,
ascertain the truth
Before you lame or betray,
Build the character
Before you critize or condemn,
Clarify the doubts
Before you dispute or dissociate,
discuss the issue
Before you enforce or eradicate,
exchange the thoughts
Before you find fault or fight,
foresee the result
Before you gossip or grumble,
gather the evidence
Before you hat or harass,
harmonies the relations
Before you insinuate or insult,
improve the attitude
Before you kick or knock
know the cirumstances
Before you linger or litigate,
listen to the opponent
Before you mock or misbehave,
modify the approach.
Before you negate neglect,
normalise the condition
Before you xerox or x ray,
examine the originals
Before you yap or yell,
yearn for the peace
Before you zig zag or zitch,
zoom for the eternal bliss

We must look before we leap as the action always sheak louder than words.

Value of Time

- To realize the value of four years :
  Ask a graduate .
- To realize the value of one year :
  Ask a student who has failed in final exams.
- To realize the value of nine months :
  Ask a mother who gave birth to a still born.
- To realize the value of one week :
  Ask an editor of a weekly newspaper.
- To realize the value of one hour :
  Ask lovers who are waiting to meet.
- To relize a value of one second :
  Ask a person who has survived an accident.
- To realize the value of one milk second
  Ask a person who has won silver medal in olymphics.
- To realize a value of a friend : lose one

Knowledge is Power

- Vikas Singh
XI 'B'

"Desire for knowledge is path of hour, desire for wealth is the path of designer, wealth is the chain that slaves wear, knowledge is kingly crown."

Knowledge is basically devine inspiration of God. God created human with equal brains but knowledge is utilization of brain & day to day addition of knowledge makes all the differences. Knowledge gives confidence to face this competive world. It is the Knowledge which makes all difference between floating and sinking of person in this competitive world.

Today the people who reach the zenith are no exceptions. It is only through their day to day knowledge aquired though preservance.

Knowledge person can take the challenges in his life, in more factful manner. He applies his astute knowledge & intelligence to solve his problem.

History it self tells that a knowledgeable. person commands respect. In the court of Akbar, Birbal acquired a supreme position because of his knowledge.

"The resonable man adapts himself to world. The unreasonable man persists in trying to adapt the world to himself. There fore all progress depends on the unreasonable men.

" The pen is mighter than the swords holds good in this regard. That means pen which is Symbol of the knowledge holds more powerful position in comparison to sword.

Dr. Abdul Kalam, father of India missile technology has made India feel so proud & nuclear self sufficient This is because of his knowledge.

In to days world of (I. T.) internet is one of the richest source of Information through which we can acquire all the information from every corner of world and increase our knowledge.

Half learnt knowledge is always dangerous. Little Knowledge does not produce any positive result in the society. So atleast I want to say.

" Learn something, for when Luck is Suddenly gone, Knowledge remains & never leaves men alone"

Our Duty Towards Bharat Mata

- Alok Kumar Kushwaha
XI 'B'

We are Indians. India is our mother land. We should be proud of being an Indian. We have grown up in India's soil. It has given us water to drink. It has been our play ground. We are indebted to it. So we have some duties towards it.

If we want to see our country prosperous and self-reliant, we must perform our duties honestly.

Rudyard Kipling has said -

" Land of our birth, we pledge to thee our love and toil in the years to be; when we are grown and take our place, as men and women with our race."

To save the honour of India, the following qualities are necessary. ***Patriotism, Health and Good Education.***

We should be patriot like ***Bhama Shah, Netaji Subhash Chandra Bose and Laxmi Bai, the Rani of Jhansi.***

Bhama Shah offered a lot of money to Rana Pratap unasked for to save the honour of Mewar. Laxmi Bai sacrificed her life fighting far the freedom of our country.

We must be healthy. Action does not lie in thought until and unless we are healthy we can not be a good citizen or a patriot. Health is the basis of all good qualities.

Education moulds character without good education we can not be good. Education enlightens us. It removes our ignorance. which is the base of many evils. If we are properly educated, we can know our duties. Without performing our duties sincerely, we can not save the honour of our mother land Good education makes us disciplined and united.

We should pray to God to :

" To teach us to rule ourselves always controlled and clearly night and day. That we may bring, if need arise; No maimed or worthless sacrifice."

- Rudyard Kipling.

If we are united, healthy and disciplined, our country will progress. We must know well - **" Who lives if India falls?"**

We are Indians and the service of **Bharat Mata** is our priority. We should never quarrel with each other because of religious differences.

We call our country **Bharat Mata**, it is our greatness. Thus we can serve our **Bharat Mata**.

Mamallapuram : Shore Antiquities

- Abhay Singh
IX 'B'

Mamallapuram is a town in Kancheepuram district in Tamil Nadu, earlier also known as Mahabalipuram. It is a 7th century port city of the south Indian dynasty of the Pallavas, located around 60 km. south from the city of Chennai. It has been named after the Pallav king Mamalla. It has various historic monuments built largely between the 7th and the 9th century. and has been classified as a UNESCO world Heritage site.

The ancient sculptures at Mamallapuram can be seen at mainly three locations, the Shore temple, Arjuna's Penance and the Pancha Rathas. It is believed by some, that this area served as a school for young sculptors. Even today, here is a modern school for sculpture that has been set up by the state government. The different sculptures some half finished, may have been example of different style of architecture, probably demonstrated by instructors and practised on by young students.

Arjuna's Penance is a relief sculpture on a massire scale extolling an episode from the Mahabharata. The Varaoha care Temple is a small rock-cut temple dating back to the 7th century. The Shore Temple is a beautiful symbol of this site. A structure along the Bay of Bengal with the entrance from the western side away from the sea, it was reconstructed after being damaged by a cyclone. The Pancha Rathas (Five chariots) are five monolithic pyramidal structures named after the pandavas (Arjuna, Bhima, Yudhisthira, Nakul and Sahadeva) and Dropadi. An structurl aspect of the raths is that, despite their sizes they are not assembled-each of these is craved from one single large piece of stone.

The tsunami that resulted from the 2004 Indian ocean earthquake removed sand deposits from these structures and revealed evidence of an ancient 7th century city. Following this, the Archaeological Survey of India sent divers to begin underwater excavation of the area on February 17, 2005.

The Ultimate : OSCAR

- Adarsh Kumar
IX 'B'

'Ella Pugan humiraivanuke' (All glory is to God - The Tamil lines in Rahman's accceptance speech capture the essence of his approach to work. spiritvality is the corner stone of the maestro's life and music, the influence that defines him. I know you all have enough stuff about Rahman Here I, an to make you aware of Oscar.

First Oscar award was given is 1929 what are the Oscars?

An Oscar is the name given to the annual award given by us based Academy of motion pictures Arts and science for achievement in film Industry. The awards are given in 24 annual categories and 6 special categories.

When was the first Oscar given?

The first awards were given in 1929 in a low publicised event hold in Hollywood Roosevelt Hotel attended by only 270 people the first award received very little media attention because the recepient had been announced three months earlier.

Who designed the statuette?

The design was supervised by Cedric Gibbons, head of MGM's art department. The statuette depicts a naked knight holding a sword on top of a reel of film. The reel has five spokes, signifying the five Original branches of acedemy (Producers, directions, actors, technicians and writers).

Why is it called the Oscar?

The nomenclature is a debated issue. In an international view Bete Davis claimed she named the Oscar after her first husband.

Does the winner own the statuettes?

Since 1950 the statuettes have been legally encumbered by - the requirement that neither winner nor their heirs may see the statuette with out first

offering to sell them back to the Academy for if a winner refuses to agree to this stipulation the academy keeps the statuette.

Who are the members of Academy?

The academy does not publicly disclose its entire membership, but admits to having over 6,000 voting members who represent 15 areas of film making.

How does the nomination and voting process take place?

Members from each of the branches vote to determine the nominees in their respective categories actors nominate actors, directors nominate directors and so an - in animated and foreign language categories nomination are selected by a vote of multi-branch screening committees. All voting members are eligible to select the best picture nominees.

The nomination ballots are then mailed to active members is late December and the final nomination are announced in the third week of January. The final nomination ballots are re-sent to the members for voting and each member can vote. After the tabulation of final ballots only two partners of price water house coopers know the result until the envelopes are opened onstage.

What is the eligibility criterion?

A movie has to be of feature length (over 40 minutes) and must open in the previous calendar year. It also has to be released in a commercial motion. Picture theatre in los Angeles county where it has witness paid admission for at least one week. For the foreign firms category other countries are invited to submit their best motion picture selected by an organization, jury committee that should include people from the film industry.

Amazing Facts

- Shashank Kumar
IX 'A'

1- A single drop of blood contains about 250 million **red cell** and over 30,000 **white cells**. Red cells wear out quickly and everyday the body makes about 2.5 billion new ones to replace them.

2- An adult's **small intestine** is nearly 6 meters long and 2.5 cms. wide. Travelling at top speed, food normally moues through it at about 2 meters/hour - slower than a snails pace.

3- **Bacteria** cannot tolerate Oxygen, because they are not part of the Earth's ancient atmosphere. They lived in black mud below marshes or at other places without Oxygen. They made food by chemical reactions and do not rely on sunlight like all living things.

4- The **Altai birch mouse** which lives in Siberia, is only awake for 3-4 months of the year. In the extremely harsh climate, the birch mouse hibernates from early September to mid May. It loses about half its weight during hibernation. It normally weighs only 12 gms.

5- The copyright to the song "Happy Birthday" was bought over by Warner Communication for $ 28 millions !

6- Animal such as the deer and horses have bacteria in their digestive system, that allows them to digest grass and leaves. Our ancestors once had these bacteria too, and an attached "appendix" to the intestine.

Thanks Ma !

- Abhay Dwivedi
VII 'B'

Thanks Ma, for giving me birth.
To make me a part of this beautiful earth
Thanks Ma, for providing me the best education
You carried your responsibilities well and with devotion
You scolded me when I went wrong
But thanks Ma ..... for hugging me again
And not keeing the distance for long
Thanks Ma, for helping me to become strong
Thanks Ma, for giving me a proper name
So that I can earn both respect and fame.
Thanks Ma, for criticizing me and being loud
When I become a lot too proud.
Thanks Ma, for being the best mother.
I feel proud to call you "Ma" and being my creator.

Columbia Numerology

1- Total Astronauts : 7
2- Launch Date : 1+1 = 7
3- Duration : 16 Days = 1+6 = 7
4- Kalpana : 7 letters
5- Date of Birth : January 7th, 1961
= 1+7+1+9+6+1 =25= 2+5=7
6- Her Age : 43 = 4+3 = 7
7- Accident took place Just 16 min before landing : 1+6 = 7
8- Indian landing Time : 7:45=7+4+5=16=1+6=7
9- Indian time last commu
Nication with NASA : 7:27 = 7
10- American time of
Columbia's Disaster : 9:43 = 9+4+3 = 16 = 1+6 =7

Impact of Western culture on Indian Youth

- *Alok Kumar Kushwaha*
XI 'B'

People in the age-group of 18-25 years are categorized as youth. Youth is a very important phase in one's life.

During this period, man is full of energy, vivacity and enthvsiasm. Youth emanates creativity, freshness and raw energy. The way of the youth energy is harnested determins. He future of the society. Youth has certain features which are not found in the other stages of life. It is very different and has an independent existence. A sound youth is the stepping stone for a healthy society. Today's youth is very different from the earlier generations.

During the 70's the Indian society was gradually opening up and was being influenced by the out side world. The Indian youth started grooming himself and behaving like his western counter parts. There was prevalent use of medicinal drugs and hippy culture was commonly seen among the young. With the globalization India becoming an upcoming technology giant, the hippy culture of the 70's changed into the yo-culture of today. But at the same time, the Indian youth has become much career oriented, taking up part-time jobs while study has become the want of today. The youth have changed the taste of fashion, hip-hop music has become favourite; pubs and discos are crowded. It is common to see the people wearing western styled clothes, piercing their body-parts and sporting tattoos all over the body.

Even the society has become much open, due to which the fast bykes, fast food, branded clothes have become every household name. The young lad next door can put any body to shame with his knowledge of gadgets and the technologies.

But it is not correct to say that the Indian youth has become fully westernised. Even today he enjoys Dandia, Garba on Dushera and other Festivals, takes pride in wearing ethnic dresses on special occasions.

So today's culture is a blend of western and Indian values. At the same

time, it would not be wrong to say that the traditional values are suffering. On the plea of openness, there is change in the behaviour of youth.

Their way of showing respect to elders has changed. He is reluctant to touch the feet of elders. He has become very ruthless regarding his career. The culture has become very stressful leading to in crease in the number of suicides, as he is not able to cope up with the aspirations of the society of tomorrow.

For a healthy society. What we need is the young population who should be rational in their thoughts and their attitudes but at the same time should not forget age old time tested values of society-

Tennyson says "old order changes
yielding place for new. "

So let the youth culture be the successors of Indian foundation :-"

Isn't it Amazing

- Aditya Pratap

VIII 'A'

1- The chameleon's tongue is as long as its body ! It swiftly shoots out its tongue to capture insects for food.

2- Crocodiles cannot tear their meat. They just hold their prey and spin around till the part twists off and then just swallow it.

3- Turtles have been on mother earth for more than 180 million years !

4- All the data contained in the DNA would fill a 1000 volume encyclopaedia.

5- If all the blood vessels in the body were strainghtened out placed end-to-end, they would be 100,000 miles long !

6- The Chinese guarded the secret of making silk for 3000 years Anyone found revealing the truth would be put to death as a traitor !

7- People born in the month of January are believed to be steadfast and firm. Nothing can shake them once they have made up their minds.

Memories- Science conclave - 2008

Scientific innovations and discoveries of the last 2-3 centuries have largely shaped the world, we live in today. The culmination of 20th century has brought about an aftereffect of the large scale destruction and demolition of human values through the two world wars. But the youth is still not interested towards research of basic sciences. Proceeding further in this way, Indian Govt. has made an urgent call for directing and motivating students towards research programs. as "importance of science is not just obvious, its imperative." Thus to facilitate them to equip themselves with latest developement being made in science, Nobel laureates as well as foreign experts are invited to interact with young minds.

As the first initiative step, the first National Science Conclave of Nobel Laureates Convened during December 15-21, 2008. At Indian Inst. of Information Techno., Alld., a niche information school.

The city Allahabad has been known for confluence of knowledge, power and Nature in forms of three rivers- Saraswati, Jamuna and Ganga. It is the Oxford of East. In past, this city has given birth to great and eminent personalities of India- Pt. Jawahar Lal Nehru, Rajiv Gandhi, Lal Bahadur Shashtri, Prem Chand, Meghnad Saha etc. and list contains lots of more. Now, this city is witness of first conclave in India. We all nominated seventeen students and Acharya Sh.Hemantji, to attend this tremendous program, started for Alld. on 14th Dec. at 11 a.m. In evening, we reached Alld. Bus Station at 7 P.M and we found the bus of institute waiting for us outside the station. The venue was 12 Km. distant from station. We were tired due to have a long roadways journey. We just got fresh and had dinner, available there. I was resting in Boys Hostel-I room 144. Before it, we had got our identity cards made on Register. Counter. Feeling the atmosphere favourable, we informed about ourselves to our parents. Whole night, I could not sleep for a single minute, thinking about the next morning.

In daily schedule, the very first start of day was with breakfast and we enjoyed first breakfast very much. I recollect memories that it was south-west food theme based breakfast containing Idli-Sambhar and others. At 10 AM. the

flag was off with Nobel Prize Winner Prof. Tannoudji, Scientists and Director of Institution - Dr. M.D. Tiwari.

First lecture was by Prof. Claude C. Tannoudji, a Francise Scientist and Nobel Laureate in Physics for " Developement of methods, to cool and trap atoms with LASER. in 1997.

Afterwords a Russian Scientist Prof. Slavnov told about "Super Computer Theory", Afterwards we came back to Hostel and had Lunch. After Lunch, we rested in rooms and then reached comp. center- II at 3 PM. There we all students who were in XI class and grouped as "INSPIRE". Students, had informal interaction with Laureates. That very first day, Prof. C.M. Bhandari told us how Physics developed in modern from. He told us the concept of "Teleportation". Based upon Pauli's exclusion Laws.

After such grave and conceptual meeting, there was the program of Kuchipudi Dance by Padamsri Dr. Sobha Naidu and Odissi Dance by Padmasri Madhavi Mudgal - the cultural programs for removal of mental tress of whole day. And after dinner the daily schedule ended.

Next day, Lecture was by Prof. Martin. L. Perl, Laureate in physics for splendid work on discorvery of Tau leptons. He conducted a message to " INSPIRE" students- " I have been in chemical engineering and then physics. But this is the best time for working in Technology, engineering and research. Many fields have opened up with new knowledge and new visions. There are many invention the world needs. There are many problems to solve".

After Dr. Perl, there was talk by prof. Jerome. I Friedman, who was from MIT. Cambridge USA. He was awarded with Nobel prize in Physics for "Pioneering investigation concerning deep inelastiao scattering of electrons on protons and bound neutrons."

I was much fascinated after attending lecture of Prof. Sir Harold. W. Kroto, a wonderful personality. He was awarded with Nobel prize in 1996 for the "Discovery of Fullereves" in Chemistry. Habitually, I like and indeed, fond of Chemistry. He created a different kind of intense love with Chemistry. I remember what he had said-"

"If the decline in hands-on Science education is not redrssed, I doubt that

we shall survive the 21st century."

His lecture is full of humour-

"Although knowledge can't necessarily guarantee wisdom, common sense suggests that good decisions are an unlikely consquence of ignorance!"

-Harold Kroto

We there obtained a fantastic and unforgettable opportunity to see padmsri Hema Malini dancing Ballet, live. In daily eve. cultural programs we also heard and enjoyed the Dance performance by Daksha Seth a famous artist as well as by Padmasri Shovana Naraina. Some lovely eves also passed with Gharal performances by peenaz Masani, Bhupinder-Mitali and Anoop Jalota.

On 20th Dec. we enjoyed the Alld. City tour as well but it was unfortunate not to have many friends while visiting Sangam. We had ample sites of Alld. Fort, Anand Bhavan Planetorium. Alld. University and Sangam. Every nook and corner of city is Landmark. Turbulent history lays every where.

After attending such pleasing and incredible national program, when I returned home, for some days I felt some what missing in my routine. Really, the poet's feelings are justified-

"Dreams, we see, we Love,
We forget in few days".
But visions, we look, we accept,
and won't forget through life."

I thank to I I T- for organising the program and inviting us - the young minds for interaction with eminent scientists. I won't be able to forget this scientific innovative tour through out my life.

Sachin Tendulkar - Inspirational Icon

- Aditya Pratap
VIII 'A'

Sachin Tendulkar, the brightest star in the world of cricket, has achieved his greatest prices with his intellectual and cricketing brain he dreamt a world of superstars and great triumph and he achieved it -

His Childhood :-

Sachin Ramesh Tendulkar was born on 24 April 1973 to a middle class family in Mumbai. His father Ramesh Tendulkar was school teacher and a Marathi Novelist. He was named after his family's favorite music director, Sachin Dev Burman (father of RD Burman).

As a child Tendulkar loved to play tennis more than any other game. It was his elder brother Ajit Tendulkar, who motivated him to play cricket. Young Sachin later found his interest to become a fast brother. However his height made him the batsman. At the age of 10 he walked to the field at 6 am with a cricket bag bigger than him for the practice. At the age of 11 he moved with his paternal uncle to get trained in cricket by the most renowned coach Ramakanth.

In the world of Cricket :-

Sachin Tendulkar scored a century in his first debut in Ranji Trophy, Dileep Trophy and Irani Trophy. He is the only player to have owned credit so far. He made debut in ODI and International Tests at the age of 16 against the fiery cricketers of Pakistan like Wasim Akram and Waquar Younis. He thus made his mark as the youngest Indian cricketer to play in an International Match.

Sachin has been 'Man of the Match' 11 time in Test matches and 'Man of the Series' twice against Australia, His physical peak was seen through the years 1994-99. He is the only player to be twice highest scorer in the World Cup - 1996 & 2003. He continued to do his best. his name itself strike terror in the heart of the best bowlers all around the world. He was soon hailed as the master blaster after the end of the legacy of Vivian Richards.

Sachin went through a chronic back problem in 1999. Despite the problem he scored a century. The same year during the World Cup Tendulkar's father away. He flew back to India for the final rituals, but with the sad desmise in his thoughts he did not let India sink the score. He scored a century unbeaten 140 off 101 balls against Kenya.

Today Sachin is the owner of a number of records. He is the highest run scorer in ODIs and test matches. He has also recorded the most test and ODI centuries. Sachin is fourth highest 6 hitter in ODI after Jaisurya, Afridi and Saurav.

After all these records, Sachin has never been arrogant. Someone has said that :-

The tree with ripe fruits, is always down to the earth :-

The saying exactly fits on Sachin. That's why he is called the God of Cricket'. After knowing all this the tongue natural says that 'God has created him in leisure.

Jokes

(1)

Deepak - I have to act like a stupid in the play. How to do the rehearsal.

Mahesh - There is no need to rehearsal. Just appear what you are.

(2)

Doctor - Raju, how did you break your tooth ?

Raju - Doctor, you said I was ruffering from iron deficiency. So I tried to chew iron rod.

(3)

Teacher - You have written the essay, "My Dog" in the same manner as mohan has written.

Student - Right Sir, this is because we are brothers and spare the same dog.

Six Hours At School

- Piyush Gupta
VIII 'B'

All day long the teacher's try
To drill Knowledge in my mind,
But though in the classroom I am seen,
My mind is at home in bed.

I Know not what the chemistry teachers say,
of metals reacting with air
Are we doing exercise 13 or 14 in Maths
I neither Know nor care.

Hindi, I guess, has to be done
Poems and authors galore,
Physics, I do not rather speak of it,
civics, I find a great bore.

Biology done from amoeba to man,
does not increase my knowledge store.
And do adjective clauses come after nouns
or do they come before ?

Art- ngh !! Don't mention the word,
Literature - a dreaded foe,
And however hard the teachers try
My knowledge just doesn't seem to grow.

If you want to be great

- Adarsh Tripathi
VIII 'B'

If you want to be great,
Never depend on your late,
If you want to be intelligent and
wise,
Always get up before sun rise.
If it great suffering more race,
Bore them with a smiling face.
If you want what you seek,
Love all whether strong or weak.
By above mentioned ways,
Shine like the spring rays.
sheem bed rabits at my rate,
Be sure you shall be great.

Daughter

When son is born,
Every one is happy
and dances with fun.
But when a daughter takes birth,
Everyone is sad,
Their faces are down
and their spirits are shattered
Is it a sin to be a daughter's mother ?
Did I ever asked you to bring,
me in the world ?
You too were a daughter.
even, Ganga was a daughter.
Why do we call Ganga, the mother Ganga,
and this earth, the mother earth.
Where as we treat our own daughters so cruelly ?
She washes clothes of her brothers.
She listen to the scolding of her father,
and at last, she goes to her in laws places.
She becomes a servant,
and only for some money or things,
She is burnt.

अंग्रेजी नाटक में नेता की भूमिका में चि० अंकुर

गीत गायन प्रतियोगिता में चि० पार्थ निगम को पुरस्कृत किया गया

वार्षिकोत्सव में लगी इतिहास-भूगोल प्रदर्शनी में छात्रों ने राष्ट्रपति भवन का आकर्षक मॉडल बनाया

मेधावी विद्यार्थी

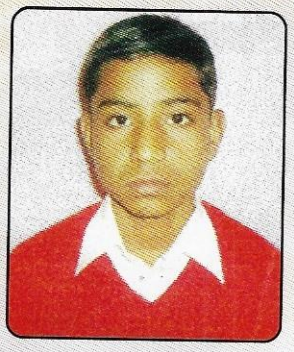

रोहित यादव (६क)

87 % अंक

सौरभ कटियार (7ख)

87.14 % अंक

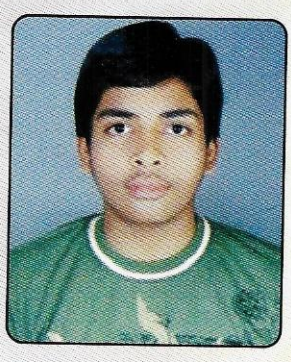

शाश्वत रंजन चौरसिया (8 क)

94.5 % अंक

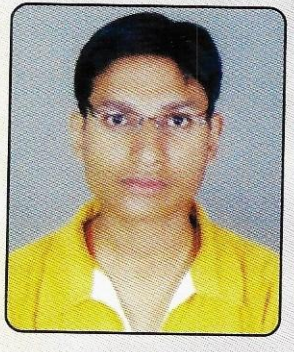

हिमांशु शेखर (9क)

85 % अंक

यश अवस्थी (10 ख)

84% अंक

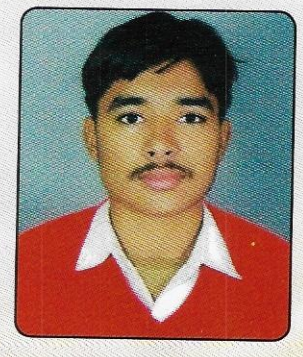

चि० रणविजय (12 क)

81.14% अंक

सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी

अनुराग अवस्थी (अष्टम ख)

१०० मीटर दौड़ में प्रथम, २०० मीटर दौड़ में प्रथम
तीन टाँग की दौड़ में प्रथम, लम्बी कूद में तृतीय

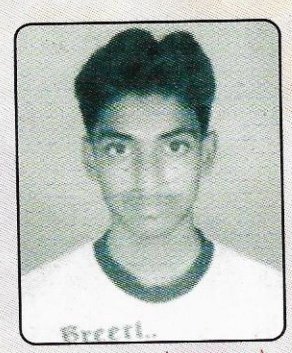

कुमार शानू (अष्टम ख)

१०० मीटर दौड़ में प्रथम, २०० मीटर दौड़ में प्रथम
४०० मीटर दौड़ में प्रथम, ८०० मीटर दौड़ में प्रथम
चक्का फेंक - द्वितीय, ४ X १०० मीटर रिले रेस में द्वितीय

दीपक सचान (अष्टम क)

१०० मीटर दौड़ में द्वितीय, २०० मीटर दौड़ में द्वितीय
भाला फेंक में द्वितीय, लम्बी कूद में द्वितीय, उछल कदम
कूद में द्वितीय, ४ X १०० मीटर रिले रेस में प्रथम

शशांक कुमार (नवम क)

१५०० मीटर दौड़ में प्रथम, भाला फेंक में प्रथम
ऊँची कूद में प्रथम, उछल कदम कूद में प्रथम
४ X १०० मीटर रिले रेस में प्रथम

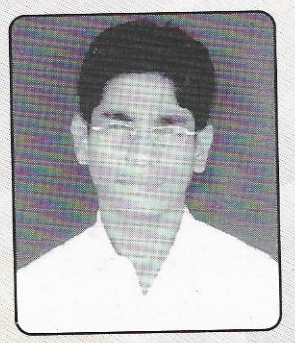

उत्कर्ष तिवारी (दशम ख)

२०० मीटर दौड़ में प्रथम, ४०० मीटर दौड़ में प्रथम
२००० मीटर दौड़ में प्रथम, १५०० मीटर दौड़ में प्रथम
भाला फेंक में द्वितीय, लम्बी कूद में द्वितीय
उछल कदम कूद में द्वितीय
४ X १०० मीटर रिले रेस में प्रथम

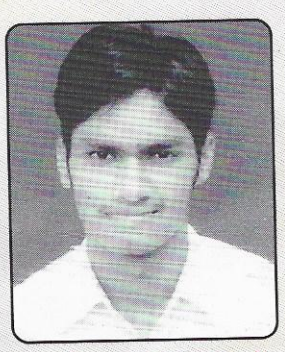

शशांक कुमार (नवम क)

१५०० मीटर दौड़ में प्रथम, भाला फेंक में प्रथम
ऊँची कूद में प्रथम, उछल कदम कूद में प्रथम
४ X १०० मीटर रिले रेस में प्रथम

१५०० मीटर दौड (लवकुश दल)

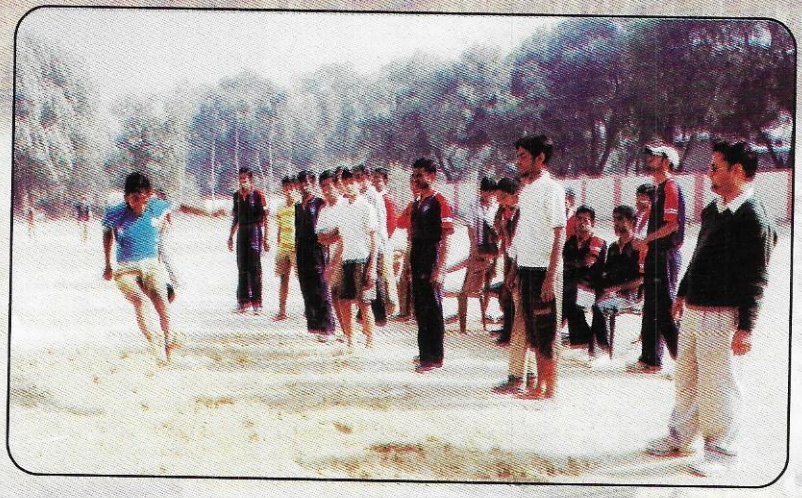

लम्बी कूद प्रतियोगिता

विजेता छात्रों चि० कुमार शानू, दीपक
तथा ब्रजेश को पुरस्कृत करते
आचार्य श्री राजेश जी

Place of Woman

- Adarsh Tripathi
VIII 'B'

O Woman !
Why are you so sad ?
Because in society your position
had in ancient time,
You are seen by hate,
But now your position is great,
You can take a lot of joy.
If you have any will,
you can to up to hill.
you recognize your worth,
Make a heaven on the earth.

Moral Education Based on 'Yoga'

Yogadharit Siksha is base of human development - Maharshi Padini.
Education is that which makes a man self reliant and selfless - Rigveda
And education without morality is just like dead body - Swami Vivekanand

In this way we found that the progress of a country depends on its citizen's decency. Self reliancy and selflessness is the result of a good and moral education. In the new age everyone wants to be educated.

There are two types of education :-

First - depends on practice.

Second- depends on theory.

The real education is that in which we learn about something and we also use that in life.

Old order change yielding place to new (Tennyson). The teaching method must be moral and constructive. It should be compulsory from junior to intermediate level because this is the subject in which one can learn the lesson of humanity and know the importance of discipline. Mahatma Gandhi impressed upon the teaching of moral education but our education boards have not followed it.

Thus if the country adopts a Yoga moral education, there will be no problem of unemployment, unrest and indiscipline.

Caprules of wisdom

- Adarsh Tripathi
VIII 'B'

A - Action speak louder than words.
B- Better alone than in bad company.
C- Cowards die many times before their death.
D- Doubt is brother devid to despair.
E- Example is better than Precept.
F- Forgweness is the Nobelest revenge.
G- Great hights attracts not the steps to them.
H- Hope is life's best music.
I- Ignorance is the curse of God.
J- Justice is blind, it cares nobody.
K- Knowledge is the key of success.
L- Law is equal for big and small.
M- Misfortune is the mother of invention.
N- Necessity is the mother of invention.
O- One should eat to live, not live to eat.
P- Patience is a plaster for all resources.
Q- Quarrels would not last long it wrong only one side.
R- Reading make the full man. Conference a ready man and writing an exact man.
S- Silence is golden.
T- There is no smoke without fire.
U- Unity is strength.
V- Virtue has its own reward.
W- Watch on you character daily.
X- X-mas is the birthday of Jesus Christ.
Y- Young man think old man and foils old man think young man are fools.
Z- Zeal is found mostly is fools but is fit for wise man.

Games & Sports

- Hitesh C. Jha
XI 'B'

Fast paced world, modern, society, busy lifestyle and un- bounded development. This is our world, our place where we feel at home, we want to do something in it, for it. Well, besides all this four fold modernization, when a small child asks his father or a bit older friend, he gets the answer that 'Who has the time to play outside ?' His fellows say, lets play video-games. This is another aspect of our society.

Nowadays, games and sports habits are declining as fast as the rate of development. We don't have time to play isn't it ? The advantages of sports and games are known to everyone, but, who has the time. Time is money, they say. Well, I say that health is wealth and the sports are best way to keep our body toned, fit and fine. Increasing diseases like blood pressure, diabetes are also due to the lack of games of and sports in our daily routine. The sport keep all our body parts moving, release tension and increase the mobility of our mind and soul and most importantly increase the sportsman's spirit, a competitive frame of mind and positive thinking in our mind and life. People generally think that these are only bookish qualities and remain with us only on the sports ground. But, scientific reports say, the people who indulge themselves regularly in sports routine are much more cheerful and tension free than the people who do not involve themselves in sports.

To be happy, to be cheerful. It is in our hands, whether we spent our time in watching TV or playing video-games which does nothing but harm us or we choose the other way, which keeps us fit and mentally stable for all our lives and keep prepared for all the victories and losses of life After all, the bottom line is,

"Health is Wealth"

Message for Youth

- Chandra Mauli Awasthi

Awake, Awake future of world awake.
Many glorious records you have to make.
Oh Youth ! awake but not to sleep again.
Your mother land is groaning wuth pain.
Be prepare to fight in battle of challenges.
Thou are expected to make remarkable changes.
World is mortal, your dreams are drops of dew.
Stop dreaming, days remained are very few.
You are not to fall in wild eyes.
Maker of destiny, make the world nice,
Stop to run after the rosy cheeks.
In mountain of success, climb up to the peak.

Fact to Remember - (Chemistry)

- Shubham Gupta
XI 'A'

1-	Most reactive Solid Element	: Li
2-	Most reactive liquid Element	: Cs
3-	Highest Electron-negativity	: F
4-	Lowest Electron affinity	: Noble gases (Zero)
5-	Highest Ionization Potential	: He
6-	Lowest Ionization Potential	: Cs
7-	Total number of radioactive elements in periodic table	: 25
8-	Element containing no neutron	: $^{1}H_{1}$
9-	Most abundant element of earth	: Oxygen (O)
10-	Rarest element of earth	: Astatine (At)
11-	Element having maximum tendency fo catention	: Carbon
12-	Lightest Element	: H
13-	Heaviest naturally occurring element	: 238_{U}
14-	Poorest conductor of current	: Pb (metal), S (non-mental)
15-	Amphoteric non-mental	: Si
16-	Metalloids Elements	: B, Si, Ge, As, Sb, Te
17-	Non metal having Highest M.P; B.P;	: Diamond
18-	Metals Showing highest Oxidation No.	: Ru, Os
19-	Element having highest tensile Strength	: Boran
20-	Coolant in nuclear reactors	: D_2O
21-	Best electricity conductor among metals	: Ag
22-	Best conductor among non Metals	: Graphite
23-	Liquid non-Metal	: Br_2
24-	Liquid Metals	: Hg, Ga, Fr, Eka
25-	Dry ice	: Co_2
26-	Most abundant gas in atmosphere	: N_2
27-	Smallest atomic Size	: H

Kanpur: A Journey From Manchestar To Dying City

- Pranav Tripathi
X - 'B'

KANPUR IN THE PAST AGE :-

Kanpur is called the 'centre of the world ' because Brahma organised 'Yogya' in Bithoor. That was the first beginning of civilization and religion in all over the world. Valmiki wrote Ramayana at Bithoor in Kanpur. Luv and Kush were born at Bithoor & Sita also lived for six year in Bithoor.

Bhitargaon temple is one of the ancient temples of India. It was made by Guptas at Ghatampur in Kanpur.

So the past of Kanpur is very glorious.

KANPUR IN THE MIDDLE AGE :-

Kanpur was the centre of revolution of 1857. Nana Saheb Peshwa, Tatyan Tope, Ajeejan Bai, Azeemulla Khan were the famous revolutionaries of Kanpur.

Peshwa defeated Britishers for many time. The English developed many industries in Kanpur. Britishers made Kanpur ' The Manchester of India; They established 'Swadeshi cotton Mill' which was the biggest mill of Asia.

Till 1985, Kanpur had become the centre of jute, cotton, sugar and textiles industries.

KANPUR IN THE PRESENT AGE :-

1985-1995 was that period in which Kanpur was going downwards. Many mills were closed. Innumerable people became unemployed. Many famous jute and cotton mills like J.K.Jute Mills, J.K. Cotton Mills stopped the production. In that way, it became the 'Dying City'.

RAY OF HOPE :-

But the year 2008 was just like a ray of hope for Kanpur. J.K. Jute and Cotton Mills started their production. The well - famous 'Elgin Mill' also started its production.

Kanpur rites are assure that in future Kanpur must touch the peaks of success.

Examination

- Arjun Singh
XI-A

God is a great examiner

We are all his students

The world is an examination hall

And life is an answer book.

The time alloted is three hours

First hours bell rings in childhood

The second is in an old stage

The bell of last hour is rung by God

The examination is over

The copy is snatched

Don't try to cheat

The examiner is everywhere

You must not loose marks

By wasting time and writing nothing

So you may not say

It was lengthy and time was short

If we fail we come back to the same hall

A new life once more and if we Pass and

Success.

Success

- Arjun Singh
XI-A

Try, try and try again,

If you want something to

Gain, no one can ever

Succeed, unless he saw a

seed, world tells its own

story, how come to its

Glory, it is summer,

winter or rain...

Try, try and try again.

Mr. M.P's Interview

- Shashank Shukla
VII - 'A'

Media	:-	What is your name ?
Mr.M.P	:-	M.P (Money Prasad)
Media	:-	What is your Qualification ?
Mr.M.P	:-	M.P (Master of Problems)
Media	:-	What is your favourite dish ?
Mr.M.P	:-	M.P (Making Profit)
Media	:-	Which state do you belong ?
Mr.M.P	:-	M.P (Madhya Pradesh)
Media	:-	What is your party logo ?
Mr.M.P	:-	M.P (Maro Peeto)

Motivations

- Anuj Shukla
VII - 'A'

Success

"Successful is the person who has lived well laughed often and loved much, who has gained often and loved much, who has gained the respect of children, who lives the world better than they found it, who has never locked appreciations for the earth's beauty, who never fails to look for the best in other of give the best themselves."

Excellence

"Excellence is the result of caring more than others think is wise, risking more than others think is safe, dreaming more than others's think is practical, and expecting more than others think is possible."

Mother

- Shashank Shukla
VII - 'A'

There is a simple word - MOTHER

M is for MOTIVATION provided by her which helps to conquer and look further.

O is for OBEDIENCE she commands. If you obey her you will not face hazards. The most important aspect of her nature is revealed by.

T It shows TENDERNESS for you and me.

H is for HARD WORK she puts in for us

E is for EAGERNESS to put us on the path of success.

R is for RELIEF her face shows when you achieve your goal.

Exam

- Shashank Shukla
VII - 'A'

My exams were near,
And I was full of fear.
I studied till late night,
for my answers to be right.
I was so frightened like ever,
Because I knew I was not clever.
I could not sleep a wink,
Just think, think and think.
If I would not pass,
I could be in the same class.
The next day was creepily,
And I was sleepy.
On the exam table,
I tried to be stable.
When I glanced up at the clock,
I had the biggest shock.
My eyes blurred, my head swam,
For I had sleep all through that silly exam.

An Awakening Call

- Shoor Veer Singh
XI - 'A'

O ! Lovely human being, don't go away,

like the river runs origin to bay.

Never breaking unity must make,

you be happy from which and world gay.

When you have no guide in your way,

follow the track that conscience say.

Huge hurricanes when you have to face,

here is a rock upon which you stay.

Don't be hopeless even at odd May,

against any evil when whole world lay.

You must pray to the almighty God,

That this pretty peace never delay.

Make world a house where happiness play,

Love, that bind, grow day by day.

In the light of peace then on this earth,

Love - tree will grow in place of hay.

Conscience

- Amar Deep Mishra
XI - 'B'

Make yourself rise,

from your conscience,

So Listen your innermost soul,

And save yourself from a hole.

Don't think success as the miles,

So make the way of straight lines,

Make the aim always singular,

And then you'll see victories regular.

Always look your aim as tower,

And achieve it only by your power,

If you think it to make avoid,

Then you'll feel yourself as devoid,

If there has come any tragic,

So make them away as magic,

Then you'll see the result in your access,

And get the secret of health, power and success.

Time is Great

- Surya Pratap Singh Chandel
IX - 'C'

Time is great. Time is past, present and future in human life. Time is the most powerful and the greatest entity in this endless, void and spanned universe to create, to nourish and to devastate that was the time when men and this earth came into existence. At the same time death and destruction : too have been incarr ated by a cruel hands of Time. Time is the key point in like.

We have to the time to make us witty, generous, sagacious and bold and time to make us vainglorious, traitor, character with the semblances of white points on the canvas to make sure that it would not enter the black dungeon. We have time to boast on the topics gained by the counsels of preachers but no time to place in our conduct and behaviors.

We have no time to stay to help some one in distress and severe penury. Time makes man constructive and we change the values of time with the process of time. Time gives everything. Time is great.

STOP being Indifferent and START being Proactive

- Chandrashekhar Jha
XI - 'A'

India is a democracy. Here the government formed is 'by the people of the people and for the people'. Still citizens of our nation are not happy with the system of the country, with the way government function by the callous attitude of municipality corporations towards civic amenities and public properties. But these complaints fall on deaf ears and everything remains as it is.

But have we ever thought this is the government. we voted for, we wanted them to take care of us. Yes, we brought them to power by using our voting power. A few days back. I was at a restaurant where I heard some youngsters talking to each other. One among them asked, "Are you going to Cast your vote this time ?" The other replied, "All parties are the same. Whosoever wins will-exploit our nation to make merry. It's no use voting for any. I am fed up of the system.

I want to ask them if they don't find a single candidate worth voting for. Why don't they themselves contest in election. Contesting in elections and entering politics is what educated youth keep away from. Their families also want so. Then these people complain that our politicians are illiterate and corrupt. If we want to realize our dream of a corruption-free and developed nation, our educated youth need to come forward and form a political party to their own.

Let's talk about municipalities now whom we always keep criticizing. But have we ever thought what does the word **Public property** mean ? Yes it is our property and isn't it our responsibility to take care of our property. Youth can find time during evening hours or on weekend and plan something constructive. It will

not only improve civic condition of your place but also connect you to your properties. Moreover, it will also inspire people around you to follow.

Progress of a nation depends on the quality of youth of that. Only those nations can progress where youth is self dependent and activily participates in the welfare of the society.

Forming a group of volunteers isn't difficult today when blows, SMSes, e-mail and wikis exict. After your group is formed you can arrange a get together where you can list all that wish to change around you to make your city or town better. Then proper action can be taken to fix the problems.

Believing in what you do is very important for every teammate to make an efficient team. Finance problem can be solved through donation and charity shows besides your own contribution. Of course, all these should be transparent.

There is a group of various professionals known as 'iFixers' who does not believe in complaining about urban problems. They rather believe in doing thing themselves. They take up civic problems and try to fix them. They formed this group this August in Chennai. Their first task was to fix the potholes on Velachary Road. They worked the entire night without any help from the authorities. A similar group has come into being in Delhi too. It's 'iFix' India. They plan to fix potholes on some street of the capital on sundays. They wish to inspire people to take matters into their own hands but in a constructive fashion. Bangolore too has a group of 'iFixers'

The trend is catching up fast. You can also be a part of it. Give birth to another such group in your city.

Don't think that a single person can do nothing. Remember, it takes only a few good people to change things for better. So, get inspired, get stared !

Scientific : Satellites

- Vivek Sharma
XI 'B'

The conditions in space are quite different from those on earth. Taking advantage of these conditions, scientists, collect information, conduct experiments or use the satellites for observation. **The Hubble space Telescope and the Chandra X-ray observatory are examples of observatories in space.** As you know, their advanced instruments produce much clearer images of distant stars and galaxies than earth-based ones because **The distorting effects of the earth's atmosphere are absent in space.** A space station is an orbiting laboratory in which scientist can live and conduct experiments in various fields, including medical science, **Biotechnology, materials science and Astrophysics In 1971, the USSR** launched **Salyut 1**, the first space stations. Other space station since then include 6 more of the Salyut programme, **Mir, Skylab and the International Space Station (ISS).** The ISS is the largest and the most complex of them all. Sixteen countries are participating in the ISS programme. The ISS is designed to be build a programme. **The Hubble Space Telescope is being redeployed using a robot arm after being serviced on board a Space Shuttle. Certain Satellites that develop a fault can be captured and serviced in space.**

Galaxies

- Vivek Sharma
XI 'B'

How are Stars distributed in space ? Astronomers have found that starts occur in huge groups. These groups are called **galaxies**. The stars in galaxies are held together by the gravitational attraction between the stars. Apart form stars, a galaxy also has huge clouds of gases (nebulae), from which new stars are born. A galaxy may have planets and other cetestial bodies.

"A component of the universe that has a huge group of stars and other celestial bodies bound together by gravity is called a Galaxy.

The number of stars in a galaxy can range from about a million to hundreds of a billion. It is also estimated that there are over 100 billion **(10^{11}) galaxies** in the universe, and astronomers are discovering more every day ! The galaxy in which our sun is located is called the **Milky way Galaxy**.

The milky way Galaxy is a large Galaxy. The diameter of the galactric disc is about **100,00 light-years**. and its average thickness is about 700 light-years. Our Sun is located about 30,000 light-years from the galactic center. How large is the universe compared to our galaxy ? For comparison, if we take our galaxy to be an 8-cm-wide disk then the visible universe would stretch 96 kilometers across !

The Big-Bang Theory

- Vivek Sharma
XI 'B'

The theory was proposed after **Hubble discovered that the universe was expanding**. If the universe is expanding now, it must have been much smaller billions of years back. And even before that, at the beginning, the universe must have a small single entity whose density was nearly infinite. Everything that we know of the universe was combined in this single entity. Since all galaxies are moving away from each other, to find out how the universe started, we can reverse the directions of the velocities of the galaxies and calculate the positions of the galaxies in the distance past. Calculations show that about 15 billion years ago, the whole matter of the universe was concentrated in a highly dense lump. What broke this lump. into smaller fragments and set the fragments moving away from each away ?

Scientists believe that some kind of sudden explosion broke the lump into pieces that eventually formed galaxies moving away from each other in all direction. The instant of this explosion is taken as the beginning of the universe and is called.

The big-bang. So the theory itself is called "**The big-bang Theory.**"

Atom - Bombs

- Vivek Sharma
XI 'B'

The more common types of **nuclear bombs** are based on **fission**, and they use **U-235 or Pu-239** such bombs are called **fission bombs, Atomic bombs or Atom-bombs**. While nuclear need about **3% enriched uranium, atomic bombs require highly enriched uranium**. For examples **the Atomic bomb that was dropped on Hiroshima on 6 August 1945 used enriched uranium that** had more than 90% U-235. The bomb dropped on **Nagasaki on 9 August 1945 was Pu-239 device**. Plutonium-239 is produced in nuclear reactors as described earlier.

The nuclear fuel elements for nuclear reactors are assembled in such a way that they allowed or to get absorbed, without triggering fission. In Atomic bombs, the nuclear fuel is assembled in such a compact manner that he chance of leakage of neutrons is much less. This leads to extremely fast generation of energy.

Echoing Reminiscence

- Ranvijay
XII 'A'

I like to while away on an afternoon on my porch infront of room number-9. As lengthening shadows reach out, gazing at the shadow of the bordering trees, twining and freeing themselves on the lawn as the Sun plays hide and seek with the passing clouds. All is tranquil.

The indolent atmosphere is shattered by twittering shrieks as my afternoon companions come trooping on stage and banish the memories back into their mental recesses. It's the palm squirrel and bird. Honestly speaking, I can't identity them by their name. The frenzy of activity they explode into would make even the liveliest song and dance routine in a broadway musical look like a wake in slow motion. They chase each other all over place trekking from one teetering slender bough to another, plunging from tree branch as to the boundary wall several feet below running vertiginously up the pillars on to the roof and jumping from there back onto tree, to repeat a infinitum. The remarkable aspect of this acrobatic activity is that it is done without slightest hesitation or apparent calculation. It's just one mad whirlwind.

Occasionally one will come to a sudden halt a few feet away from me, sit up on its haunches with its small front paws shuffling in the air and gaze beady eyed with twitching nose and whiskers at my supine form. A few seconds later, having concluded that this inactive log is no threat, off it scurries to feast on the remnants of the food stuff we usually bring from home. They are the only denizens of the school garden who provide audio - visual diversions as the shadow comes near my room.

Plant Power

- Aditya Pratap
VIII 'A'

1- Six feet ! That's the size the leaves of the victorian water lily can sometimes grow to !

2- 3000 of the world's 15000 species of orchids are found in Brazil.

3- The fastest growing plants is bamboo. Some varieties can grow up to there feet in a day !

4- In a single year, you would get just about one pound of roasted ground coffee from one tree !

5- 200 year's ! Yes that's what a giant sequoia could take to flower for the first time in its life.

Splendid Science

- Aditya Pratap
VIII 'A'

1- Today's silicon chip, quarter-inch squarl, has the same capacity as the original 1949 ENIAC computer which occupied an entire city block.

2- 98% of all the atoms in the human body are replaced every year.

3- Uranus orbital axis is tilted at 90 degrees.

4- Hot water is heavier than cold water.

5- A ball of glass will bounce higher than a ball of rubber.

Parents : God's Most wonderful Gift

- Durgesh Pal
IX 'B'

Once a wise man asked me, name the most influential persons in your life. I stuttered and hesitated and finally answered-"My Parents". Parents who always stand by you, watch you grow and develop, and become too big for your book. But They know your deepest fears; your greatest assets, in fact, they know you better than you know yourself. They are always taken, for granted, because they are simply always there, Ready to cushion our fall. By life's relentless fate when they are not there, we think and feel that we do not need them, but we are wrong, oh so wrong. They suck your thumb when you cut it, and lovingly apply medicine to it. You may have difference with them because you think you are grown up now. But whenever, you need love, go to your parents and everything will deem like heaven.

आचार्य परिवार

1.	श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी (प्रधानाचार्य)	एम.एससी.(जन्तु विज्ञान), बी.एड.
2.	श्री राजेश कुमार शुक्ल	एम.एससी.(रसायन विज्ञान), बी.एड.
3.	श्री रामतीर्थ मिश्र	एम.ए.(हिन्दी), बी.एड.
4.	श्री हेमन्त शुक्ल	एम.एससी.(भौतिकी), बी.एड.
5.	श्री कैलाश जोशी	एम.एससी.(गणित), बी.एड.
6.	श्रीमती रेखा निगम	एम.ए.(अंग्रेजी), बी.एड.
7.	श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव	एम.ए.(गणित, समाजशास्त्र),एल.टी.
8.	श्री दीपक राजे	बी.ए., बी.एड.
9.	श्री सुभाष चन्द्र शर्मा	एम.ए.(भूगोल), बी.पी.एड.
10.	श्री गणेश शंकर वाजपेयी	एम.ए.(संस्कृत), शिक्षाशास्त्री
11.	श्री सतीश चन्द्र गुप्त	एम.ए.(इतिहास), एम.एड.
12.	श्री जगपाल सिंह	एम.ए.(भूगोल), बी.एड.
13.	श्री दिनेश सिंह भदौरिया	एम.एससी.(रसायन विज्ञान), बी.एड.
14.	श्री श्रीप्रकाश ओझा	एम.एससी.(भौतिकी), बी.एड.
15.	श्री सुधीर अवस्थी	एम.एससी.(रसायन विज्ञान), बी.एड.
16.	डॉ0 मनोज शुक्ल	एम.ए.(संस्कृत, हिन्दी), साहित्याचार्य पी.एच.डी
17.	श्री दुर्गेश वाजपेयी	एम.ए.(हिन्दी, संस्कृत), बी.एड. पत्रकारिता परास्नातक
18.	श्री मनजीत सिंह	एम.एससी.(गणित), बी.एड.
19.	श्रीमती शिल्पी श्रीवास्तव	एम.एससी.(भौतिकी), बी.एड.
20.	श्री आनन्द श्रीवास्तव	एम.ए.(अंग्रेजी), बी.एड.
21.	श्रीमती अर्चना तिवारी	एम.ए.(अंग्रेजी), बी.एड.
22.	श्रीमती मीना अग्रवाल	एम.एससी.(गणित), बी.एड.
23.	श्रीमती तृप्ति प्रेम	B.A., B.Ed. and Vocational Course in Entrepreneurship, Phonetics & Linguistics and Communication Skills
24.	श्रीमती पल्लवी अग्रवाल	M.Sc. (Botany) PGDM (Systematics Management)
25.	श्रीमती अर्चना विद्यार्थी	B.Sc., M.A, Diploma in computer 'A' Level (Doeacc)
26.	कुमारी शिखा शुक्ला	एम.एससी.(रसायन विज्ञान), Doeacc 'A' Level
27.	श्री कौशलेन्द्र पाण्डेय	M.Com. M.C.A, WWIC.
28.	श्री अनूप शुक्ल	M.Sc. (Botany), B.Ed.

विद्यालय-प्रबन्ध-समिति

अध्यक्ष	डॉ० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल	अ० प्रा० प्राध्यापक	कानपुर
उपाध्यक्ष	श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी	व्यवसायी	कानपुर
मंत्री	श्री वीरेन्द्र जीत सिंह	चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट	कानपुर
सहमंत्री	श्री यतीन्द्र जीत सिंह	व्यवसायी	कानपुर
सदस्य	पं० राम बालक मिश्र	अधिवक्ता	कानपुर
	डॉ० योगेन्द्र भार्गव	अ. प्रा. मुख्य अभियन्ता	कानपुर
	श्री ओम प्रकाश भार्गव	व्यवसायी	कानपुर
	श्री प्रेम चन्द्र गुप्त	व्यवसायी	कानपुर
	श्री शंकर शरण श्रीवास्तव	शिक्षाविद्	लखनऊ
	श्री हरिकृष्ण सेठ	अधिवक्ता	कानपुर
	श्री तरुण विजय	पत्रकार	नई दिल्ली
	डॉ० अशोक वार्ष्णेय	सामाजिक कार्यकर्ता	कानपुर
	श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी	प्रधानाचार्य	कानपुर
	दो शिक्षक प्रतिनिधि		

अन्तरताना ठिकाना : Website : www.geocities.com/pddusdv
: www.pdduvsd.org
अणुडाक : email-pddusdv@hotmail.com

SHRI BALAJI OFFSET PRINTERS, KANPUR # 9935693313

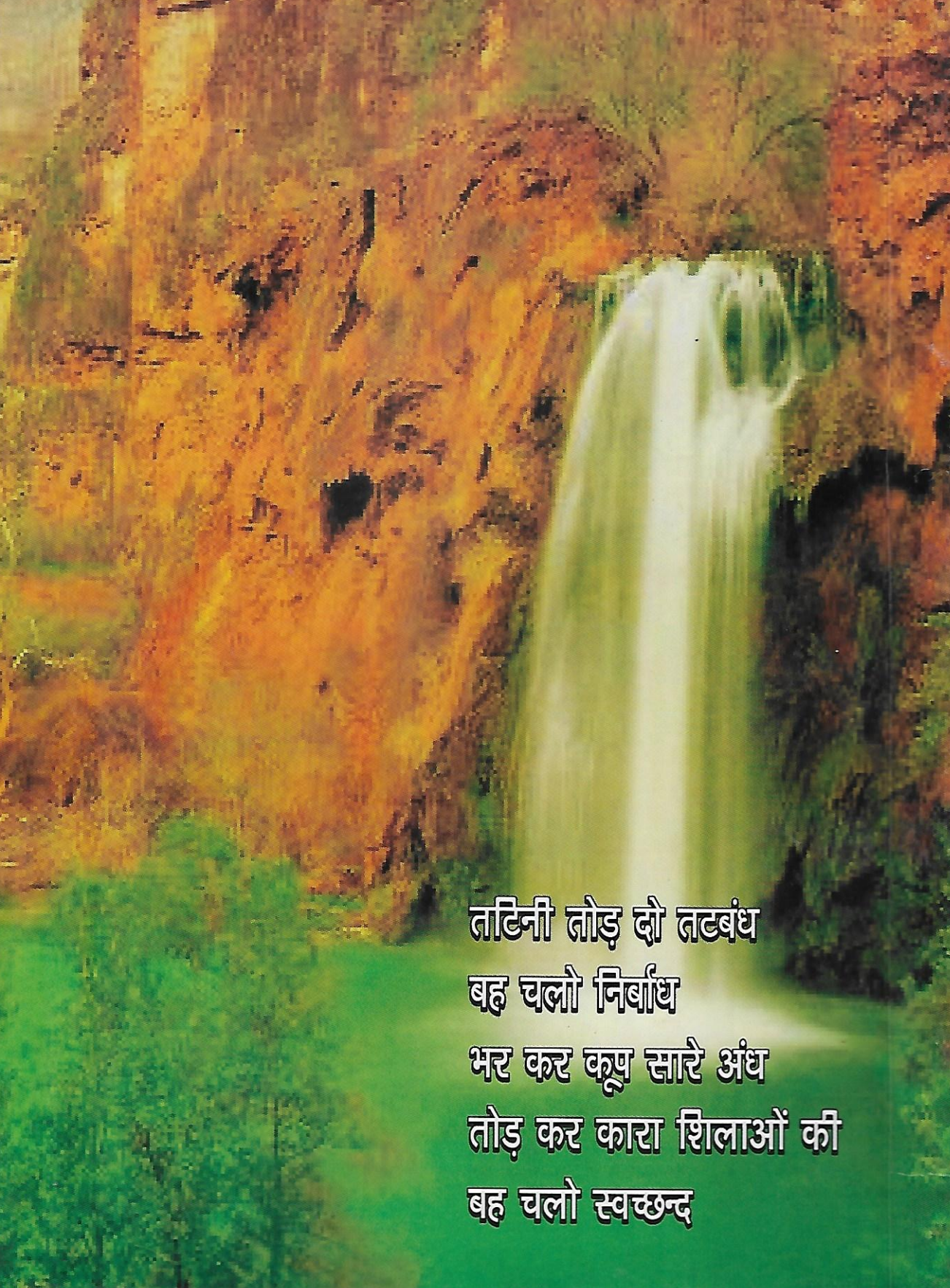
तटिनी तोड़ दो तटबंध
बह चलो निर्बाध
भर कर कूप सारे अंध
तोड़ कर कारा शिलाओं की
बह चलो स्वच्छन्द